ओ३म्

पाक्षिक

परोपकारी

ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद

वर्ष ५८ अंक १८ मूल्य ₹१५ महर्षि दयानन्द की स्थानापन्न परोपकारिणी सभा का मुखपत्र सितम्बर (द्वितीय) २०१६

महर्षि दयानन्द सरस्वती

श्री सत्येन्द्र सिंह जी आर्य
२० जून से १४ अगस्त तक चल रहे वृष्टि यज्ञ की पूर्णाहुति

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा का मुख पत्र

वर्ष : ५८ अंक : १८

दयानन्दाब्द: १९२

विक्रम संवत्: भाद्रपद शुक्ल, २०७३

कलि संवत्: ५११७

सृष्टि संवत्: १,९६,०८,५३,११७

सम्पादक

प्रो. धर्मवीर

प्रकाशक-परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर- ३०५००१

दूरभाष: ०१४५-२४६०१६४

मुद्रक-श्री मोहनलाल तँवर वैदिक यन्त्रालय, अजमेर।

दूरभाष : ०१४५-२४६०८३१

-परोपकारी का शुल्क-

भारत में

वार्षिक-२०० रु., **द्विवार्षिक**-३९० रु., **त्रिवार्षिक**-५८० रु., **आजीवन**-(=१५ वर्ष)-२००० रु.।

एक प्रति का मूल्य - रु. १५/-

विदेश में

वार्षिक-५० यू.के. पाउण्ड/८० यू.एस. डालर, **द्विवार्षिक**-९५ पा./१५२ डा., **त्रिवार्षिक**-१४० पा./२२५ डा., **आजीवन**-(=१५ वर्ष)-५०० पा./८०० डा.। **एक प्रति का मूल्य** - पाउण्ड-३ **एक प्रति का मूल्य** - डालर - ४

वैदिक पुस्तकालय : ०१४५-२४६०१२०

ऋषि उद्यान : ०१४५-२६२११२७०

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र अजमेर ही होगा।

ओ३म्

विद्याविलासमनसो धृतशीलशिक्षा:,
सत्यव्रता रहितमानमलापहारा:।
संसारदु:खदलनेन सुभूषिता ये,
धन्या नरा विहितकर्म परोपकारा:।।

RNI. No. ३९५९ / ५९

परोपकारी

सितम्बर द्वितीय २०१६

अनुक्रम

१. संस्कृत और संस्कृति-विनाश के....	सम्पादकीय	०४
२. कुछ तड़प-कुछ झड़प	राजेन्द्र जिज्ञासु	०८
३. राज भाषा दिवस या मास मनाने.....	सत्येन्द्र सिंह आर्य	१४
४. १३३ वाँ ऋषि बलिदान समारोह		१६
५. आत्मा का स्थान-१	स्वामी आत्मानन्द	१७
६. वेद गोष्ठी २०१६ के लिए निर्धारित विषय		१९
७. जिज्ञासा समाधान-११९	आचार्य सोमदेव	२०
८. वैदिक पुस्तकालय के नये संस्करण		२२
९. पुस्तक परिचय	आचार्य सोमदेव	२३
१०. फलित-योग	डॉ. सत्यप्रकाश	२६
११. संस्था-समाचार		२९
१२. कुर्बानी कुरान के विरुद्ध?		३६
१३. स्तुता मया वरदा वेदमाता-४०		४०
१४. आर्यजगत् के समाचार		४१

www.paropkarinisabha.com
email : psabhaa@gmail.com

- उपनिषद्, दर्शन, प्रवचन आदि सुनने हेतु बटन दबाएं -
www.paropkarinisabha.com → Daily Pravachan

सम्पादकीय

संस्कृत और संस्कृति-विनाश के चार अध्याय

- धर्मवीर

भारत के इतिहास में भारत के पतन का क्रम किसी युद्ध की पराजय से प्रारम्भ नहीं होता। हमारे इतिहास में महाभारत, रामायण जैसे इतिहास हैं। इनमें भारत के पराजय की कहानी नहीं मिलती। बहुत सारे राजा और उनके मध्य चलने वाले युद्धों का क्रम कितना भी लम्बा क्यों न रहा हो, इससे जनता पर किसी प्रकार का प्रभाव नहीं था। इस देश के धार्मिक स्थल इस देश की सीमा को निर्धारित करते थे। हिमालय में कैलाश-मानसरोवर तो दक्षिण में रामेश्वरम्। इस सीमा को तीर्थ यात्री ही चिह्नित करते थे। पश्चिम में हिंगलाज माता का मन्दिर या पूर्व में सागर की यात्रा, समस्त देश एक ही था। इसको जोड़ने वाला धर्म और धर्म को चलाने वाले शास्त्र ही देश का संचालन करते थे। शास्त्रों से शिक्षा आती थी और धर्म से व्यवहार।

इस देश के पतन की पटकथा राजनीति से प्रारम्भ नहीं होती, धर्म और शिक्षा से प्रारम्भ होती है। क्योंकि ये दोनों ही इस देश की जनता का संचालन करते थे। इनके नाश से ही इस देश का नाश हुआ। केवल राजनीति की हार से दबाया गया देश राजनीति से उठाया जा सकता है, परन्तु इस देश में मृत्यु समाज की हुई है, राजा की नहीं। समाज की मृत्यु में धर्माचार्य और शासन की सहमति रही है। इस मृत्यु का प्रभाव ये हुआ कि आकलन करने वालों का समाज में अभाव होता गया। मध्य में प्रयास हुए होंगे, परन्तु वे प्रयास इस देश की सामाजिक मृत्यु को नहीं टाल सके। पराधीनता के समय या उससे कुछ पूर्व कौटिल्य और शिवाजी जैसे लोगों ने समाज को जीवित करने का प्रयास किया, परन्तु वह थोड़ा और स्वल्प कालीन रहा। समाज की मृत्यु इसके अन्दर से देशाभिमान का भाव समाप्त होने के कारण हुई। समाज उदासीन निरपेक्षता की मनोदशा में चला गया, क्योंकि हमारी व्यवस्था ने उसे विचार-शून्य बना दिया था।

विचार शिक्षा और अनुभव से बनते हैं, हमने समाज को इनसे बध्यतापूर्वक वञ्चित् किया है। मनु सबको शिक्षा का अधिकार देते हैं। शिक्षा से समाज में मनुष्य का स्थान निर्धारित होता है। आज भी उच्च-शिक्षित लोग समाज में ऊँचा स्थान रखते हैं, ऊँचे पदों का सम्बन्ध उच्च-शिक्षा से ही होता है। पुराने भारतीय समाज में इस देश की वर्ण व्यवस्था मनुष्य के बौद्धिक और शैक्षणिक स्तर को बताने वाली थी। ऐसी व्यवस्था को रोका नहीं जा सकता है, परन्तु इस देश के समाज-व्यवस्थापकों ने इसे रुकने के लिये बाध्य किया। मनु ने तो कहा है-

शूद्रो ब्राह्मणतामेति ब्राह्मणश्चैति शूद्रताम्।
क्षत्रियाज्जातमेवन्तु विधाद्वैश्यात्तथैव च।

- मनु. १०/६५

अर्थात् योग्यता के क्रम से कोई भी मनुष्य ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र बनता था और उसका आधार थी शिक्षा। शिक्षा की स्वतन्त्रता ही मनुष्य को ऊँचा उठाने वाली होती है।

मनु की व्यवस्था समाज में दीर्घकाल तक चलती रही है, क्योंकि आपस्तम्ब-धर्मसूत्रकार ने इस व्यवस्था को दोहराया है।

धर्मचर्य्यया जघन्यो वर्णः पूर्वं पूर्वं वर्णमापद्यते जातिपरिवृत्तौ।
अधर्मचर्य्यया पूर्वो वर्णो जघन्यं जघन्यं वर्णमापद्यते जातिपरिवृत्तौ।।

- आपस्तम्ब धर्मसूत्र-प्र. २, प. ५, क. ११, सूत्र १०-११

यह जाति परिवर्तन जन्म के नहीं, गुणों के आधार पर ही सम्भव है। शिक्षा से समाज को वञ्चित करके ही इस व्यवस्था को अवरुद्ध किया जा सकता था। वास्तव में नियमपूर्वक बाध्यता का नियम किसने कब बनाया, यह कहना कठिन है, परन्तु गत शताब्दियों में इस व्यवस्था का जिस कठोरता से पालन किया जाता रहा है, उससे इसके चलाने का प्रयोजन स्पष्ट हो जाता है।

समाज में स्त्री और शूद्रों को वेद पढ़ने के अधिकार से वञ्चित करने का उल्लेख महाभारत के बाद के साहित्य

में अनेक स्थानों पर मिलता है। शंकराचार्य ने अपनी वेदान्त-दर्शन की व्याख्या में स्त्री-शूद्रों के वेदाध्ययन के केवल अनधिकार ही नहीं अपितु वेदाध्ययन पर दण्डित करने का भी उल्लेख किया है, यह कितनी विडम्बना है कि हम किसी को विद्याध्ययन के लिये दण्डित करें।

दण्डित करने की मानसिकता का मूल महाभारत के गीता प्रसंग में सामाजिक पतन का कारण वर्णसंकरता को कहा है। महाभारत में युद्ध के परिणामस्वरूप समाज में उत्पन्न होने वाली वर्णसंकरता तथा उसके परिणामों का उल्लेख मिलता है-

संकरो नरकायैव कुलघ्नानां कुलस्य च।
पतन्ति पितरोह्येषां लुप्तपिण्डोदक क्रियाः।।
उत्सन्नकुल धर्माणां मनुष्याणां जनार्दन।
नरके नियतं वासो भवतीत्यनुसुश्रुम।।

वर्ण-संकरता सामाजिक मर्यादाओं के उच्छेद का कारण है। वेदाध्ययन का अनधिकार इसी परिस्थिति का परिणाम है। यह परिस्थिति कितने लम्बे समय तक चली, इसका उदाहरण है समाज के अधिकांश लोगों का अशिक्षित रहना। विद्या को समाज से समाप्त होने में कितना समय लगा होगा कि आज उस विद्या का जानने वाला दुर्लभ हो गया? यह परिस्थिति समाज में अकस्मात् या एक दिन में तो उत्पन्न होने वाली नहीं है।

इस कार्य के परिणामस्वरूप समाज में जो परिस्थिति बनी, उसे हम अपने सामाजिक पतन का **दूसरा अध्याय** कह सकते हैं। इस समय वेदाध्ययन को प्रतिबन्धित करने के प्रयास को सफल बनाने के लिये जो कार्य किये गये, वे थे- वेद मन्त्रों के अर्थ अपने अनुकूल करना तथा शास्त्र ग्रन्थों में प्रक्षेप कर उन प्रक्षेपों के समर्थन में ग्रन्थ लिखना।

वेद, जो समाज के सर्वांगीण विकास की विद्या थी, उसे केवल यज्ञ के कर्मकाण्ड तक सीमित कर दिया तथा कर्मकाण्ड में पुण्य के नाम पर व्यभिचार और पशु-बलि को स्थापित कर दिया गया। इससे जिन लोगों को वेद नहीं पढ़ने दिया गया था, उनके मन में हिंसा के विरोध में 'अतिविरोध-रूप अहिंसा' का समाज में स्थान बनता गया। वेद-विरोधी प्रक्रिया दो विचारधाराओं में आगे बढ़ी, जैन-बौद्ध धर्म के रूप में इस देश में अहिंसा का अतिवादी रूप सामने आया तथा चार्वाक के माध्यम से वैदिकों ने भी तर्कहीन स्थापनाओं का खण्डन किया। वेद पर निरर्थकता के आक्षेप किये गये। यह कार्य निरुक्त-मीमांसा के समय में प्रारम्भ हो गया था। आचार्य यास्क ने वेदों के अर्थज्ञान के लिये निरुक्त की अनिवार्यता को बताते हुये "**निरर्थका हि मन्त्रा इति कौत्सः।**" कहकर वेद मन्त्रों को निरर्थक मानने वाले लोगों का खण्डन किया। वेदाध्ययन पर प्रतिबन्ध के कारण वेदाध्ययन की परम्परा समाप्त होती गई और वेद के नाम पर ब्राह्मण वर्ग की मनमानी के विरोध में नास्तिक मतों का प्रारम्भ होता चला गया। संस्कृत का लोप होने से लोकभाषा में जिन विचारकों ने समाज को उपदेश दिया, उनका समाज में प्रभाव बढ़ता गया। स्थानीय लोगों में विद्वानों के स्तर पर विरोध होने पर भी संस्कृत और वेद की परम्परा सर्वथा समाप्त नहीं हुई। राज्याश्रय और गुरु परम्परा से उसकी प्रतिष्ठा बनी रही।

जिस समय इस्लाम का भारत में प्रवेश हुआ और इस्लामी शासन का प्रारम्भ हुआ, तब इस देश में इस्लामी भाषा का व्यवहार और शिक्षा का प्रारम्भ हुआ। अरबी-फारसी पढ़ने की परम्परा समाज में चल पड़ी। अरबी-फारसी पढ़ने वाले को प्रतिष्ठा और राज्याश्रय के कारण प्रशासन में स्थान मिलने लगा और अरबी-फारसी अर्थकरी भाषा बन गई, परन्तु हिन्दू समाज में धार्मिक स्तर पर तथा विद्वत् समाज में संस्कृत का प्रचलन बना रहा। कर्मकाण्ड और विद्या की भाषा संस्कृत मानी जाती रही, जैसे-जैसे अंग्रेजी शासन की भारत में स्थापना हुई, वैसे-वैसे प्रशासन की भाषा और राज्य की भाषा अंग्रेजी बनती गई। अंग्रेज सरकार ने अपने शासन को स्थायी बनाने के लिये शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी भाषा को बनाया। राजाराम मोहनराय के निर्देशन में अंग्रेजी शासन ने इस देश की शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी को घोषित किया।

अंग्रेजी शासन में मैकाले के विचार को सरकार ने स्वीकार कर संस्कृत पठन-पाठन की परम्परा को ध्वस्त करना प्रारम्भ किया। गुरुकुल, पाठशाला, मन्दिर, गुरु परम्परा, इन सब प्रयासों को दण्डित कर नष्ट कर दिया। ऐसा करने के लिये शासन और शिक्षा का आश्रय लिया गया। इसके सथ **संस्कृत-नाश का तीसरा अध्याय** प्रारम्भ होता है। इंग्लैण्ड के मार्गदर्शन में भारत को शत्रु देश मानते हुए, यहाँ के इतिहास, भाषा, संस्कृति का अध्ययन किया गया।

जो कुछ भी इस देश में गौरवपूर्ण था या तो उसको नष्ट किया, छुपा दिया या विकृत करके प्रस्तुत किया तथा समाज में जो कोई भी दुर्बलता, बुराई दिखाई दी, उसे प्रमुख रूप से प्रकाशित करने का यत्न किया, जिससे शत्रु और पराधीन-देश का गौरव नष्ट हो और यहाँ के लोगों में आत्महीनता का भाव उत्पन्न हो सके। ईस्ट इण्डिया कम्पनी के समय भारत के लोगों को ईसाई बनाने का कार्य प्रारम्भ हो गया था। सेना का अधिकारी कर्नल बोडम था, उसको अपने कार्यकाल में ऐसा अनुभव हुआ कि हिन्दू समाज में वेद के प्रति गहरी आस्था है। इसके चलते भारतीय लोगों को ईसाइयत की ओर आकृष्ट करना कठिन ही नहीं, असम्भव है। अपने इस अनुभव के आधार पर वेद के इस महत्त्व को समाप्त करने के प्रयास के रूप में उसने ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में संस्कृत में शोध के लिये चेयर की स्थापना के लिये अपना धन प्रदान किया और अपने नाम से चेयर की स्थापना कराई। इस चेयर के माध्यम से मैक्समूलर ने वेद भाष्यों का अंग्रेजी में अनुवाद प्रस्तुत किया तथा संस्कृत एवं वैदिक साहित्य के विषय में भी उसने बहुत सारा काम किया। इसके अतिरिक्त अनेक लोगों ने वैदिक साहित्य और वेद भाष्यों का अनुवाद किया। सभी के लिये तो नहीं कहा जा सकता कि उनका विचार अंग्रेजी सरकार से प्रेरित था, परन्तु अधिकांश लोगों का कार्य उसी साम्राज्यवादी सोच को लेकर क्रियाशील था।

भारत में संस्कृत पठन-पाठन की परम्परा समाप्त हो चली थी तथा अंग्रेजी शिक्षा का माध्यम होने से अंग्रेजी में लिखे साहित्य और अनुवाद का बोलबाला हो गया। संस्कृत के मूल-ग्रन्थ विद्वानों के पठन-पाठन से दूर हो गये। अंग्रेजी प्रतिष्ठा और आजीविका दोनों की भाषा बन गई, अंग्रेज शासकों की योजना फलीभूत हो गई और संस्कृत व संस्कृति विनाश का तीसरा चरण सफल रहा।

वैदिक साहित्य और इतिहास के विद्वान् पं. भगवद्दत्त ने इस विषय में अपने शोध में लिखा है- मैं अनिच्छा से इस दु:खद निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि जिसको आज वैज्ञानिक, वस्तुपरक और समीक्षात्मक शोध कहा जाता है, वह वस्तुतः उस मूलभूत एवं सूक्ष्म प्रभाव से दूषित है, जिसका उद्देश्य शैक्षणिक किञ्चिन्मात्र भी नहीं था।

-(भारतीय इतिहास की विकृतियां: कुछ कारण, पृ. ६)

जो कारण पाश्चात्य विद्वानों को सत्य कहने से रोकता है, वह कारण है- उनकी मानसिकता। इस मानसिकता की घोषणा १६५४ में आयरलैण्ड के आर्क विशप अशर ने दृढ़ता से की कि- उसका प्राचीन धर्म-ग्रन्थ का अध्ययन सिद्ध कर चुका है कि सृष्टि की रचना ईसा पूर्व ४००४ वर्ष पूर्व हुई। इस मान्यता के कारण इन पाश्चात्य लोगों में एक अहंकार ने जन्म ले लिया कि वे संसार की प्राचीनतम संस्कृति और धर्म हैं, जिसके कारण बाद में जो कुछ इनके सामने आया, उसको इन लोगों ने ईसा के आगे-पीछे समेटने का प्रयास किया। ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के प्रो. मोनियर विलियम्स ने कर्नल बोडन द्वारा स्थापित पीठ के उद्देश्य को स्पष्ट करते हुए कहा था-

'मुझे इस तथ्य की ओर ध्यान आकर्षित करना है कि मैं बोडनपीठ का द्वितीय अधिकारी हूँ और इसके संस्थापक कर्नल बोडन ने अपनी वसीयत दि. १५ अगस्त १८११ में स्पष्ट रूप से निर्देश किया था कि उसके उदार दान का मुख्य उद्देश्य है कि बाईबिल आदि धर्म-ग्रन्थों के संस्कृत अनुवाद को प्रोन्नत किया जाये, जिससे हमारे देशवासी भारतीय मूल के लोगों को ईसाई-धर्म में दीक्षित कराने में आगे बढ़ाने के लिये सक्षम बनें।'

- (संस्कृत इंग्लिश डिक्शनरी की भूमिका, पृ. ९/ १८९९)

इस विचार को आधार बनाकर पाश्चात्य विद्वानों ने कार्य किया- रुडोल्फ राथ ने वेद-विषयक शोध-लेख में लिखा है- 'वैदिक मन्त्रों का अनुवाद निरुक्त की अपेक्षा कहीं अच्छा जर्मन भाषा-विज्ञान की सहायता से किया जा सकता है।'

- (जर्नल ऑफ एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल-१८४७)

इसी प्रकार डब्ल्यू.डी. विदने ने लिखा- 'वेदों का यथार्थ स्वरूप समझने के लिये एक मात्र जर्मन सम्प्रदाय के सिद्धान्त ठीक-ठीक मार्गदर्शन कर सकते हैं।'

- (अमेरिकन ओरियन्टल सोसाइटी प्रोसिडिंग- अक्टूबर १८६७)

मैक्समूलर की वेद विषयक धारणा से उसकी वेद की दृष्टि पर प्रकाश पड़ता है-

''वैदिक सूक्तों की बड़ी संख्या अत्यन्त बालिश,

अरुचिकर, निम्न और तुच्छ है।''

- (चिप्स फ्राम जर्मन वर्कशाप, २ संस्करण १८६६, पृ. २७)

हमारे वर्तमान भारतीय विद्वान् मोनियर विलियम्स का गुणगान करते हैं, परन्तु उसके शब्द क्या कहते हैं-

'जब ब्राह्मणवाद के सुदृढ़ दुर्ग की दीवारें चारों ओर से घेर ली गई हैं, सुरंगे लगा दी गई हैं और अन्ततः ईसा के सैनिकों/पादरियों ने अन्तिम धावा बोल दिया है, अतः ईसाइयत की विजय असाधारण और पूर्ण होगी।'

- (मॉर्डन इण्डिया एण्ड दि इण्डियन्स, तृतीय संस्करण १८७९, पृ. २६)

मोनियर विलियम्स का एक कथन उसके उद्देश्य को प्रकाशित करने के लिये पर्याप्त है-

'बाइबिल यद्यपि सत्य दैव प्रकाशन है।'

- (द क्रिश्चियन इन्टेलिजेन्स कोलकाता, मार्च १८७०, पृ. ७९)

इसी समय के विद्वान् विन्टरनिज को शोपनहार की उपनिषद् की प्रशंसा इतनी बुरी लगी कि उसकी भावना इन शब्दों में झलकती है- 'तो भी मैं विश्वास करता हूँ कि वह उन्मत्त अतिशयोक्ति है', जब शोपनहार कहता है- 'उपनिषदों की शिक्षा मनुष्य के सर्वोच्च ज्ञान और बुद्धि के तल को दर्शाती है और उसमें लगभग अतिमानव अवधारणायें विद्यमान हैं, जिनके आविष्कर्ता कठिनाई से ही मनुष्य समझे जा सकते हैं।'

- (सम प्राब्लम्स ऑफ इन्डियन लिटरेचर कलकत्ता, पृ. ६१/१९२५)

आगे वेद के विषय में वह लिखता है-

'यह सत्य है कि इन सूक्तों के रचनाकार कदाचित् ही यहूदियों के धार्मिक काव्य की उच्च उड़ानों और गम्भीर भावनाओं तक पहुँच पाते हैं।'

- (हिस्ट्री ऑफ इन्डियन लिट्रेचर, पृ. ७९/१९२७)

इन विद्वानों के दुराग्रहपूर्ण विचारों के कारण भारतीय इतिहास और संस्कृति का मूल्यांकन सम्भव न हो पाया। भारतीय इतिहास की तिथियों और तथ्यों को विद्वानों के सामने नहीं लाया जा सका।

भारत में संस्कृत और संस्कृति के नाश का चौथा अध्याय भारत की स्वतन्त्रता के साथ प्रारम्भ होता है। इसका प्रारम्भ तभी हो जाता है जब यहाँ संविधान और संसद ने इस देश की भाषा के रूप में अंग्रेजी को स्वीकार कर लिया। **दूसरा**- इसमें भाषा के साथ पाश्चात्य विद्वानों के तथ्य और तर्क भी उस देश के इतिहास के भाग मान लिये गये। इस देश में आर्य-द्रविड कल्पना का इतिहास आज भी हमारे पाठ्यक्रम का विषय है। **तीसरा** पाश्चात्य विद्वानों की मिथ्या धारणाओं व पूर्वाग्रह पर आधारित विचारों को इतिहास के निर्णय के रूप में स्वीकार कर लिया गया। भारतीय इतिहास को सरकार पोषित विद्वानों ने आधुनिकता और प्रगतिशीलता के नाम पर विकृत कर लेखन किया तथा प्रगति के नाम पर साम्यवादी लेखकों ने भारत विरोधी विचारों से प्रस्तुत किया। **चौथा**- दलित और अल्पसंख्यक के नाम पर उनके शोषण और उत्पीड़न के लिये मनुष्य के अपराध को शास्त्र और भाषा का अपराध बताकर प्रस्तुत किया गया। जैसे दलित नेता कान्ता चैलय्या ने मांग की- भारत में दलितों के शोषण के लिये संस्कृत भाषा जिम्मेदार है और हम इस देश से इसकी समाप्ति चाहते हैं। क्या हिटलर को अपराधी बताने के लिये जर्मन भाषा को उत्तरदायी माना जा सकता है? **पाँचवा**- शिक्षा के माध्यम के रूप में इस देश में दो पद्धतियाँ प्रचलित की गईं, एक प्रान्तीय भाषा की और दूसरी अंग्रेजी भाषा की। प्रशासन और सरकार ने अंग्रेजी को प्रोत्साहन दिया तो परिणामस्वरूप अंग्रेजी स्कूलों की बाढ़ में संस्कृत दब गई। **छठा**- सरकार की नीति संस्कृत को समाप्त करने की रही, धीरे-धीरे पाठ्यक्रम से संस्कृत समाप्त होती गई।

आज शॉन पोलक जिन विचारों की स्थापना करना चाहता है, उसका आधार अंग्रेजी ही है, उसका कहना है- संस्कृत शोध के योग्य भाषा ही नहीं है और संस्कृत में शोध करना है तो अंग्रेजी के बिना संस्कृत में शोध हो ही नहीं सकता। उसका प्रयास है- भारतीय साहित्य का अंग्रेजी अनुवाद कर लेने के बाद भारतीय संस्कृत-हिन्दी भाषा में कुछ पढ़ने योग्य शेष नहीं होगा तथा संस्कृत का शोध करना अंग्रेजी के माध्यम से न केवल सरल होगा अपितु प्रामाणिक भी होगा। ऐसे लोगों का परिणाम होता है

अन्धेनैव नियमाना यथान्धाः।।

- धर्मवीर

कुछ तड़प-कुछ झड़प

– राजेन्द्र जिज्ञासु

प्रश्न तो अच्छा है:- बागपत से परोपकारी के एक कर्मठ पाठक ने यह प्रश्न पूछा है कि पैगम्बर की बीवियाँ मुसलमानों की मायें हैं, इसका प्रमाण क्या है? आपने यह प्रश्न इदसलिये पूछा है कि उनके एक पिरिचित मुस्लिम बन्धु ने कहा है कि न तो कुरान में और न ही मुस्लिम साहित्य में कहीं ऐसा लिख है। उस भाई को चलभाष पर क्या-क्या प्रमाण देता? अब इस्लाम बदल रहा है। बात-बात पर मुसलमान यही कहते हैं कि यह कुरान मं कहीं नहीं लिखा। यह मिथ्या कथन है। दिल्ली में सत्यार्थ प्रकाश पर अभियोग के समय की प्राथमिकी (.....) में यह कहा गया था।

बागपत वाले भाई को बताया कि उस मियां से 'उम-उल-मोमनीन' के अर्थ तो पूछिये। मुसलमानों या मोमिनों की मातायें ही इस का अर्थ है या नहीं? महाशय राजपाल जी के हत्यारे इलम्दीन की पाकिस्तान से प्रकाशित जीवनी में लाहौर की एक सभी में सैयद अताउल्लाह शाह बुखारी जी के भाषण में हजरत आयशा का प्रसंग देखिये। मिर्जा बशीर अहमद लिखित कादियानी नबी की जीवनी 'सीरत उलमहदी' में भी मोमिनों की मातायें शब्द मिलेगा। इतने से काम न चले तो सूरा ३३ आयत ५३ पर भी विचार कर लें।

श्री कृष्ण महाराज का इल्हाम:- कई सज्जनों ने वेदों में हजरत मुहम्मद के आगमन की भविष्यवाणी का उत्तर देने को कहा है। उत्तर तो पहले भी छपा था फिर छप जायेगा। हिन्दू मूर्ख आर्यसमाज को विपदा की घड़ी में ही याद करता है। आर्य समाज को धारण करे तो विपदा आये ही क्यों? सुनिये! हम एक ऐतिहासिक घटना बताते हैं। इसका घर-घर प्रचार करो। मुसलमानों को बताओ। ३० नवम्बर १९०४ को लाहौर में 'सिंध सभा' पत्रिका के सम्पादक को सपने में महाराज कृष्ण व पं. लेखराम जी के दर्शन हुए। तब श्री कृष्ण ने सम्पादक को अपना एक 'इल्हाम' दिया कि मिर्जा गुलाम अहमद कादियानी नबी बहुत दु:ख कष्ट भोगकर छ: वर्ष के अन्दर मरेगा। यह इल्हाम तभी प्रकाशित व प्रसारित हो गया। अक्षरश: सत्य सिद्ध हुआ। नबी चार ही वर्ष में लाहौर में मृत्यु का ग्रास बन गया। 'कादियानी की मौत का बड़ा इल्हाम' पृष्ठ छ: पर पढ़ सकते हैं।

स्वामी दर्शनानन्द जी की भविष्यवाणी:- हम भविष्यवाणियों को नहीं मानते। जिन लोगों का धंधा अंधविश्वास फैलाना व लोगों को मूर्ख बनाना है वे दिन रात गोल-मोल शब्दों में भविष्यवाणियाँ गढ़ते रहते हैं। वैसे दूरदर्शी सामान्य वरूक्तियों की सूझबूझसे कही गई अनेक बातें प्राय: सत्य सिद्ध होती हैं। श्री स्वामी दर्शनानन्द जी ने 'कुरान की छानबीन' पुस्तिका के पृष्ठ २८ पर मिर्जा कादियानी केजीते जी यह भविष्य वाणी कर दी थी कि हकीम नूरउद्दीन आगे चलकर इस नबी का खलीफा बनेगा।

आर्य समाज में दर्शनानन्द ग्रन्थ संग्रह बार-बार प्रकाशित होता रहा। हमारे सम्पादकों ने इसके नीचे पादटिप्पणी देककर इसे मुखरित न किया। अंधविश्वास के अड्डों को ध्वस्त करने के लिये इसका प्रचार करना लाभप्रद सिद्ध होता।

इस्लाम का वैदिक स्वरूप:- कुरान की एक आयत में उलअजीज, अलजबार व उलमुतकब्बुर ये तीन शब्द साथ-साथ आते हैं। शाह रफी उद्दीन उलअजीज का अर्थ गालिब (विजेता, प्रभुत्ववाला) करते हैं। मौलवी सना उलला जी इसका अर्थ सँवारने वाला करते हैं। यह इतना अर्थ भेद क्यों? यदि ईश्वर गालिब (विजेता) है तो कब से? उत्तर है अनादि काल से। यदि अल्लाह गालिब है तो फिर कोई मगलूब (पराजित-अधीन) भी तो होगा। उसकी सत्ता भी अनादि माननी पड़ेगी। आर्यसमाज की पकड़ से बचने के लिए तो मौलवी जी ने तकब्बुर (अभिमान) शब्द को अर्थ करते समय छोड़ ही दिया है।

यह आनन्ददायक परिवर्तन है। यह पं. लेखराम जी, स्वामी दर्शनानन्द जी और पं. चमूपति जी की मौलिक व अकाट्य युक्तियों का मधुर फल है जो इस्लमा के वैदिक स्वरूप के हमें दर्शन हो रहे हैं। शीघ्र ऋषि उद्यान में बैठकर में इसी विषय पर एक सर्वथा नई पुस्तक आरम्भ

कर दूँगा। इससे आर्यों को महर्षि की दिग्विजय का बोध होगा। यह एकदम मिथ्या, निराधार व विषैला प्रचार है कि ऋषि दयानन्द के नाम लेवा तो ऋषि को समझ ही नहीं सके। ऋषि के दर्शन चिन्तन को तो देवेन्द्र बाबू व साधु वासवानी व कुछ गोरों ने ही समझा।

इस्लाम व ईसाई मत में जो वैदिक धर्म की छाप दिखाई देती है क्या वह पं. लेखराम के तप का फल नहीं? पं. देव प्रकाश जी तो स्वयं स्वीकार करते हैं कि उनको पं. लेखराम व स्वामी दर्शनानन्द जी ने खींचा। मेरी नई पुस्तक में विदेशी मुस्लिम विचारक के विचारों का आचार्य चमूपति के वाक्यों से मिलान पढ़कर अपने बेगाने सब दंग रह जायेंगे।

आप उसे पण्डित कहते हैं व तोः- ....एक लम्बे समय से प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् व साहित्यकार महामहोपाध्याय श्री पं. आर्यमुनि जी के जन्म स्थान रमाना की यात्रा करने की उत्कट इच्छा थी। यह स्थान हमारे क्षेत्र में बठिण्डा से कुछ किलोमीटर की दूरी पर है। न जाने यह कार्यक्रम किसी न किसी कारण सो टलता चला गया। एक बार पूज्य पण्डित जी के भाई के परिवार ने मेरे बारे में कुछ सयुनकरबुलाया भी था। अब बठिण्डा के वैदिक साहित्य अनुरागी श्री जितेन्द्र कुमार जी गुप्त वकील ने कार्यक्रम बना कर तिथि निश्चित करके सेवक को बुला लिया। आपने श्रद्धेय पण्डित जी के भाई के एक पौत्र का पता लगाकर उससे किसी के द्वारा सम्पर्क साधा।

सम्पर्क सूत्र ने भी गुप्त जी से कहा कि आप तो बताते हैं कि आर्य मुनि जी हमारे पूजनीय पण्डित वेदज्ञ थे, परन्तु वह तो तरखान (विश्वकर्मा शिल्पी)परिवार से थे। उस भोले भाई की यह टिप्पणी सुनकर गुप्त जी का और मेरा मन बहुत आहत हुआ। उसे जो कहना था सो कहा। भारतीय हिन्दू सन्स्कृति का, नदियों, तीर्थों, कुम्भ, योग की रात-दिन कुछ संस्थायें व राजनेता बहुत चर्चा करते रहते हैं। आज बीसियों नेताओं के माथे श्पर टीका व कलाई पर एक लाल डोरी बन्धी देखेंगे। ऐसा करके हर कोई अपने आपको पक्का हिन्दू और धर्मात्मा भक्त मानता है। जिसने भी संगम में या उज्जैन में नदी में डुबकी लगा दी वह हिन्दू संस्कृति का ध्वजवाहक हो गया।

जातीय कैंसर जातिवाद पर कितने राजनेता चोट करते हैं। कोई दल जाति-पांति के विरुद्ध युद्ध नहीं छेड़ता। हिन्दू के व देश के विनाश का एक मुख्य कारण तो यही जातिवाद है। जिसने वेद भाष्य किया, रामायण, महाभारत, गीता, उपनिषदों व दर्शनों के भाष्य किये। उस महाकवि और सिख साहित्य के मर्मज्ञ को हम पण्डित, विचारक व दार्शनिक मानते हैं तो तिलकधारियों को उदर शूल होता है। महर्षि दयानन्द की शिष्य परम्परा के सबसे पहले व सबसे बड़े दो वेदज्ञ थे। इन दोनों ने देश विदेश के विद्वानों के मन व मस्तिष्क पर वेद की छाप लगा दी। ये थे पं. गुरुदत्त जी विद्यार्थी तथा पूज्य महात्मा आर्यमुनि जी। जो कुछ अपने कुल के बड़ों से, अपने ग्राम के आर्यों से और स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी से पं. आर्यमुनि जी के बारे में सुनता रहा जीवन की सांझ में पोंगा पंथियों के द्वारा उनके साहित्यच व व्यक्तित्व पर टिप्पणी सुनकर हृदय रक्तरोदन करता है। क्या देश धर्म की रक्षा के लिए जाति को रोगमुक्त करने के लिए ऊँची योग्यता के सौ पचास ऐसे युवक निकलेंगे जो श्रीस्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के जीवन से प्रेरणा पाकर आजीवन जाति-पाँति से लड़ाई छेडेंगे? इस महामारी के उन्मूलन के बिना देश बच नहीं सकता। जड़पूजा, बहुदेवतावाद तथा पुल्लित ज्योतिष आदि अंधविश्वासों के विरुद्ध युद्ध छेड़ने के लिये अदम्य उत्साह के साथ युवक आगे निकलें।

स्वामी श्रद्धानन्द जी का एक प्रसंगः- धार्मिक जगत् मं महापुरुषों की अन्तिम वेला के आध्यात्मिक प्रसंग अत्यन्त प्रेरणाप्रद माने जाते हैं। आर्य समाज ने तो महर्षि जी के अन्तिम दिनों के एक-एक प्रसंग की सुरक्षा की ओर भी पूरा ध्यान न दिया। महाराज जसवन्तसिंह, प्रताप सिंह और राव राजा तेजसिंह तीनों विष दिये जाने के पश्चात् एक बार भी ऋषि का पता करने नहीं पहुंचे। इस तथ्य को भी दबाकर कुछ राज दरबार-भक्तों ने प्रताप सिंह से ऋषि के संवाद की एक कल्पित कहानी गढ़ ली। कब संवाद हुआ? कहाँ हुआ? साक्षी कौन-कौन है?

विश्व प्रसिद्ध इतिहासकार व वैदिक विद्वान् पं. भगवद्दत्त जी तथा माननीय विरजानन्द के कथनानुसार जब ऋषि बोल ही नही सकते थे।

स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज अपने बलिदान से पहले जब अन्तिम बार पंजाब पधारे तब लाहौर में वच्छोवाली समाज के उत्सव पर आपने आर्यों को कहा, ''अब यह मेरी आपसे अन्तिम भेंट है।'' और सचमुच यही उनकी अन्तिम पंजाब यात्रा रही। उस समय पं. रामचन्द्र जी (स्वामी सर्वानन्द जी) पूज्य स्वामी श्रद्धानन्द जी के ठीक सामने श्रोता के रूप में बैठे थे। उनके मुख से यह प्रसंग सुनकर मैं गद्‌गद् हो गया। इसे लेखों व पुस्तकों में भी दिया, परन्तु मैं उस समय के पत्रों में छपा उस उत्सव का वृत्तान्त बहुत यत्न करने पर भी न खोज सका।

एक पुस्तक में तो सार रूप में यह प्रसंग मिल गया और अब स्वर्गीय आर्य नेता पं. गंगाराम जी मुजफ्फरगढ़ वालों के मासिक पत्र के बलिदान विशेषाङ्क (सन् १९२६-२७) में इस प्रसंग का वर्णन पाकर इस सेवक को अत्यधिक प्रसन्नता हुई। जो शब्द श्री स्वामी सर्वानन्द जी के मुख से सुने थे, वही उस बलिदान विशेषाङ्क में पढ़कर लेखक झूम उठा। यह दस्तावेज शीघ्र परोपकारिणी सभा को सौंप दिया जावेगा। मत पंथों के लोगों की दृष्टि में ऐसे वचनों का आध्यात्मिक व ऐतिहासिक दृष्टि से विशेष महत्त्व माना जाना जाता है।

आर्य समाजी ऊँट और आर्यसमाजी कुँआ!:- पाठक यह उपशीर्षक पढ़कर दंग रह जायेंगे। ऊँट किस समाज का सभासद या मन्त्री प्रधान था? और कुआँ तो जड़ है। वह कैसा आर्यसमाजी! आर्यसमाज के स्वर्णिम इतिहास की ये दो घटनायें सप्रमाण मेरी दो पुस्तकों में पाठक सुरुचि से पढ़ते हैं। तलवण्डी साबो (बठिण्डा के पास) एक आर्य युवक निगाहीराम ने पूजनीय स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी की प्रेरणा से एक बाल विधवा से विवाह करने की हिम्मत दिखाई। उस युग में उस क्षेत्र में ऊँट आवागमन का वाहन होता था। क्षेत्र के पौराणिकों ने वर-वधू का बहिष्कार करके जीन दूबर कर दिया।

आर्य लोग इन्हें ऊँट पर बिठाकर रामाँ मण्डी ले आये। रामाँ मण्डी में आर्य समाज का सुदृढ़ संगठन था। अब पोंगा पंथी वर-वधू को रामाँ में तँग न कर सकते थे। खीज कर पौराणिकों ने नई व्यवस्था जारी की। सब सनातनियों को कहा गया कि जिस ऊँट पर आर्य लोग वर-वधू को लाये उस 'आर्य समाजी ऊँट' का प्रचण्ड बहिष्कार किया जाये। ऊँट वाले की आजीविका उसी ऊँट से चलती थी। वह घबरा गया। मेरे परिवार का और मेरे ऊँट का पालन अब कैसे होगा?

झटपट सब ओर यह समाचार फैल गया। दूर-दूर से ग्रामीण 'आर्यसमाजी ऊँट' के दर्शन करने आने लगे पौराणिकों की व्यवस्था ठुस हो गई। ऊँट के दर्शन करने वाले उसे कुछ भेंट चढ़ाकर जाते। आर्य समाज का जय जयकार होने लगा।

आर्यसमाजी कुँआ:- भूमण्डल प्रचारक मेहता जैमिनि जी ने मुलतान क्षेत्र में दलितोद्धार का शँख जब फूँका तो एक सार्वजनिक स्थल पर विशाल प्रीतिभोज की व्यवस्था की गई। जाति का सुधार, उद्धार व कल्याण पोंगापंथी न रह सके। बहिष्कार का मिजाईल आर्यों पर तो छोड़ा ही जाता था, मुलतान के पोपों ने यह फर्मान जारी किया कि प्रीति भोज के लिए जिस कुआँ से आर्यों ने जल लिया उस 'आर्यसमाजी कूप' का भी बहिष्कार हो। कोई सनातन धर्मी उस आर्यसमाजी कुयें का जल नहीं पियेगा। लम्बे समय तक ऐसा ही बहिष्कार रहा, परन्तु धीरे-धीरे आर्यों का सारे क्षेत्र में जयजयकार होने लगा। इस बहिष्कार से आर्यसमाजी कुआँ भी महिमा मण्डित हो गया। तपस्या की भट्टी में तपकर आर्य खरा सोना बन गये।

इस्लाम का वैदिक रंग:- प्रतिवर्ष पाँच सात ऐसे बाबू युवक भी मेरे सम्पर्क में आते हैं जो मत पंथें के बारे में आकाश पाताल कगी सब जानकारी चलभाष पर ही प्राप्त करके स्वामी दर्शनानन्द जी व पं. चमूपति जी को पछाड़कर शास्त्रार्थ महारथी बनने की डींग मारते हैं। घर से निकल कर जन सम्पर्क तो करते नहीहं बस फेस बुक पर हीह सारे संार के मत पंीं को शास्त्रार्थ करने की चुनौती देते हैं। अपनी पत्नी को तो सब धामों, तीर्थों व गुरुओं की यात्रा व चरण शरण पर भेजते हैं और आर्य समाज में रिसर्च का ढोल पीटते रहते हैं। मैंने कभी किसी को निराश तो नहीं किया, परन्तु प्रश्नों के उत्तर देते हुए जानता हूँ कि ऐसे सब व्यक्ति न तो आर्य बनेंगे और न ही मिशनरी। निरन्तर स्वाध्याय, सत्संग, सन्ध्या व सम्पर्क करने वाले ही कुछ बनते हैं।

पाकिस्तान से प्रकाशित एक नामी मोलाना की एक पुस्तक के पृष्ठ-२ पर पं. लेखराम, स्वामी दर्शनानन्द, पं. चमूपति जी, उपाध्याय जी का नाम लिये बिना इस्लाम को हमारे इन महापुरुषों के शब्दों में प्रस्तुत किया जाता है। इस्लाम के इस वैदिक रंग का आर्य समाज में शोध का शोर मचाने वाले किसी रिसर्च स्कारलर को कतई पता नहीं। आईये!

इस्लाम के वैदिक स्वरूप के दर्शन करवायें:- ''धर्म एक था, धर्म एक है और एक रहेगा।'' मित्रों! क्या पं. चमूपति जी की रंगत में लिखा वाक्य नहीं है?

विकासवाद का खण्डन:- ''हमारे कुछ विचारकों का यह मत है कि मानवीय स्वभाव में विकास होता रहा अत: प्रत्येक युग में एक नये मजहब की आवश्यकता पड़ती रही, यह कथन सत्य नहीं लगता।''

जब पाप पुण्य का विचार नित्य अनादि है:- ''जब मानवीय नेचर व पाप तथा पुण्य अपरिवर्तनशील हैं तो फिर धर्म जो पुण्य व पाप की ही व्याख्या का नाम है, कैसे बदल सकता है?'' सज्जनो! यह कथन पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय जी अथवा आचार्य उदयवीर जी का नहीं है। यह एक मूर्धन्य इस्लामी स्कालर व साहित्यकार की घोषणा है। यह पं. रामचन्द्र जी देहलवी, पं. शान्तिप्रकाश व ठाकुर अमरसिंह की सतत साधना का फल है। क्या कभी सोचा है कि आज के ईसाई व मुस्लिम विद्वान् केवल कए ही आर्य पत्र को क्यों पढ़ते हैं? वह पत्र है परोपकारी और केवल परोपकारी। परोपकारी के विद्वान् लेखक मनन चिन्तन करके सैद्धान्तिक लेख देते हैं।

सुलेमान नाम के परोपकारी के एक प्रेमी ने इस सेवक को लिखा था कि आपकी पुस्तक की सबसे पहली प्रति मैं क्रय करुँगा। यह मेरा सन्मान नहीं यह देहलवी जी की और पं. शान्तिप्रकाश की तपस्या व विद्वत्ता का अभिनन्दन है।

प्रतिपल न्याय:- ईसाई मुसलमान कियामत की रात ....को अल्लाह द्वारा न्याय का होना मानते हैं। इस पुस्तक में प्रतिपल न्याय का होना माना है। लगता हे कि लेखक के सिर पर सत्यार्थप्रकाश सवार है। सुनो! वह पं. लेखराम जी की शैली में पूछता है:-''कौन कहता है कि अल्लाह ने सजा व जजा (भले बुरे कर्मों का फल) कीसकल व्यवस्था कियामत के दिन तक उठा रखी है और उसने हमं यहाँ स्वतन्त्र छोड़ रखा है।'' आज इतना ही शेष फिर। मतांधता के इस युग में वैदिक धर्म की, महर्षि दयानन्द की, महर्षि गौतम, कपिल ओर कणाद की इससे बड़ी दिग्विजय क्या होगी?

अल्लाह मियाँ क़ी यूरोप-यात्रा:- उर्दू के महाकवि अकबर ने गुणियों को एक रोचक कहानी सुनाई। अल्लाह मियाँ कभी यूरोप के सैर सपाटे पर निकले तो किसी श्रे उन्हें पहचाना ही नहीं। कहीं किसी ने पूछा तक नहीं। सी ने बता दि कि यह तो ईसा मसीह के बाप हैं। अब सव झुक-झुक कर नमन करने लगे। भारत में आज कपिल, जैमिनि आदि ऋषियों की, श्री रामचन्द्र, मनु महाराज की वेद उपनिषद् को काशैन पूछता है। काली की, वैष्णव देवी की, बर्फानी बाबा की, साईं बाबा की, विवेकानन्द महाराज की, कुम्भ स्नान की पूछ है। अब तो स्कन्ध गुप्त से पराक्रमी, शिवाजी और वीर सावरकर तथा रोशन विस्मिल अशफाक को कौन पहचानता है। घर वापसी वाले तो पण्डित लेखराम स्वामी श्रद्धानन्द जी को ही भूल गए।

आर्य समाज के स्वर्णिम इतिहास से:- अपने माननीय पाठकों के आदेश से आर्य समाज के इतिहास से दो विशेष व गौरवपूर्ण बेजोड़ प्रसंग संक्षेप से दिये जाते हैं:-

पं. शान्तिप्रकाश जी पर ४० आरोप लगाये गये:- आज कौन जानता है कि मिर्जाइयों के दबाव से कादियाँ के इतिहास में अंग्रेज सरकार ने पूज्य पं. शान्तिप्रकाश जी पर ४० दोष लगाये थे। अमानवीय यातनायें सहीं और हाई कोर्ट से निर्दोष सिद्ध होकर छोड़े गये। क्या कोई वक्ता, नेता व लेखक इसकी चर्चा करता है?

प्रो. रामसिंह जी का वह भाषण:- सिंध में सत्यार्थप्रकाश रक्षा आन्दोलन में प्रो. रामसिंह जी ने दिल्ली में लगातार आठ घण्टे भाषण दिया। देहलवी जी अध्यक्ष थे। उन्हीं के कहने पर समाप्त किया। कादियाँ में पं. शान्तिप्रकाश जी ने सात घण्टे भाषण दिया उसी पर ४० आरोप लगाकर केस चलाया गया। आर्यो! इस इतिहास की रक्षा करो।

वेद सदन, अबोहर, पंजाब-१५२११६

(परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित)

योग—साधना शिविर

दिनांक : १२ से १९ अक्टूबर, २०१६

आज समाज के अनेक क्षेत्रों में अनेक प्रकार से लोग साधना के लिए प्रयासरत हो रहे हैं। अनेक प्रशिक्षकों द्वारा इस विषयक ज्ञान-विज्ञान भी प्रदान किया जा रहा है। फिर भी साधकों को साधना की सन्तुष्टिदायक स्थिति प्राप्त नहीं हो पा रही है। इसका कारण है कि साधना के विषय **साध्य, साधन, साधक व अन्य साधकों-बाधकों** के ज्ञान का वैदिक परम्परा से दूर होना। इस योग-साधना शिविर में इन्हीं विषयों का वैदिक-दर्शनों के द्वारा ज्ञान करवाया जायेगा, उससे सम्बन्धित जिज्ञासाओं का समाधान व आत्मनिरीक्षण के द्वारा अपनी उन्नति का मापदण्ड बताया जायेगा। यह शिविर अवश्य ही आपकी साधना की उन्नति में विशेष साधन बनेगा, जिससे कि मानव जीवन के मुख्य व चरम लक्ष्य की प्राप्ति उत्तरोत्तर काल में आप अपने निकट अनुभव करने लगेंगे।

प्रार्थियों हेतु नियम व अनुशासन

१. प्रत्येक प्रार्थी के लिए पूर्ण मौन अनिवार्य होगा।

२. शिविर के काल में किसी साधक के द्वारा नियम व अनुशासन भंग करने पर उसे शिविर के मध्य में ही शिविर छोड़ने के लिए बाध्य किया जा सकता है।

३. पूरे शिविर में साधक के द्वारा किसी भी माध्यम से बाह्य-सम्पर्क करना निषिद्ध रहेगा।

४. शिविर काल में किसी भी साधक को ऋषि उद्यान परिसर से बाहर जाने की अनुमति नहीं होगी।

५. साधकों की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति ऋषि-उद्यान परिसर में ही की जायेगी।

६. बाह्य-वृत्ति उत्पादक साधनों जैसे समाचार-पत्र पढ़ना, आकाशवाणी श्रवण व दूरदर्शन देखना, पर पूर्ण प्रतिबन्ध रहेगा।

७. किसी प्रकार का शारीरिक रोग यथा सर्दी, खाँसी, जुकाम अथवा अन्य कोई ध्वनि उत्पादक रोग वाले को प्रवेश नहीं दिया जायेगा।

८. बच्चों को साथ लाये जाने पर प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जाएगा।

९. किसी भी मादक द्रव्य, चाय-कॉफी आदि का सेवन निषिद्ध होगा।

१०. शिविर के प्रारम्भ दिन से लेकर समापन-सत्र पर्यन्त पूर्ण रूप से शिविर में भाग लेना अनिवार्य होगा।

११. नियम व अनुशासन के पालन को आवेदन में ही लिखित स्वीकार करना होगा।

उपरिलिखित किसी भी नियम व अनुशासन का पालन करने में असमर्थ व अयोग्य प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जायेगा।

प्रार्थियों के लिए सूचनाएँ-मन्त्री परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर (राज.) से संपर्क कर शिविर से पूर्व शुल्क जमा करवा कर अपने नाम का पंजीयन करा लें। शिविर में माता-बहिनें भी भाग ले सकती हैं। पुरुषों एवं महिलाओं के आवास की सामूहिक व्यवस्था पृथक्-पृथक् की जाती है। पृथक् कक्ष चाहने वालों को अतिरिक्त शुल्क १००० से २००० रु. देय होता है। पृथक् कक्ष की व्यवस्था पूर्व सूचना व उपलब्धता के अनुसार की जाती हैं।

ऋषि उद्यान में दरी, गद्दे, तकिए एवं बर्तन उपलब्ध हैं शेष दैनिक उपयोग की वस्तुएँ यथा मंजन, ब्रश, साबुन, तेल, दवाएँ, बिछाने-ओढ़ने की चादरें, लिखने के लिए संचिका (नोटबुक), लेखनी, करदीप (टार्च) आदि को साधक अपने साथ लाएँ। वस्त्र सादगी एवं शिष्टाचार के अनुकूल हों, आभूषणों एवं सुगन्धित द्रव्यों का उपयोग न हो। आपके पास योगदर्शन हो तो साथ लाएँ अन्यथा यहाँ भी क्रय किया जा सकता है। सतर्कता की दृष्टि से कीमती वस्तुएँ साथ न लावें। यदि आपको कोई संक्रामक रोग, तेज खांसी, दमा, मिर्गी आदि मानसिक रोग, वायु विकार या अन्य गंभीर रोग हो, तो कृपया शिविर में आना स्थगित रखें। यदि अपने कार्य स्वयं न कर सकते हों तो सहायक साथ में लायें। अजमेर या निकटवर्ती स्थल (पुष्कर) देखना चाहें, तो शिविर से पूर्व या पश्चात् अतिरिक्त समय निकाल कर आयें। लौटने का रेल-आरक्षण शिविर में आने से पूर्व करवा लें। अजमेर पहुँचने की सूचना घर पर देनी हो तो शिविर स्थल में प्रवेश से पहले दे देवें। खाने पीने की वस्तुएँ साथ न लावें।

यह शिविर परोपकारिणी सभा, अजमेर के सौजन्य से आयोजित किया जा रहा है। शिविर शुल्क १००० रु. मात्र जमा करना होगा। शिविर में भाग लेने वालों को शिविर के प्रारंभ दिनांक को सायं चार बजे तक शिविर स्थल ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर में पहुँच जाना आवश्यक है क्योंकि इसी दिन शाम को शिविर के अनुशासन एवं विभिन्न व्यवस्थाओं संबन्धी महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ दी जाएँगी। शिविर का समापन अन्तिम दिन दोपहर एक बजे तक होगा। शिविर समाप्ति से पूर्व जाने की अनुमति नहीं दी जायेगी।

शिविर से आपका जीवन श्रेष्ठतर व पवित्रतर बने, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ।

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर दूरभाष : ०१४५-२४६०१६४

: मार्ग :

ऋषि उद्यान शिविर स्थल पर पहुंचने के लिए फॉयसागर की ओर जाने वाली सिटी बस या ऑटो-रिक्शा, रेल्वे स्टेशन व बस स्टेण्ड से (वाया-आगरा गेट/फव्वारा चौराहा) सर्वदा सुलभ रहते हैं।

email:psabhaa@gmail.com

-संयोजक

लेखकों से निवेदन

परोपकारी में उन लेखों, कविताओं, रचनाओं को दिया जाता है, जो **मौलिक व अप्रकाशित** हों। अत: सभी लेखकों से निवेदन है कि वे अपनी उन्हीं रचनाओं को भेजें जो मौलिक व अप्रकाशित हों।

अनेक लेखक मौलिक व अप्रकाशित रचना तो भेजते हैं, किन्तु उसे एक साथ **अनेक पत्रिकाओं को भेजते हैं।** अत: लेखकों से यह भी निवेदन है कि वे कृपया परोपकारी को वे ही रचना भेजें, जो अन्य पत्रिकाओं के लिए न भेजी हो। परोपकारी में छपने के बाद यदि अन्यत्र भेजना चाहें तो यह उनकी इच्छा पर निर्भर करता है।

कृपया लेख के अन्त में अपना **पूरा पता व चल-दूरभाष संख्या अवश्य लिखें।** लेख के स्वीकृत-अस्वीकृत होने की सूचना चल-दूरभाष पर संक्षिप्त संदेश द्वारा प्रेषित कर दी जायेगी। **परोपकारिणी सभा द्वारा रचनाओं के लिए किसी प्रकार का भुगतान नहीं किया जाता है।**

रचयिता अपनी रचना की एक प्रति कृपया अपने पास रखकर भेजें, क्योंकि **अस्वीकृत रचनायें डाक द्वारा लौटाई नहीं जाती हैं।** स्वीकृत रचना परोपकारी के किसी आगामी अङ्क में देखी जा सकती है। रचना के प्रकाशन में छः माह या अधिक समय भी लग सकता है, अत: कृपया तब तक रचना को अन्यत्र न भेजें।

-संपादक

सब व्यवहार करने वालों को चाहिये कि जो मनुष्य जिस काम में चतुर हो उसको उसी काम में प्रवृत्त करें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.२०

राज भाषा दिवस या मास मनाने का औचित्य-अनौचित्य

-सत्येन्द्र सिंह आर्य

विश्व में शायद भारत ही एक मात्र ऐसा राष्ट्र है, जिसे अपने देश की सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा को राजभाषा (Officical Language) के रूप में प्रचलित / प्रसारित करने के लिए राजभाषा दिवस / सप्ताह / पखवाड़ा / मास मनाना पड़ता हो। जापान, जर्मनी, फ्राँस, रूस, इंग्लैण्ड आदि देश सब अपने-अपने देश की भाषा में काम करते हैं। उसके लिए वे कोई योजना नहीं बनाते। राष्ट्र का काम है, स्वत: स्वाभाविक ढंग से होता है, परन्तु भारत में स्वाधीनता प्राप्त हुए लगभग सात दशक हो गए और हिन्दी को राजभाषा के रूप में काम में लाने के मामले में वही ढाक के तीन पात।

सन् १९४६ ईसवी में जब अंग्रेजों ने भारतीय नेताओं को कह दिया कि अगले वर्ष (सन् १९४७) में भारत को ब्रिटिश शासन से मुक्त कर दिया जाएगा, तो दिसम्बर १९४६ में संविधान सभा की पहली बैठक बैरिस्टर श्री सच्चिदानन्द सिन्हा की अध्यक्षता में हुई। बैठक की कार्रवाई अंग्रेजी में ही आरम्भ हुई। इस पर झाँसी से संविधान सभा के सदस्य श्री रघुनाथ विनायक धूलेकर ने आपत्ति की और कहा कि संविधान देश की भाषा हिन्दी में बनना चाहिए तथा सारी चर्चा भी हिन्दी में ही होनी चाहिए। इस पर हिन्दी के विरोधी और मैकाले के (अंग्रेजी भक्त) मानस-पुत्र इतने मुखर हुए कि पं. नेहरु को दखल देना पड़ा और जो काम हिन्दी में होना चाहिए था, वह हिन्दी में न होकर अंग्रेजी में हुआ। अगस्त १९४७ में भारत स्वतंत्र हो गया। संविधान सभा अपना संविधान निर्माण का काम करती रही। १४ सितम्बर १९४९ को संविधान सभा में तीन गैर-हिन्दी भाषी सदस्यों (सर्व श्री अम्बेडकर, आयंगर एवं के.एम. मुंशी) द्वारा यह प्रस्ताव रखा गया कि भारत में संघ की (केन्द्र सरकार की) राजभाषा हिन्दी होगी, उसकी लिपि देवनागरी होगी तथा अंक भारतीय मूल के एवं अन्तरराष्ट्रीय स्वरूप वाले (1, 2, 3, 4, 5) होंगे, परन्तु पं. नेहरु ने इस राजभाषा विषयक प्रस्ताव के साथ यह शर्त जोड़ दी कि संविधान लागू होने के दिन से १५ वर्ष की अवधि में हिन्दी के साथ-साथ अंग्रेजी का प्रयोग भी यथावत् होता रहेगा। तभी से १४ सितम्बर को राजभाषा दिवस के रूप में मनाया जाता है। उस दिन की बैठक में राजर्षि पुरुषोत्तम दास टण्डन उपस्थित नहीं थे। शाम के समय सेठ गोविन्द दास बड़े उत्साह में टण्डन जी को यह बताने के लिए कि हिन्दी को सर्व सम्मति से भारत संघ की राजभाषा स्वीकार कर लिया है, गए। जब टण्डन जी ने पूरी बात सुन ली तो वे बोले कि गोविन्द दास यह १५ वर्ष तक अंग्रेजी के प्रयोग को विधि-सम्मत बनाये रखने की शर्त बहुत बुरी है। कोई गारण्टी नहीं कि पं. नेहरु इस अवधि को नहीं बढायेंगे। वही हुआ। सन् १९६३ में राजभाषा अधिनियम पास करके यह शर्त लगा दी कि जब तक भारत संघ का एक भी राज्य यह चाहेगा कि उसके साथ पत्र-व्यवहार अंग्रेजी में किया जाए तब तक अंग्रेजी का प्रयोग विधि-सम्मत रहेगा। इस प्रकार अंग्रेजी को सदा के लिए भारत पर लाद दिया गया।

भारत विभाजन के समय जो लोग उर्दु के पक्षधर थे, वे पाकिस्तान चले गए, परन्तु भारत के राजनेता वोट के लिए कुछ भी करने के लिए तैयार हैं। वर्ष १९७९ में १४ सितम्बर के दिन उत्तरप्रदेश की विधान सभा में तत्कालीन मुख्यमन्त्री नारायण दत्त तिवारी ने स्वयं उर्दु को द्वितीय राजभाषा बनाने का बिल प्रस्तुत किया और पारित कराया। उर्दु को द्वितीय राजभाषा बनाने के लिए कहीं से किसी ने कोई माँग नहीं की थी, परन्तु वोटों के लालच में हिन्दी को पीछे धकेल दिया गया। सरकारी कार्यालयों के लिए नियम यह है कि उनके बोर्ड द्विभाषी हों। ऊपर हिन्दी हो, नीचे अंग्रेजी हो। जहाँ स्थानीय भाषा हिन्दी न हो, वहाँ बोर्ड त्रिभाषी हों जिनमें स्थानीय (उस प्रान्त की) भाषा को प्रधानता दी जाए। सरकार की सूची में दिल्ली हिन्दी भाषी राज्य है,

वहाँ पर सरकारी बोर्ड द्विभाषी ही थे, परन्तु एक बार जैसे ही चुनाव आने वाले थे, दिल्ली की तत्कालीन मुख्यमन्त्री शीला दीक्षित ने रातों-रात सरकारी कार्यालयों के बोर्ड पुतवा कर चार भाषाओं में करवा दिए-हिन्दी, अंग्रेजी, पंजाबी और उर्दु में। ऐसा करने के लिए कहीं से कोई माँग नहीं उठी थी और चार भाषाओं में बोर्ड बनवाने की कोई विधिक बाध्यता भी नहीं है, परन्तु सिखों के एवं मुस्लिमों के वोट हथियाने के लिए राजनीति की कुशल खिलाड़ी श्रीमती दीक्षित ने यह दाँव खेला था।

राजनेताओं की इस प्रकार की कलाबाजियों से राजभाषा का अहित होता है, सरकारी कामकाज में हिन्दी के प्रयोग पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है, परन्तु राजनेता को अपना तथा अपनी राजनीतिक पार्टी का हित सर्वोपरि होता है, राष्ट्रहित गौण होता है। ऐसे में हिन्दी कैसे पनप सकती है।

केन्द्र सरकार में राजभाषा विभाग होता है, उस विभाग के अध्यक्ष (प्रमुख) भारत के गृहमन्त्री होते हैं। श्री पी. चिदम्बरम् भारत के गृह-मन्त्री, वित्त मन्त्री पद पर रहे हैं। उनके सरकारी निवास पर जो नाम पट्टिका टंगी थी उस पर उनका नाम, पद आदि केवल तमिल और अंग्रेजी में था जबकि दिल्ली जैसे हिन्दी भाषी राज्य में यह केवल हिन्दी, अंग्रेजी में होना चाहिए था। जिस देश में केन्द्र सरकार के राजभाषा विभाग के प्रमुख का रवैया राजभाषा के प्रति ऐसी उपेक्षा एवं बेहयाई का हो, वहाँ तो राजभाषा मास, पखवाड़ा, सप्ताह या दिवस मनाकर ही सन्तोष करना पड़ता है। यह तो ऐसा ही लगता है जैसे ये दिवस मनाकर हिन्दी का श्राद्ध कर रहे हों।

सौभाग्य से भारत के वर्तमान प्रधानमन्त्री एक प्रखर राष्ट्र भक्त हैं और गृहमन्त्री राजनाथ सिंह जी भी स्वयं हिन्दी भाषी एवं असाधारण राष्ट्रवादी हैं। हम आशा करते हैं कि हिन्दी को राजभाषा का स्थान अब प्राप्त हो सकेगा। राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त जी की कुछ पक्तियां कविता के रूप में दी जा रही हैं जो आज भी बहुत सामयिक हैं।

नागरी लिपि और आर्य भाषा

- स्व. मैथिलीशरण गुप्त

जैसा लिखो वैसा पढ़ो, कुछ भूल हो सकती नहीं।
है अर्थ का न अनर्थ, इसमें एक बार हुआ कहीं।।
इस भांति होकर शुद्ध यह अति सरल और सुबोध है।
क्या उचित फिर इसका कभी अवरोध और विरोध है।।

सम्पूर्ण प्रान्तिक बोलियाँ सर्वत्र ज्यों की त्यों रहें।
सब प्रान्तवासी प्रेम से उनके प्रवाहों में बहें।।
पर एक ऐसी मुख्य भाषा चाहिए होनी यहाँ।
सब देशवासी जन जिसे समझें समान जहाँ-तहाँ।।

हो जाए जब तक एक भाषा देश में प्रचलित नहीं।
होगा हजारों यत्न से भी कुछ हमारा हित नहीं।।
जब तक न भाषण ही परस्पर कर सकेंगे हम सभी।
क्या काम कोई कर सकेंगे! हाय हम मिलकर कभी।।

- सौजन्य - भारत-भारती

भाषा

- स्व. मैथिलीशरण गुप्त

भाषा का है प्रश्न नहीं केवल भाषा का,
केन्द्र बिन्दु है यह आजादी की आशा का।
इससे ही है जुड़ी हुई हर राह प्रगति की,
नैतिकता की, स्वाभिमान की और सुमति की।
अंग्रेजी को हटा स्वदेशी भाषा लाओ,
राष्ट्रीयता के पथ का व्यवधान हटाओ।।

जैसे वेद के वेत्ता विद्वान् लोग वेदानुकूल मार्ग से परमेश्वर को जानकर उत्तम ज्ञान से उसका सेवन करते हैं वैसे ही जगदीश्वर सब को उपासनीय अर्थात् सेवन करने के योग्य है, वैसे ज्ञान के विना ईश्वर की उपासना कभी नहीं हो सकती क्योंकि विज्ञान ही उसकी अवधि है।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.४

परोपकारिणी सभा, अजमेर के तत्त्वावधान में

१३३ वाँ ऋषि बलिदान समारोह

दिनांक ४, ५, ६ नवम्बर २०१६, शुक्र, शनि, रविवार

महापुरुषों का यज्ञमय जीवन हमको प्रत्येक कदम पर प्रेरणा व मार्ग दर्शन देता रहता है। जिस कारण हम उनके ऋणी हो जाते हैं। इस ऋण से मुक्त होने का एक ही उपाय है- महापुरुषों की विचारधारा का यथासामर्थ्य प्रचार-प्रसार। विराट व्यक्तित्त्व महर्षि दयानन्द की समग्र मानव जाति ऋणी है। इस ऋण को चुकाने का स्वर्ण-अवसर ऋषि के १३३ वें बलिदान वर्ष के उपलक्ष्य में हमको प्राप्त हुआ है। इस अवसर पर परोपकारिणी सभा भव्य समारोह का आयोजन करने जा रही है।

ऋग्वेद पारायण यज्ञ- ३१ अक्टूबर से 'ऋग्वेद पारायण यज्ञ' का आरम्भ किया जायेगा, इस यज्ञ की पूर्णाहूति बलिदान समारोह के अन्तिम दिन ६ नवम्बर को प्रात: १० बजे होगी। यज्ञ के ब्रह्मा श्री सत्यानन्द वेद वागीश होंगे। यह यज्ञ ऋषि-उद्यान, अजमेर की यज्ञशाला में होगा।

वेदगोष्ठी - प्रतिवर्ष की परम्परा के अनुसार इस वर्ष भी अन्तर्राष्ट्रीय दयानन्द वेदपीठ दिल्ली एवं अनुसन्धान केन्द्र परोपकारिणी सभा के संयुक्त प्रयास से वेदगोष्ठी का आयोजन किया जायेगा। इस गोष्ठी में देश के विविध विद्वान् अपने शोधपूर्ण मौलिक विचार प्रस्तुत करेंगे। इस वर्ष वेदगोष्ठी का विचारणीय बिन्दु है- **दयानन्द दर्शन की वेदमूलकता।** जो विद्वान् गोष्ठी में शोधपत्र प्रेषित करना चाहते हैं, वे १५ अक्टूबर तक सभा के पते पर प्रेषित करवा देवें। ४, ५, ६ नवम्बर को ऋषि बलिदान समारोह के कार्यक्रमों के साथ-साथ वेदगोष्ठी भी चलती रहेगी। ऋषि-भक्त इसे सुनने का लाभ उठा सकते हैं।

चतुर्वेद कण्ठस्थीकरण वेद प्रतियोगिता- प्रतिवर्ष आयोजित की जाने वाली इस प्रतियोगिता में २१ वर्ष तक के छात्र भाग ले सकते हैं। किसी भी वेद को आद्योपान्त स्मरण करके इस प्रतियोगिता में भाग लिया जा सकता है। जो छात्र जिस वेद पर गत वर्षों में पारितोषिक ग्रहण कर चुके हैं, वे उस वेद से अतिरिक्त वेद स्मरण करके भाग ले सकते हैं। ४ नवम्बर को परीक्षा एवं ५ नवम्बर को पुरस्कार-वितरण का कार्यक्रम होगा। जो छात्र इस प्रतियोगिता में भाग लेना चाहते हैं, वे अपने-अपने गुरुकुलों, आश्रमों, संस्थानों से आचार्य द्वारा अधिकृत पत्रक पर २-छायाचित्र सहित अपना परिचय १५ अक्टूबर, २०१६ तक आचार्य महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल, ऋषि उद्यान, अजमेर के पते पर भेज दें।

सम्मान - प्रतिवर्ष विशिष्ट वैदिक विद्वान्, विदुषियों एवं कार्यकर्त्ताओं को इस समारोह में सम्मानित किया जाता है। इस वर्ष भी सम्मान -समारोह होगा। जिसमें अनेक विद्वान्-विदुषियों एवं कार्यकर्त्ताओं को सम्मानित किया जायेगा।

नवम्बर के आरम्भ में अजमेर में हलकी ठंड होने लगती हैं, ऋषि उद्यान खुले में होने से सर्दी का प्रभाव कुछ अधिक रहेगा। रात्रि में कम्बल ओढ़ने जैसी ठण्ड रहेगी। जो समूह में रहना चाहते हैं उनकी निवास व्यवस्था ऋषि उद्यान में होगी और जो अपने निवास की व्यवस्था होटल-धर्मशाला में करवाना चाहते हैं, कृपया वे सभा कार्यालय से पूर्व सम्पर्क कर अग्रिम राशि जमा करवा कर कमरा आरक्षित करवा लें।

सभी से विशेष निवेदन है कि अपने आने की सूचना कम से कम एक सप्ताह पूर्व दे देवें, जिससे संख्या का अनुमान होकर तदनुसार व्यवस्था की जा सके।

सभी से निवेदन है कि १३३ वें बलिदान समारोह में अपने परिवार व समाज के सभी कार्यकत्ताओं सहित पधार कर महर्षि को हार्दिक श्रद्धांजलि प्रदान करें, महर्षि दयानन्द के स्वप्न को साकार करने हेतु प्रेरणा उत्साह प्राप्त कर प्रचार-प्रसार को एक नई चेतना प्रदान करें।

ऋषि मेले में आमन्त्रित विद्वान्- प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु जी-अबोहर, आचार्य विजयपालजी-झज्जर, स्वामी ऋतस्पति जी, डॉ. ब्रह्ममुनि जी-महाराष्ट्र, डॉ. सुरेन्द्र कुमारजी- कुलपति गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय हरिद्वार, डॉ. वेदपाल जी-बडौत, आचार्या सूर्या देवी जी- शिवगंज, डॉ. राजेन्द्रजी विद्यालंकार, डॉ. रामप्रकाश जी, सत्येन्द्रसिंह जी- मेरठ, डॉ. कृष्णपाल सिंह जी- जयपुर, श्री सत्यानन्द आर्य- दिल्ली, श्री राजवीर जी-मुरादाबाद, श्री जगदीश जी शर्मा- जयपुर, श्री शिवकुमार जी चौधरी -इन्दौर, श्री जयदेव जी आर्य-राजकोट, श्री प्रकाश जी आर्य-महू, श्री कन्हैयालाल जी-गुड़गाँव, डॉ. रामचन्द्र जी- कुरुक्षेत्र, श्री तपेन्द्र कुमार जी-जयपुर, डॉ. जगदेव जी-रोहतक, श्री विरजानन्द जी दैवकरणि-झज्जर, डॉ. सत्यपालसिंह जी-संसद सदस्य, डॉ. मुमुक्षु जी-नोएडा, ठाकुर विक्रमसिंह जी-दिल्ली, श्री अशोक जी आर्य-नोएडा, श्री रामपाल जी शास्त्री-मन्त्री हरियाणा प्रतिनिधि सभा, श्री सत्यवीर जी शास्त्री-रोहतक, श्री शत्रुञ्जय जी रावत- हैदराबाद, माता अमृत जी-श्री रामपाल जी-हरि., दिल्ली, श्री बाबूराम महात्रे-हैदराबाद, श्री सत्यपाल जी पथिक, प. भूपेन्द्र सिंह जी आदि।

इस समारोह हेतु आपका आर्थिक सहयोग आयकर की धारा '८०-जी' के अन्तर्गत दिए गये प्रावधान के अनुरूप कर मुक्त होगा। विदेश में निवास कर रहे धर्मप्रेमी सज्जन स्वदेश में होने वाले इस समारोह हेतु मुक्त हस्त से दान देकर देश का गौरव बढ़ाएँ। सभा को भारतीय शासन द्वारा विदेशों से दानस्वरूप दी गई राशि को प्राप्त करने की छूट प्राप्त है। आपका सहयोग ही हमारा सम्बल है। शुभकामनाओं सहित।

गजानन्द आर्य	धर्मवीर	ओम मुनि
संरक्षक	प्रधान	मन्त्री

आत्मा का स्थान-१

- स्वामी आत्मानन्द

आत्मा शरीर में किस स्थान पर रहता है? यह एक प्रश्न है। इस प्रश्न को अवकाश तब ही मिलता है जबकि हम आत्मा को अणु मान लें। व्यापक मान लेने पर तो आत्मा सारे ही शरीर में और शरीर से बाहर भी विद्यमान होगा, अतः इस सिद्धान्त को मानने वाले के सामने तो यह प्रश्न उपस्थित ही नहीं होता। आत्मा को मध्यम परिमाण वाला मानने वाले विचारकों के समान भी यह प्रश्न आता नहीं। क्योंकि वे आत्मा को सारे शरीर में व्यापक मानते हैं उसके किसी एक देश में नहीं। अतः यह प्रश्न उन्हीं विचारकों के सामने उपस्थित होता है जो आत्मा को अणु, और इसी लिये शरीर के किसी एक देश में उसका निवास मानते हैं। यद्यपि प्रसङ्ग-वश उपनिषदों की दृष्टि से आत्मा के परिमाण का भी निर्देश कर दिया जावेगा, परन्तु इस लेख का विचारणीय विषय यह नहीं है कि आत्मा का परिमाण क्या है। इस लेख में दर्शनों के आधार पर नहीं, केवल उपनिषदों के आधार पर इस प्रश्न का उत्तर दिया जावेगा कि 'आत्मा का निवास हमारे शरीर के किस भाग में है'?

यह लेख इस दृष्टि से नहीं लिखा जा रहा है कि इसे ही सिद्धान्त मान लिया जावे जो विषय इस लेख में प्रतिपादित है। प्रत्युत मैं यह विचार धारा '**भवद्भ्यः-अवसरप्रदानाय वचान्सि नः**' (=आप कुछ कहें, इसलिए हम बोल रहे हैं) इस भावना से प्रस्तुत कर रहा हूँ। जो विद्वान् महानुभाव इस विचारमाला में अपने मनोहर पुष्पों को युक्ति से गूंथने की कृपा करेंगे मैं उनका आभारी हूँगा। मैं यह कभी आग्रह न करुँगा कि जो कुछ मैंने समझा है वह ही ठीक है। जो उत्तम विचार इस विषय में संगृहीत हो सकें, उनका सङ्कलन कर जनता के लाभ की वस्तु बना देना ही एक मात्र लक्ष्य है। विद्वानों के पारस्परिक विचार प्रसङ्ग में आई हुई कटुता जनता को तथा विद्वानों को स्वयं भी खटकती है और उस कटुता के पर्दे में छिपा हुआ विषय अनुपादेय सा ही बन जाता है। अतः सविनय प्रार्थना है और आशा है कि निबन्ध की त्रुटियों को सुझाता हुआ विद्वत्समुदाय सन्मार्ग प्रदर्शित करने का यत्न करेगा। आत्मा चेतना का आश्रय है। हमें अपने अन्तःकरण आदि साधनों से जितने ज्ञान होते हैं उन सब का कर्ता आत्मा ही है।

हमारी इन्द्रियाँ, अन्तःकरण तथा मस्तिष्क आदि जितने भी साधन हैं वे सब ही जड़ हैं। इनमें से यद्यपि अन्तःकरण में तथा इन्द्रियों में प्रकाश है, परन्तु उस प्रकार का प्रकाश जिसे चैतन्य कहते हैं, और जो आत्मा में है, इनमें नहीं है। इनके प्रकाश का प्रत्यक्ष अन्तर्मुखी चक्षु से हो सकता है, परन्तु आत्मा के चैतन्य रूप प्रकाश का प्रत्यक्ष चक्षु से नहीं हो सकता। जिस प्रकार सूर्य एक कक्ष पर अपना प्रकाश डालकर उसे प्रकाशित कर देता है, परन्तु जड़ होने के कारण यह नहीं जान सकता कि यह कक्ष है। इसी प्रकार मन और इन्द्रियाँ भी सूर्य की भांति ही कक्ष को प्रकाशित तो करते हैं परन्तु वे भी यह नहीं जान सकते कि यह कक्ष है क्योंकि वे भी जड़ हैं।

आत्मा, सूर्य, मन, और इन्द्रियों के प्रकाशित किये हुए कक्ष को उन्हीं की भाँति प्रकाशित तो नहीं करता, परन्तु उनके द्वारा प्रकाशित किये उस कक्ष की इसे अपने चैतन्य के बल पर अनुभव हो जाता है, और वह जान लेता है कि यह कक्ष है। इस प्रत्यक्ष की साधन जो आत्मा का चैतन्य है उसका प्रत्यक्ष न इन्द्रियाँ कर सकती हैं और न मन। अपने इस चैतन्य का प्रत्यक्ष या तो आत्मा स्वयं करता है या ईश्वर को इसके ज्ञान का प्रत्यक्ष होता है। इसे अपने ज्ञान का प्रत्यक्ष तब हुआ करता है जब यह कक्ष को जान कर यह कहा करता है कि ''मैं कक्ष को जानता हूँ'' इसके इस कथन का तात्पर्य यह हुआ करता है कि मेरे पास कक्ष का ज्ञान है। यह आत्मा को अपने उस ज्ञान का प्रत्यक्ष हुआ है जो कि उसे पहिले ''यह कक्ष है'' इस रूप में हुआ था, और जिसमें कि इन्द्रियों का और मन का सहयोग था। परन्तु इस ज्ञान के ज्ञान काल में तो ये सब साधन मौन हैं। इसी कारण आत्मा के तथा ईश्वर के अभौतिक चैतन्य का प्रकाश इन्द्रियों से तथा मन से नहीं हो सकता क्योंकि चैतन्य इस सब की पहुँच से परे है।

उपनिषद् के ''**न तत्र सूर्यो भाति**'' (उसके सामने सूर्य नहीं चमक सकता) इस वाक्य का यही तात्पर्य है कि सूर्य का प्रकाश प्रभु के प्रकाश को प्रकाशित नहीं कर सकता। ''**तस्य भासा सर्वमिदं विभाति**'' (उसके प्रकाश से यह सब चमक रहा है)इस वाक्य का तात्पर्य भी यह नहीं है, जैसे कि सूर्य और चन्द्रमा के विषय में कहा जाता

है, कि सूर्य के प्रकाश से चन्द्रमा चमक रहा है। यदि यह ही तात्पर्य होता तो हमें समझना पड़ता कि जैसा सूर्य का प्रकाश है वैसा ही और उससे सहस्रों गुणा प्रकाश ईश्वर का होगा, जिससे कि सूर्य आदि चमक रहे हैं परन्तु बात ऐसी नहीं है। यदि सूर्य जैसा और सूर्य से सहस्रों गुणा प्रकाश ईश्वर का होता तो वह हमें अपनी इन आंखों द्वारा ही दिखाई देना चाहिये था। और दिखाई देना तो दूर रहा उसे इतने महान प्रकाश से हमारी आंखें इतनी चुन्धिया जाती कि हमें कुछ भी दिखाई न देता, क्योंकि सूर्य तो हमसे बहुत दूर एक ही स्थान पर है और उसका प्रकाश बड़ी दूर से हमारे पास आता है, परन्तु ईश्वर का प्रकाश तो उसके सर्वव्यापक होने से हमारी आंखों के बीच में ही विद्यमान् है। अत: ईश्वर का प्रकाश सूर्य जैसा नहीं, आत्मा जैसा अनुरूप है। परन्तु वह प्रकाश आत्मा के प्रकाश से कितना अधिक है यह लिखने और बोलने की बात नहीं है। इसका अनुमान यहाँ से ही लगा सकते कि जीव एक अणु के समान है और ईश्वर सर्वव्यापक है। इस प्रकार आत्मा का प्रकाश अभौतिक और अनुभव रूप है उसका भौतिक साधनों से प्रत्यक्ष नहीं हो सकता और इसके अतिरिक्त अन्य तत्त्वों का प्रकाश भौतिक है उसका अन्य साधनों के सहकार से आत्मा को प्रत्यक्ष होता है।

'ईश्वर के प्रकाश से सूर्य आदि चमक रहे हैं' इस उपनिषद् के वाक्य का तात्पर्य यह ही है कि ईश्वर का ज्ञान इतना अधिक है कि प्रभु उस प्रकाश में प्रकृति के प्रत्येक अणु की शक्ति को पहिचान कर, सूर्य आदि पदार्थों की रचना में ऐसे परमाणुओं की योजना करता है कि उनसे निर्मित पदार्थ एक महान् प्रकाश का भण्डार बन जाता है। यदि ईश्वर का ऐसा ज्ञान न होता तो इन प्रकाश के पुञ्ज पदार्थों की रचना न हो सकती। बस यह ही उपनिषद् के इस वाक्य का तात्पर्य है।

इस प्रसङ्ग में आत्मा के सम्बन्ध में हमने यह बतलाने का यत्न किया है कि आत्मा एक चेतनावान् तत्त्व है। उसे उस चेतना अथवा अनुभव के द्वारा ही सब पदार्थों के ज्ञान होते हैं। इन्द्रियाँ, मन, मस्तिष्क आदि सब उसके इस ज्ञान में साधन हैं। ये स्वयं चेतनावान् नहीं है।

अब प्रश्न यह होता है कि आत्मा यदि चेतनावान् है तो उसकी उस चेतना की प्रतीति तो इस सारे ही शरीर में है। शरीर के प्रत्येक अङ्ग में जो क्रियाएँ अन्दर अथवा बाहर हो रही हैं उन सब को चेतना के आधार पर ही जन्म मिलता है। मन, प्राण, इन्द्रिय आदि साधन इन क्रियाओं की उत्पत्ति में आत्मा के सहायक हो सकते हैं परन्तु जड़ होने के कारण वे स्वयं सोच कर किसी क्रिया को उत्पन्न नहीं कर सकते। और जब क्रियाएँ शरीर के सब अङ्गों में हो रही हैं और आत्मा ही उनका जनक है तो आत्मा का निवास सारे शरीर में ही होना चाहिये। आत्मा शरीर के किसी एक भाग में हो और उसका चैतन्य शरीर के सब अङ्गों में क्रिया को उत्पन्न कर देगा यह माना नहीं जा सकता। क्योंकि गुण अपने गुणी में ही रहा करता हैं।अत:चैतन्य भी शरीर के उसी भाग में होगा जिसमें आत्मा है अत: वह भी सारे शरीर में क्रिया को उत्पन्न नहीं कर सकता। अत: आत्मा को ही इन क्रियाओं की उत्पत्ति के लिये सारे शरीर में व्यापक मानना चाहिये। **क्रमश.....**

यू-ट्यूब पर वीडियो प्रवचन उपलब्ध

वेद एवं आर्ष साहित्य में रुचि रखने वाले आर्यजगत् एवं धार्मिक जनों को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि अब यू-ट्यूब पर अनेक वैदिक आर्य विद्वानों के सैंकड़ों नये-नये प्रवचन उपलब्ध हैं। विश्व में कहीं पर भी इन्टरनेट से जुड़ कर ये प्रवचन नि:शुल्क सुने-देखे तथा डाउनलोड किये जा सकते हैं। आप जहाँ भी हैं, यदि आपको वैदिक आर्ष ज्ञान की पिपासा है, वेद एवं आर्ष ग्रन्थों के स्वाध्याय के साथ आप इन पर विद्वानों के प्रवचन भी सुनना चाहते हैं, तो इन्टरनेट से जुड़ कर सरलता से सुन सकते हैं।

इसके लिए you tube पर जाकर playlist of paropkarini sabha लिख कर सर्च करें, तो आपको अनेक प्लेलिस्ट मिलेंगी, यथा- वेद प्रवचन, योग दर्शन, ईशोपनिषद् आदि। इनमें इच्छानुसार जाकर लाभ उठाया जा सकता है। आप अपने परिचितों को यह सूचना देकर उन्हें भी लाभ उठाने को प्रेरित कर सकते हैं। भविष्य में अन्य भी नये-नये प्रवचन इस सूची में उपलब्ध कराये जाते रहेंगे।

।।ओ३म्।।

वेद गोष्ठी २०१६ के लिए निर्धारित विषय

दयानन्द दर्शन की वेदमूलकता

उपशीर्षक

१. महर्षि दयानन्द का विशिष्ट दार्शनिक चिन्तन

२. महर्षि दयानन्द का ईश्वरविषयक चिन्तन

३. ईश्वर एवं ब्रह्म, ईश्वर/ब्रह्मस्वरूप, कर्तृत्व

४. महर्षि दयानन्द का जीव विषयक चिन्तन (जीव का स्वरूप, संख्या, परिमाण, सादि-अनादि, जीव-ब्रह्म सम्बन्ध, अंशांशिभाव, जीव-जगत् सम्बन्ध, जीव का कर्तृत्व एवं भोक्तृत्व, मुक्ति में जीव का स्वरूप, जीव के मौलिक गुण, जीव-आत्मा-जीवात्मा)

५. महर्षि दयानन्द का जगत् विषयक चिन्तन

६. मध्यकालीन आचार्यों (शङ्कर एवं रामानुज) केसाथ दयानन्द के दार्शनिक विचारों की तुलना

७. स्वर्ग/मोक्ष

सन्दर्भ ग्रन्थ -

१. संहिता

२. उपनिषद

३. षड्दर्शन

४. दयानन्द दर्शन - डॉ. वेदप्रकाश गुप्त-मेरठ

५. दयानन्द दर्शन - डॉ. श्री निवासशास्त्री - कुरुक्षेत्र वि.वि.

६. त्रैतवाद का उद्भव और विकास-डॉ. योगेन्द्रपाल शास्त्री

७. आदर्श त्रैतवाद-राजसिंह भल्ला -सार्वदेशिक आ.प्र. सभा, दिल्ली

८. महर्षि दयानन्द विरचित ग्रन्थ

९. जीवात्मा - गंगाप्रसाद उपाध्याय-विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द, दिल्ली

१०. आत्मदर्शन - महात्मा नारायण स्वामी - सार्वदेशिक आ.प्र.सभा-दिल्ली

११. आस्तिकवाद-पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय-घूडमल प्रहल्लादकुमार - हिण्डौन, राजस्थान

१२. मृत्यु और परलोक म. नारायणस्वामी - सार्वदेशिक आ.प्र. सभा, दिल्ली

१३. अनादि तत्त्व-पं. चमूपति

१४. वैदिक स्वर्ग- पं. चमूपति

१५. महर्षि दयानन्द के दार्शनिक मन्तव्य-डॉ. कर्मसिंह आर्य

१६. ईश्वर प्रत्यक्ष -पं. मदनमोहन विद्यासागर

१७. ईश्वरसिद्धि-डॉ. श्रीराम आर्य

१८. महर्षि दयानन्द सरस्वती का पत्र व्यवहार-परोपकारिणी सभा, अजमेर

जिज्ञासा समाधान – ११९

– आचार्य सोमदेव

जिज्ञासा:-आदरणीय सम्पादक महोदय सादर नमस्ते। निवेदन यह है कि मैंने आर्य समाज मन्दिर में महर्षि दयानन्द जी का एक स्टेचू (बुत) जो केवल मुँह और गर्दन का है जिसका रंग गहरा ब्राउन है, रखा देखा है। पूछने पर पता चला कि यह किसी ने उपहार में दिया है। आप कृपया स्पष्ट करें कि क्या महर्षि का स्टेचू भेंट में लेना, बनाना और भेंट देना आर्य समाज के सिद्धान्त के अनुरूप है? जहाँ तक मेरा मानना है महर्षि ने अपनी प्रतिमा बनाने की सख्त मनाही की थी। कृपया स्पष्ट करें।

धन्यवाद, सादर।

– डॉ. पाल

समाधान:-महर्षि दयानन्द ने अपने जीवन में कभी सिद्धान्तों से समझौता नहीं किया। वे वेद की मान्यतानुसार अपने जीवन को चला रहे थे और सम्पूर्ण विश्व को भी वेद की मान्यता के प्रति लाना चाहते थे। वेद ईश्वर का ज्ञान होने से वह सदा निर्भ्रान्त ज्ञान रहता है, उसमें किसी भी प्रकार के पाखण्ड अन्धविश्वास का लेश भी नहीं है। वेद ही ईश्वर, धर्म, न्याय आदि के विशुद्ध रूप को दर्शाता है। वेद में परमेश्वर को सर्वव्यापक व निराकार कहा है। प्रतिमा पूजन का वेद में किसी भी प्रकार का संकेत नहीं है। महर्षि दयानन्द ने वेद को सर्वोपरि रखा है। महर्षि दयानन्द समाज की अवनति का एक बड़ा कारण निराकार ईश्वर की उपासना के स्थापना पर प्रतिमा पूजन को मानते हैं। जब से विशुद्ध ईश्वर को छोड़ प्रतिमा पूजन चला है तभी से मानव समाज कहीं न कहीं अन्धविश्वास और पाखण्ड में फँसता चला गया। जिस मनुष्य समुदाय में पाखण्ड अन्धविश्वास होता है वह समुदाय धर्म भीरु और विवेक शून्य होता चला जाता है। सृष्टि विरुद्ध मान्यताएँ चल पड़ती हैं, स्वार्थी लोग ऐसा होने पर भोली जनता का शोषण करना आरम्भ कर देते हैं।

महर्षि दयानन्द और अन्य मत सम्प्रदाय में एक बहुत बड़ा मौलिक भेद है। महर्षि व्यक्ति पूजा से बहुत दूर हैं और अन्य मत वालों का सम्प्रदाय टिका ही व्यक्ति पूजा पर है। महर्षि ईश्वर की प्रतिमा और मनुष्य आदि की प्रतिमा पूजन का विरोध करते हैं, किन्तु अन्य मत वाले इस काम से ही द्रव्य हरण करते हैं। इस व्यक्ति पूजा के कारण समाज में अनेक प्रकार के अनर्थ हो रहे हैं। इसी कारण बहुत से अयोग्य लोग गुरु बनकर अपनी पूजा करवा रहे हैं। जीते जी तो अपनी पूजा व अपने चित्र की भी पूजा करवाते ही हैं, मरने के बाद भी अपनी पूजा करवाने की बात करते हैं और भोली जनता ऐसा करती भी है। इससे अनेक प्रकार के अनर्थ प्रारम्भ हो जाते हैं। महर्षि दयानन्द ने जो अपना चित्र न लगाने की बात कही है, वह इसी अनर्थ को देखते हुए कही है। महर्षि विचारते थे कि इन प्रतिमा पूजकों से प्रभावित हो मेरे चित्र की भी पूजा आरम्भ न कर दें। इसी आशंका के कारण महर्षि ने अपने चित्र लगाने का निषेध किया था।

यदि हम आर्य महर्षि के सिद्धान्तों के अनुसार चल रहे हैं, प्रतिमा पूजन आदि नहीं कर रहे हैं तो महर्षि के चित्र आदि लगाए जा सकते हैं रखे जा सकते हैं। चित्र वा मूर्ति रखना अपने आप में कोई दोष नहीं है। दोष तो उनकी पूजा आदि करने में हैं। महर्षि मूर्ति के विरोधी नहीं थे, महर्षि का विरोध तो उसकी पूजा करने से था। यदि महर्षि केवल चित्र वा मूर्ति के विरोधी होते तो अपने जीवन काल में इनको तुड़वा चुके होते, किन्तु महर्षि के जीवन से ऐसा कहीं भी प्रकट नहीं होता कि कहीं महर्षि दयानन्द ने मूर्तियों को तुड़वाया हो। अपितु यह अवश्य वर्णन मिलता है कि जिस समय महर्षि फर्रुखाबाद में थे, उस समय फर्रुखाबाद बाजार की नाप हो रही थी। सड़क के बीच में एक छोटा-सा मन्दिर था, जिसमें लोग धूप दीप जलाया करते थे। बाबू मदनमोहन लाल वकील ने स्वामी जी से कहा कि मैजिस्ट्रेट आपके भक्त हैं, उनसे कहकर इस मठिया को सड़क पर से हटवा दीजिये। स्वामी जी बोले "मेरा काम लोगों के मनो से मूर्तिपूजा को निकालना है,

ईंट पत्थर के मन्दिरों को तोड़ना-तुड़वाना मेरा लक्ष्य नहीं है।'' यहाँ महर्षि का स्पष्ट मत है कि वे मूर्ति पूजा के विरोधी थे, न कि मूर्ति के।

आर्य समाज का सिद्धान्त निराकार, सर्वव्यापक, न्यायकारी आदि गुणों से युक्त परमेश्वर को मानना व उसकी उपासना करना तथा ईश्वर वा किसी मनुष्य की प्रतिमा पूजन न करना है। इस आधार पर महर्षि का स्टेचू भेंट लेना देना आर्य समाज के सिद्धान्त के विपरीत नहीं, सिद्धान्त विरुद्ध तब होगा जब उस स्टेचू की पूजा आरम्भ हो जायेगी। आर्य समाज का सिद्धान्त चित्र की नहीं चरित्र की पूजा अर्थात् महापुरुषों के आदर्शों को देखना अपनाना है।

किसी भी महापुरुष के चित्र वा स्टेचू को देखकर हम उनके गुणों, आदर्शों, उनकी योग्यता विशेष का विचार करते हैं तो स्टेचू का लेना-देना कोई सिद्धान्त विरुद्ध नहीं है। जब हम उपहार में पशुओं वा अन्य किन्हीं का स्टेचू भेंट कर सकते हैं तो महर्षि का क्यों नहीं कर सकते?

घर में जिस प्रकार की वस्तुएँ या चित्र आदि होते हैं उनका वैसा प्रभाव घर में रहने वालों पर पड़ता है। जब फिल्मों में काम करने वाले अभिनेता अभिनेत्रियों के भोंडे कामुकतापूर्ण चित्र वा प्रतिमाएँ रख लेते हैं, लगा लेते हैं तो घर में रहने वाले बड़े वा बच्चों पर उसका क्या प्रभाव पड़ता है आप स्वयं अनुमान लगाकर देख सकते हैं। इसके विपरीत महापुरुषों क्रान्तिकारियों के चित्र घर में होते हैं तो घर वालों पर और बाहर से आने वालों पर कैसा प्रभाव पड़ता होगा। घर में रहने वालों की विचारधारा को घर में लगे हुए चित्र व वस्तुएँ बता देती हैं। अस्तु।

महर्षि ने अपनी प्रतिमा बनाने का विरोध किया था, वह क्यों किया इसका कारण ऊपर आ चुका है। स्टेचू, चित्र आदि का भेंट में लेना-देना आर्य समाज के सिद्धान्त के विरुद्ध नहीं है। यह लिया-दिया जा सकता है, कदाचित् इसकी पूजा वा अन्य दुरुपयोग न किया जाय तो। इसमें इसका भी ध्यान रखें कि पुराण प्रतिपादित कल्पित देवता जो कि चार-आठ हाथ व चार-पाँच मुँह वाले वा अन्य किसी जानवर के रूप में हों उनसे लेने देने से बचें।

- ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर

वैदिक धर्मी बन जाओ

- पं. नन्दलाल निर्भय

अब भारत के नर-नारी, वैदिक मर्यादा भूल गए।
अब सभी दु:खी हैं भारी, वैदिक मर्यादा भूल गए।
जगतपिता जगदीश्वर का अब, सुमरन करना छोड़ दिया।
पत्थर की पूजा करते हैं, अधर्म से नाता जोड़ लिया।।
अच्छाई सभी बिसारी, वैदिक मर्यादा भूल गए।
अब सभी दु:खी हैं भारी, वैदिक मर्यादा भूल गए।।१।।
ऋषियों का यह देश हमारा, सकल विश्व में नाम था।
त्याग तपस्या सदाचार में, भूमण्डल का स्वामी था।।
थे यहाँ सन्त तपधारी, वैदिक मर्यादा भूल गए।
अब सभी दु:खी हैं भारी, वैदिक मर्यादा भूल गए।।२।।
सोलह वर्ष की कन्याएँ सब, युवती मानी जाती थीं।
युवा पुरुष पच्चीस वर्ष के, के संग ब्याह रचाती थीं।।
वैदिक प्रथा थी जारी, वैदिक मर्यादा भूल गए।
अब सभी दु:खी हैं भारी, वैदिक मर्यादा भूल गए।।३।।
ऊँच-नीच का, जाति-पाति का, यहाँ नहीं था रोग सुनों।
कर्म प्रधान मानते थे सब, सब करते थे योग सुनों।।
सच्चे थे ईश पुजारी, वैदिक मर्यादा भूल गए।
अब सभी दु:खी हैं भारी, वैदिक मर्यादा भूल गए।।४।।
परधन धूल समान भारती, मान परम सुख पाते थे।
'पर नारी को माता मानो', दुनियां को समझाते थे।।
थे योगी परोपकारी, वैदिक मर्यादा भूल गए।
अब सभी दु:खी हैं भारी, वैदिक मर्यादा भूल गए।।५।।
युवक-युवतियाँ कावड़ लेने, हरिद्वार को जाते हैं।
मात-पिता भूखे रोते हैं, भारी कष्ट उठाते हैं।।
अज्ञानी पापाचारी, वैदिक मर्यादा भूल गए।
अब सभी दु:खी हैं भारी, वैदिक मर्यादा भूल गए।।६।।
मद्य मांस का सेवन करना, महापाप है सुनो सभी।
वेद शास्त्र दर्शाते हैं अब, अमृत विष को चुनो सभी।।
अब मर्जी सुनो तुम्हारी, वैदिक मर्यादा भूल गए।
अब सभी दु:खी हैं भारी, वैदिक मर्यादा भूल गए।।७।।
'नन्दलाल निर्भय' सब जागो, वैदिक धर्मी बन जाओ।
जीवन सफल बनाओ अपना, व्यर्थ नहीं धक्के खाओ।।
इसमें है भलाई सारी, वैदिक मर्यादा भूल गए।
अब सभी दु:खी हैं भारी, वैदिक मर्यादा भूल गए।।८।।

-आर्य सदन बहीन, जनपद पलवल, हरियाणा

वैदिक पुस्तकालय अजमेर
द्वारा प्रकाशित नये संस्करण

१. महर्षि दयानन्द का पत्र-व्यवहार (२ भाग में)

मूल्य - रु. ८००/- पृष्ठ संख्या - प्रथम व द्वितीय भाग-६९६+६९६

ऐतिहासिक महत्त्व का ग्रन्थ है। इस संस्करण की यह विशेषता है कि पत्र और उसका उत्तर साथ-साथ दिये गए हैं। आर्य जाति और आर्यावर्त्त के उत्त्थान की महती आकांक्षा ऋषिवर के पत्रों में स्पष्ट झलकती है। माननीय डॉ. वेदपाल जी द्वारा सम्पादित यह ग्रन्थ पठनीय एवं संग्रहणीय है। साज-सज्जा और मुद्रण भी उत्तम है। समाप्त होने से पहले- पहले क्रय कर लेवें तो अच्छा रहेगा।

२. 'नवयुग की आहट',महर्षि दयानन्द सरस्वती का जीवन-चरितः

मूल्य - रु. ६०/- पृष्ठ संख्या- १९२

१०० से अधिक उपशीर्षकों एवं १३ अध्यायों में लिखा गया ऋषि का यह अनुपम जीवन चरित है। लेखक हैं- ऋषि मिशन के दीवाने, आर्यजाति के प्रहरी, दिल जले आर्य साहित्यकार प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु। पुस्तक में आप जान पायेंगे कि ऋषि का पाखण्ड-खण्डन, सामाजिक दोषों के निराकरण, स्त्री-शिक्षा, अछूतोद्धार, वेदोद्धार, सामाजिक पुनर्जागरण, राष्ट्र-उद्धार के क्षेत्र में क्या योगदान है तथा उनके समकालीन और परवर्ती महापुरुष उनके विषय में क्या कहते हैं।

३. इतिहास की साक्षीः लेखक- प्रा. राजेन्द्र जिज्ञास

मूल्य - रु. ५०/- पृष्ठ संख्या - ९६

९६ पृष्ठों की इस पुस्तक में विद्वान् लेखक ने महर्षि दयानन्द सरस्वती एवं पं. श्रद्धाराम फिल्लौरी के सम्बन्ध में तथ्यात्मक जानकारी दी है। श्रद्धाराम फिल्लौरी के हाथ के लिखे पत्र की एवं अन्य ऐतिहासिक दस्तावेजों की फोटो कापियाँ इसमें दी हैं, जो अन्यथा दुर्लभ हैं।

४. आत्म कथा- महर्षि दयानन्द सरस्वती

मूल्य - रु. १५/- पृष्ठ संख्या - ४८

५. जिज्ञासा-विमर्श लेखक-आचार्य सोमदेव

मूल्य - रु. १००/- पृष्ठ संख्या - २५८

आध्यात्मिक क्षेत्र में सूक्ष्म दार्शनिक सिद्धान्तों के सम्बन्ध में उठने वाले प्रश्नों का शास्त्रीय एवं तर्क-सम्मत समाधान इस ग्रन्थ में किया गया है। आत्मा, परमात्मा, मोक्ष आदि विषयों से सम्बन्धित प्रश्न बहुत जटिल होते हैं। विद्वान् लेखक ने अपने विस्तृत स्वाध्याय एवं ऊहा के बल पर ऐसे सभी प्रकरणों में सम्यक् समाधान प्रस्तुत किया है। पुस्तक पठनीय एवं संग्रहणीय है। कालान्तर में सन्दर्भ हेतु काम आने वाला ग्रन्थ सिद्ध होगी, क्योंकि अधिकांश समाधान महर्षि कृत ग्रन्थों, वेदों एवं वेदानुकूल आर्ष ग्रन्थों के आधार पर किये गए हैं। वैदिक सिद्धान्तों की पुष्टि की दृष्टि से भी यह एक उपयोगी पुस्तक है।

पुस्तक परिचय

पुस्तक का नाम - ऋषि दयानन्द की प्रारम्भिक जीवनी
लेखक - दयाल मुनि आर्य
सम्पादक - भावेश मेरजा
प्रकाशक - डॉ. राजेन्द्र विद्यालंकार, सत्यार्थ प्रकाश न्यास, १४२५१, सै. १३, अर्बन एस्टेट, कुरुक्षेत्र, हरि.१३६११८
पृष्ठ - १६८ मूल्य - निःशुल्क

महर्षि दयानन्द के जीवन चरित्र के ऊपर अनेक ऋषि भक्तों ने कार्य किया उनमें मुख्य रूप से धर्मवीर पं. लेखराम, बाबु श्री देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय, स्वामी सत्यानन्द जी व उर्दू के जीवनी लेखक पं. लक्ष्मण आर्योपदेशक आदि। **इन श्रद्धालु महानुभावों ने अपना अमूल्य समय व धन लगा कर जहाँ-जहाँ ऋषिवर गये वहाँ-वहाँ पहुँचकर ऋषि जीवन की एक-एक घटना को एकत्र करने का पुण्य कार्य किया। जिनके इस पुण्य कार्य के कारण आज हम महर्षि** दयानन्द के जीवन से परिचित अपने को अनुभव करते हैं।

महर्षि की मान्यता रही है कि जो भी इतिहास रूप में लिखा जाये वह सत्य के आधार पर ही लिखा जाये। महर्षि ने अपने जीवन के विषय में जो बताया वा लिखा वह तो प्रामाणिक है ही तथा महर्षि के देहपात होने के कुछ काल बाद जो ऋषि के श्रद्धालुओं ने परिश्रम करके ऋषि जीवन को लिखा वह भी प्रामाणिक है। महर्षि दयानन्द जी की स्वयं इस बात के पक्षधर थे कि उनके विषय में जो लिखा जाये वह इतिहास सत्य ही लिखा जाये। यह बात महर्षि के एक ऐतिहासकि पत्र से ज्ञात होती है। इस पत्र को यहाँ ज्यों का त्यों लिखते हैं-

पण्डित गोपालराव हरि जी, आनन्दित रहो।

आज एक साधु का पत्र मेरे पास आया। वह आपके पास भेजता हूँ। साधु का लेख सत्य है, परन्तु आपने चित्तौड़ सम्बन्धी इतिहास न जाने कहाँ सुन सुना कर लिख दिया। उस काल उस स्थान में मेरा उदयपुराधीश से केवल तीन ही बार समागम हुआ। आपने प्रतिदिन दो बार होता रहा लिखा है। आप जानते हैं कि मुझे ऐसे कामों के परिशोधन का अवकाश नहीं। यद्यपि आप सत्य-प्रिय और शुद्ध भाव-भावित ही हैं और इसी हित-चित्त से उपकारक काम कर रहे हैं, परन्तु जब आपको मेरा इतिहास ठीक-ठीक विदित नहीं तो उसके लिखने में कभी साहस मत करो। क्योंकि थोड़ा-सा भी असत्य हो जाने से सम्पूर्ण निर्दोष कृत्य बिगड़ जाता है। ऐसा निश्चय रक्खो। और इस पत्र का उत्तर शीघ्र भेजो।

वैशाख शुक्ल २ सम्वत् १९३९ / स्थान शाहपुरा
दयानन्द सरस्वती

इस पत्र में महर्षि ने विशेष निर्देश किया है कि जो भी उनके विषय में लिखा जाये वह सत्य से युक्त हो। महर्षि के जीवन काल में 'दयानन्द दिग्विजपार्क' नामक जीवनी महाराष्ट्र के एक सज्जन पं. गोपालराव हरि प्रणतांकर जी ने **लिखी थी। उनको यह पत्र महर्षि ने लिखा था।**

प्रायः महर्षि के प्रारम्भिक जीवन के विषय में सभी लेखकों का स्पष्ट मत नहीं आता दिख रहा है, जन्म स्थान माता-पिता का नाम आदि विषयों पर कुछ भ्रम-सा रहा है। उस भ्रम को दूर करने के लिए ऋषि भक्त, चारों वेदों को गुजराती भाषा में अनुवाद करने का श्रेय प्राप्त करने वाले, अनेकों आयुर्वेद के विशाल ग्रन्थों के गुजराती अनुवादक, आयुर्वेदाचार्य, आयुर्वेद चूड़ामणि, डी.लिट्. (आयुर्वेद) उपाधियुक्त, सरल स्वभाव के धनी, टंकारा निवासी श्रीमान् दयाल मुनि आर्य जीने श्रीमान् डॉ. रामप्रकाश जी (कुरुक्षेत्र) कुलाधिपति गुरुकुल कांगड़ी के निवेदन पर महर्षि दयानन्द जी के प्रारम्भिक जीवन का परिश्रम करके अन्वेषण किया, उस अन्वेषण को ''ऋषि दयानन्द की प्रारम्भिक जीवनी'' नाम से पुस्तकाकार दे दिया है। जिस पुस्तक का सम्पादन ऋषि इतिहास व आर्य समाज के इतिहास में रूचि रखने वाले श्रीमान् भावेश मेरजा जी ने किया है।

पुस्तक में पाठकों को ऋषि के आरम्भिक जीवन का परिचय कराने के लिए बारह विषय दिये गये हैं। १. जन्म स्थान विषयक भ्रम निवारण, २. ऋषि के भ्रातृवंश सम्बन्धी भ्रम का निराकरण, ३. ऋषि के वंश-वृक्ष की प्राप्ति के प्रयत्न, ४. टंकारा के जीवापुर मुहल्ले से सम्बन्धित तथ्य, ५.शिवरात्रि का उपासना मन्दिर, ६. ऋषि के स्व वंश

सम्बन्धी तथ्य तथा एतद् विषयक भ्रम का निवारण, ७. ऋषि की माता का नाम क्या था, ८. ऋषि के भाई-बहन व चाचा के नामों के विषय में भ्रम निवारण, ९. ऋषि के महाभिनिष्क्रमण के सम्बन्ध में भ्रम निवारण, १०. ऋषि के महाभिनिष्क्रमण के बाद दूसरी रात्रि का निवास-स्थान कौन-सा था? ११. लाला भक्त (भगत) योगी नहीं थे, १२. डॉ. जॉर्डन्स की बात का निराकरण। और इस पुस्तक के परिशिष्ट में बड़ी महत्त्वपूर्ण जानकारियाँ सात विषयों को लेकर हैं। ऋषि जीवन प्रेमियों के लिए यह पुस्तक अति महत्त्व रखने वाली है।

लेखक ने प्राक्कथन में अपनी पीड़ा रखी-"मैं ऐसा समझता हूँ कि ऋषि जीवनी के शोध कार्य में पण्डित लेखराम और पण्डित देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय के पश्चात् यदि किसी सुयोग्य व्यक्ति ने इस दिशा में शीघ्र ही शोध कार्य को आगे बढ़ाया होता तो उस समय बहुत कुछ बातें सुलभ होतीं, परन्तु ऐसा हो नहीं पाया और इस कार्य की उपेक्षा के परिणामस्वरूप आज भी हमें ऋषि जीवन विषयक कई छोटे-बड़े भ्रम एवं विवादों का निराकरण करने के लिए प्रवृत्त होना पड़ता है।"

लेखक के विषय में डॉ. रामप्रकाश जी बड़े विश्वास पूर्वक पुस्तक के निवेदन में लिखते हैं- "वर्तमान में टंकारा निवासी वयोवृद्ध दयाल मुनि एक मात्र ऐसे व्यक्ति हैं, जिन्हें महर्षि के प्रारम्भिक जीवनी के विषय में सर्वाधिक सही जानकारी है। उन्होंने यह जानकारी वर्षों की सतत साधना से प्राप्त की है।"

ऋषि जीवन के प्रारम्भिक विषयों के लिए यह पुस्तक समस्त ऋषि प्रेमी, भक्तों को आनन्द देने वाली होगी व जो भी महर्षि जीवनी पर शोध करने वाले हैं उनके लिए अत्यधिक महत्त्वपूर्ण सिद्ध होगी। सुन्दर आवरण,छपाई व कागज से युक्त इस पुस्तक का प्रकाशन आर्य जगत् के युवा विद्वान् डॉ. राजेन्द्र विद्यालंकार जी ने करवाया है। इस पुस्तक को पाठक प्राप्त कर लेखक के शोध कार्य के दर्शन करेंगे।

- आचार्य सोमदेव

ऋषि मेला २०१६ हेतु स्टॉल आवंटन

प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष ऋषि मेला ४,५,६ नवम्बर शुक्र, शनि, रविवार २०१६ को ऋषि उद्यान में आयोजित होगा। उसमें आर्य जगत् का साहित्य, हवन सामग्री, अन्यान्य सामग्री की स्टॉलें लगती हैं। प्रति स्टॉल किराया १००० रु. निर्धारित है। जिसकी राशि पहले जमा होगी उस क्रम से स्टॉलों का आवंटन होगा। जिन महानुभावों को जितनी स्टॉलों की आवश्यकता है, उसी अनुरूप राशि बैंक ड्राफ्ट द्वारा या नकद जमा करावें।

स्टॉल सुविधाः- कारपेट, दो टेबल, दो कुर्सी, २ ट्यूब लाईट प्रति स्टॉल। **स्टॉल साइज-** ७.५×१५ फीट।

ध्यातव्यः - १. स्टॉल में रखी टेबल, कुर्सी आदि पूर्व निर्धारित सामग्री को इधर-उधर या अन्य स्टॉल में न बदलें। २. अतिरिक्त सामग्री की आवश्यकता हो तो टेन्ट हाउस के कर्मचारी से सम्पर्क कर प्राप्त करें तथा निर्धारित राशि तुरन्त भुगतान करें। ३. बिस्तर रजाई, चादर, तकिया को टेन्ट हाउस कर्मचारी से प्राप्त कर निर्धारित राशि जमा करा दें। ४. स्टॉल व्यवस्थापक से स्टॉल संख्या, राशि की रसीद दिखाकर प्राप्त करें। बिना पूर्व अनुमति के स्टॉलों में सामान न रखें, न अधिकृत करें। ५. आपके सक्रिय सहयोग व अनुशासन की अपेक्षा है। अनियमितता को स्थान न देवें। ६. अपना मोबाइल (चलभाष) नवम्बर देना अति आवश्यक है। ७. आप अपना स्थाई पता अवश्य देवें। ८. स्टॉल में आप पुस्तकें/दवाईयाँ/अन्य सामग्री का उल्लेख अवश्य करें। ९. स्टॉल आवंटन हेतु अग्रिम राशि जमा करावें, अन्यथा विचार सम्भव नहीं होगा। १०. एक पासपोर्ट फोटो भिजवावें, जो परिचय पत्र के साथ अंकित हो। उसमें स्टॉल आवंटन संख्या भी अंकित किया जाएगा। ११. स्टॉल आवंटन की सूचना निर्धारित अवधि में दी जायेगी।

दयानन्द धर्मार्थ चिकित्सालय

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित ऋषि उद्यान में पिछले लगभग तीन वर्ष से आयुर्वेदिक चिकित्सालय चल रहा है। चिकित्सालय में उपलब्ध सभी औषधियाँ नि:शुल्क दी जाती हैं। ऋषि उद्यान में रह रहे डॉ. रमेश मुनि जी चिकित्सक के रूप में इस चिकित्सालय का कुशलतापूर्वक कार्यभार सम्भाल रहे हैं।

दानी महानुभावों से सहयोग की भी अपेक्षा है।

१. बैंक का नाम- **भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।**

बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या- **10158172715**

IFSC-SBIN0007959

२. बैंक का नाम- **आई.डी.बी.आइ**, पावर हाऊस के सामने, जयपुर रोड़, अजमेर।

बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या- **091104000057530**

IFSC-IBKL0000091

email : psabhaa@gmail.com

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, अजमेर

आस्था भजन (चैनल) पर आर्य विद्वानों के प्रवचन

स्वामी रामदेव जी जन-जन के कल्याण को ध्यान में रखते हुए वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए 'आस्था-भजन' चैनल पर प्रतिदिन सायं ७ से ९ बजे तक दो घण्टे के बीच वैदिक विद्वानों के प्रवचनों को प्रसारित करवा रहे हैं।

इस कार्य में परोपकारिणी सभा द्वारा भी महत्त्वपूर्ण योगदान दिया जा रहा है। परोपकारिणी सभा द्वारा प्रवचनों की आपूर्ति के लिए ऋषि उद्यान में रिकॉर्डिंग-यूनिट चल रही है और लगातार नित नये प्रवचनों की रिकॉर्डिंग की जा रही है। परोपकारिणी सभा ये प्रवचन आस्था-भजन (चैनल) को प्रदान कर रही है।

इन दिनों 'आस्था-भजन' (चैनल) पर प्रतिदिन सायं ७ से ७.२० बजे तक **आचार्य धर्मवीर** के वेद-प्रवचन, ७.३० से ७.५० तक **स्वामी विष्वङ्** के योगदर्शन प्रवचन, ८.३० से ८.५० तक **आचार्य सत्यजित्** के प्रवचन प्रसारित हो रहे हैं। इसी प्रकार आगे भी 'आस्था-भजन' पर प्रतिदिन सायं ७ से ९ बजे के बीच अन्य विद्वानों के व अन्य विषयों पर प्रवचन प्रसारित होते रहेंगे।

धर्मप्रेमी जन इन प्रवचनों का अधिकाधिक लाभ उठाएँ और अन्यों को भी अधिकाधिक सूचित करें।

'आस्था-भजन' (चैनल) डिश-टी.वी. और डी.टी.एच. पर उपलब्ध है, किन्तु टाटा-स्काई, वीडियोकोन, बिग-टी.वी. आदि पर नहीं आ रहा है। जिनके पास ये नहीं आ रहा है, वे अपने प्रसारक (सर्विस प्रोवाइडर) को बार-बार कह कर प्रेरित करते रहें, जिससे कि ये भी आस्था भजन को प्रसारित करने लगें। ऐसा करके वैदिक-धर्म के प्रचार-प्रसार में आप भी सहयोग प्रदान कर सकते हैं। जो केबल से देखते हैं, वे भी अपने केबल ऑपरेटर को कह कर आस्था भजन आरम्भ करवा सकते हैं।

फलित-योग

- डॉ. सत्यप्रकाश

(प्रसिद्ध वैज्ञानिक, उच्चकोटि के आर्य विद्वान्, लेखक ओर वक्ता श्री स्वामी डॉ. सत्यप्रकाश जी सरस्वती की पुस्तक 'योग सिद्धान्त और साधना' से यह लेख पाठकों के अवलोकनार्थ प्रस्तुत किया गया है। - **सम्पादक**)

महर्षि पतञ्जलि का योगदर्शन हमारे षड्-दर्शनों में एक विशेष स्थान रखता है। भारतीय तत्त्वज्ञान के ये दर्शन उपांग कहलाते हैं, साधारण भाषा में इन्हें शास्त्र भी कह सकते हैं। इन सभी दर्शनों में विषयों का विवेचन सूत्रों के माध्यम से हुआ है, अत: इन्हें सूत्र-ग्रन्थ भी कहा जाता है। योगशास्त्र, योगदर्शन और योगसूत्र शब्दों का जैसे ही हम प्रयोग करते हैं, हमारा ध्यान महर्षि पतञ्जलि के योग-सूत्रों की ओर जाता है।

भारतीय तत्त्वज्ञान के ६ सूत्र ग्रन्थों को (उपांगों को) तीन कोटियों में भी बहुधा वर्गीकृत किया जाता है- (१) सांख्य और योग, (२) न्याय और वैशेषिक, (३) पूर्वमीमांसा और उत्तर मीमांसा। उत्तर मीमांसा का नाम वेदान्त दर्शन भी है। इन्हें कभी-कभी शारीरिक सूत्र भी कहते हैं, क्योंकि शरीर के भीतर व्यापक या स्थित पुरुष या आत्मा इसकी विवेचना का विषय है। इस महान् आत्मा का नाम ब्रह्म भी है, अत: उत्तर मीमांसा नामक सूत्र-ग्रन्थ वेदान्त दर्शन, शारीरिक सूत्र और ब्रह्म सूत्र नामों से भी विख्यात है। पतञ्जलि महामुनि के योग दर्शन का जो पाठ हमें आज उपलब्ध है, उसमें चार पाद हैं-समाधिपाद (सूत्र संख्या ५१) साधनपाद (सूत्र संख्या ५५), विभूतिपाद (सूत्र संख्या ५५) और कैवल्य पाद (सूत्र संख्या ३४)। समस्त योगदर्शन में इस प्रकार ५१+५५+५५+३४ अर्थात् १९५ सूत्र हैं। महर्षि पतञ्जलि के योग दर्शन पर व्यासमुनि रचित एक प्रामाणिक और प्राचीन भाष्य भी मिलता है, जिस पर कई टीकायें और वृत्तियाँ भी हैं।

हमारे लिए यह कहना कठिन है, कि पतञ्जलि योगदर्शन जिस रूप में हमें आज मिलता है, वह उसका मूलरूप भी था, या उसमें किसी समय कुछ परिवर्तन भी हुए। प्राचीन हस्तलिखित प्रतियों से इस विषय पर कोई विश्वसनीय प्रकाश नहीं पड़ता। मेरी अपनी धारणा यह है कि इसके विभूतिपाद में जो विवरण है, वह कालान्तर में बाद को जोड़ा गया है। योगदर्शन को फलित बनाने के लिए और लोकप्रचलित करने के उद्देश्य से इस प्रकार के सूत्रों का किसी ने योगदर्शन में अपमिश्रण किया।

योग के आठ अंगों का उल्लेख साधनपाद में इस प्रकार है-

यमनियमासनप्राणायामप्रत्याहार-
धारणाध्यानसमाधयोऽष्टावंगानि।

- योग २।२९

योग के आठ अंग हैं-यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि। समाधि योग का अन्तिम/चरम अंग है, फिर भी योगदर्शन का प्रथम पाद समाधिपाद नाम से विख्यात है। योग के तीसरे पाद (विभूतिपाद) में धारणा, ध्यान और समाधि का उल्लेख किया गया और साधनपाद में अष्टांग योग के प्रथम पाँच अंग ही लिए गए-यम-नियम-आसन-प्राणायाम और प्रत्याहार। शेष तीन अंग धारणा-ध्यान और समाधि (संयमत्रिक) विभूतिपाद के लिए छोड़े गए-क्यों? यह कुछ अस्वाभाविक-सा लगता है। धारणा विषय का अच्छा खासा उल्लेख योगदर्शन के प्रथम पाद (समाधिपाद) में भी आ जाता है। इस प्रकार कतिपय विषमतायें अध्येता को कठिनाई में डाल देती हैं। विभूतिपाद के प्रथम पन्द्रह सूत्रों की क्रमबद्धता स्वीकार की जा सकती है पर सोलहवें सूत्र से फलित-योग आरम्भ हो जाता है, जो काल्पनिक ही नहीं, मिथ्या भी है-

परिणामत्रयसंयमादतीताऽनागतज्ञानम् - (३।१६)

परिणाम-त्रय के संयम से भूत और भविष्यत् (अतीत और अनागत) का ज्ञान होने लगता है।

इसी प्रकार सूत्र १७ में एक फल इंगित है-

शब्दार्थप्रत्ययानामितरतेराध्यासात्
संकरस्तत्प्रविभागसंयमात्सर्वभूतरुतज्ञानम्।

- (३।१७)

शब्द, अर्थ और प्रत्यय इनमें परस्पर अध्यास हो जाया करता है, तीनों में मिलावट या संकरता आ जाती है। संयम करने से तीनों अलग-अलग स्पष्ट होने लगेंगे, और तब साधक सभी प्राणियों की बोलियों को स्पष्ट समझने लगेगा।

अभिप्राय यह है कि योगी संयम-सिद्धि के अनन्तर ऐसी प्रतिभा प्राप्त कर लेगा कि पशुओं, पक्षियों, कीट-पतंगों की बोलियों को समझ सकेगा। हमारे प्राचीन भाषा शास्त्रियों ने शब्द-अर्थ और प्रत्यय के सहज स्वाभाविक सम्बन्ध की यथार्थता पर विशेष बल दिया है। यदि यह स्वाभाविक सम्बन्ध पता चल जाय, तो हम किसी भी प्राणी की बोली को समझ सकते हैं। मैं इसे केवल फलित-योग कहूँगा, जो फलित ज्योतिष के समान अयथार्थ और अविश्वसनीय है।

फलित योग की गप्पों का क्रम आगे के सूत्र में भी स्पष्ट है-

संस्कारसाक्षात्करणात्पूर्वजातिज्ञानम्।(३।१८)

संस्कारों के साक्षात्करण से (अर्थात् उनमें संयम करने से) योगी को अपने पूर्व-जन्मों की बातों का ज्ञान होने लगता है।

फलित योग का क्रम आगे बढ़ता है-

प्रत्ययस्य परचित्तज्ञानम्।(३।१९)

प्रत्यय पर संयम करने से दूसरे के चित्त में क्या विचार उठ रहे हैं, इसका योगी को ज्ञान हो जाता है।

इसी प्रकार की अविश्वसनीय बातें विभूतिपाद के लगभग अन्तिम सूत्रों तक गयी हैं-योगी का अन्तर्धान हो जाना (२१) मृत्यु के समय का पहले से ही आभास हो जाना (२२) मैत्र्यादि पर संयम करने से अभूतपूर्व बल की उपलब्धि (२३) शरीर में हाथी और बलवान् पशुओं का बल आ जाना (२४) सूक्ष्म, छिपी हुई और दूरस्थ वस्तुओं का ज्ञान हो जाना (२५) सूर्य में संयम करने से सब लोकों का ज्ञान हो जाना (२६) चन्द्र में संयम करने से ताराव्यूह (तारों की स्थिति और गति) का ज्ञान हो जाना (२७) ध्रुव तारे में संयम करने से सप्तर्षि तारों की गति का ज्ञान हो जाना (२८) नाभिचक्र में संयम करने से काया-तंत्र का ज्ञान हो जाना (२९) कण्ठकूप में संयम करने से भूख-प्यास की निवृत्ति (३०) कूर्मनाड़ी में संयम करने से शरीर की स्थिरता की सिद्धि (३१) मूर्धज्योति में संयम करने से सिद्ध-पुरुषों के दर्शन (३२) इत्यादि अनेक फलित बातें कही हैं और दूसरे के शरीर में प्रवेश करने की बात भी कही है (३८)।

जिस किसी व्यक्ति ने (व्यष्टि या समष्टि ने) योग के इस फलित रूप का प्रचार किया, उसने योग के रहस्य को नहीं समझा और योग-तत्त्वज्ञान को बदनाम ही किया। योग कोई चमत्कार या सिद्धि का शास्त्र नहीं है। योगी ईश्वर का प्रतिद्वन्द्वी भी नहीं है, योगी जीवन के रहस्य को समझता है। योग मानव की अन्तर्निहित प्रतिभा को प्रस्फुटित करना चाहता है, पर ये प्रतिभायें शरीर को छोटा कर लेना (अणिमा) या महाकाय कर लेना नहीं है। योगी शरीर को भूमि से उठाकर अधर में प्राकृतिक नियमों के प्रतिकूल लटका नहीं सकता, योगी अपने शरीर को छोड़कर बाहर भी निकल नहीं सकता, बाहर निकल जाने पर अपने शरीर में पुन: प्रविष्ट होने की बात करना (किसी मृत शरीर में या जीव से प्रतिष्ठित शरीर में) नितान्त मूर्खता है। परमात्मा का दिया हुआ यह शरीर केवल तुम्हारे लिए है, इसे तुम किसी को उधार नहीं दे सकते। तुमको इसमें से निकालकर कोई भी व्यक्ति बाहर कर सकता है, पर तुम्हारे निकल जाने पर कोई अन्य इसमें प्रवेश करके बस नहीं सकता। इस अर्थ में हममें से प्रत्येक का शरीर अयोध्या-पुरी है, अर्थात् कोई भी विजेता इस शरीर में आकर बस नहीं सकता। एक बार तुम इसमें से निकले (अर्थात् तुम्हारी यदि मृत्यु हुई), तुम इसमें वापस नहीं आ सकते। तुम्हारा अगला जन्म नये शरीर में ही होगा।

फलित योग की एक छोटी-सी झलक आपको यम-नियमों के सम्बन्ध में भी मिलेगी। यह पाँच हैं-अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह। अहिंसा महाव्रत के पालन करने से वैर-त्याग होता है।

अहिंसाप्रतिष्ठायां तत्संन्निधौ वैरत्यागः (२।३५)

अर्थात् जो पूर्णरूप से अहिंसक है, उससे हिंसक पशु भी वैरभाव त्याग देते हैं, यह बात तो समझ में आती है।

किन्तु

सत्यप्रतिष्ठायां क्रियाफलाश्रयत्वम् (२। ३६)

सत्य की पूर्ण प्रतिष्ठा होने पर योगी कर्मों के फल का दाता बन जाता है (या जिसकी वह कामना करता है, वह उसे प्राप्त हो जाता है) यह बात पूरी तरह संगत नहीं होती- ''क्रिया फलाश्रयत्व'' क्या है, और सत्य-महाव्रत से इसका क्या सम्बन्ध है, यह निश्चयपूर्वक कहना कठिन है। सत्यनिष्ठ व्यक्ति का वचन पूरा होकर ही रहेगा, यह तथ्य कुछ सीमा के भीतर ही स्वीकारा जा सकता है। सत्यनिष्ठ होना और बात है और प्रतिज्ञाओं का पूरा होना दूसरी बात है।

अस्तेय (चोरी न करना, अपहरण न करना, जो अपने पुरुषार्थ से मिला है, उसी को पर्याप्त समझना) की परम-प्रतिष्ठा से क्या होता है? सूत्रकार का इस सम्बन्ध में वचन है-

अस्तेयप्रतिष्ठायां सर्वरत्नोपस्थानम् (२। ३७)

अर्थात् जो अस्तेय का महाव्रती है, उसे सब रत्न सहज सुलभ हो जाते हैं। इस सूत्र में फलित योग की हलकी-सी झलक है। अस्तेय-प्रतिज्ञ व्यक्ति को दूसरे के धन की आकांक्षा नहीं होती, उसे धन का अभाव नहीं खटकता, वह परमपुरुषार्थी और अर्जित सम्पत्ति में ही सन्तुष्ट रहने वाला व्यक्ति है और वह पुरुषार्थ से प्राप्त धन का सदा सर्वलोक हिताय व्यय करता है। उसका कोई जनसेवी कार्य धन के अभाव में अपूर्ण नहीं होता, ऐसे उदार व्यक्ति में अर्थ शुचिता होती है, वह अपने स्वार्थ के लिए या अपनी संस्था के लिए धन की हेरा-फेरी नहीं करता, यह सब तो समझा जा सकता है, किन्तु यदि ''सर्व रत्नोपस्थानम्'' शब्दों के तद्रूप अर्थ किए जायें तो कोई बात बनती प्रतीत नहीं होती। इसीलिए मैंने कहा कि इस सूत्र के शाब्दिक अर्थ लिए जायँ, तो इसकी आड़ में धोखा देने का व्यवसाय प्रारम्भ हो सकता है। फलित ज्योतिष के समान फलित-योग भी भयावह है।

अपरिग्रह के सम्बन्ध में जो फलित वार्ता जोड़ी गयी है, वह भयावह ही नहीं असंगत भी है-

अपरिग्रहस्थैर्ये जन्मकथन्तासंबोधः (२। ३९)

अर्थात् जिसने अपरिग्रह महाव्रत का पूर्णतया पालन किया है, उस योगी को यह ज्ञान हो जाता है कि उसके पिछले जन्म कहाँ और कैसे थे। इसको मैं फलितयोग की श्रेणी में डालना चाहूँगा। इस भावना का आश्रय पाकर यमों का दृढ़व्रती संसार को छलने लगेगा। पूर्व जन्मों की कथा को न कोई जानता है, न जान सकता है, और न जानने से कोई लाभ ही है। अपरिग्रह का यमों की सूची में बहुत उच्च स्थान है, इसका अपना निजी महत्त्व है, किन्तु पिछले जन्मों की कथाओं से इसका कोई सम्बन्ध नहीं है।

यमों के समान पाँच नियमों के सम्बन्ध में योग सूत्रों में कुछ बहुत अच्छी बातें कही गयी हैं।

(१) शौच-नियम के पालन से अपने शरीरांगों में जुगुप्सा (हल्की-सी घृणा, नफरत या उपेक्षा) और दूसरों के स्पर्श में अरुचि की बात कही गयी है। योगी को दूसरों के संस्पर्श से उत्पन्न काम-रति से विरक्त बताया गया है-

शौचात्स्वांगजुगुप्सापरैरसंसर्गः (२। ४०)

इससे अगला जो सूत्र है वह और भी अधिक स्पष्ट और सर्वथा उपयुक्त है-

सत्त्वशुद्धिसौमनस्यैकाग्र्येन्द्रियजयात्मदर्शनयोग्यत्वानि च - (२। ४१)

अर्थात् शौच-नियम के व्रती की बुद्धि (सत्त्व) शुद्ध हो जाती है, उसमें सौमनस्य की भावना सबके प्रति उत्पन्न होती है, (अथवा उसके विचार सुस्पष्ट, संशय-हीन हो जाते हैं), चित्त की एकाग्रता प्राप्त होती है, उसे इन्द्रियों की लिप्सा पर विजय प्राप्त होती है, और उसमें आत्मदर्शन की पात्रता उत्पन्न होती है।

(सन्तोषादनुत्तमः सुखलाभः २। ४२)

सन्तोष से अनुत्तम या सर्वोत्कृष्ट सुख की प्राप्ति होती है।

इसमें सन्देह नहीं। तप से अशुद्धियों का क्षय हो जाता है, जिसके परिणामस्वरूप शरीर और शरीर की इन्द्रियों को पूर्णता प्राप्त होती है।

कायेन्द्रियसिद्धिरशुद्धिक्षयात् तपसः (२। ४३)

स्वाध्याय-नियम के सफल अभ्यास से इष्टदेवता के साथ मिलन हो जाता है, अथवा इष्ट देवता और योगी के बीच में जो पार्थक्य है, वह दूर हो जाता है।

स्वाध्यायादिइष्टदेवतासम्प्रयोगः (२। ४४)

शेष भाग पृष्ठ संख्या ३३ पर....

संस्था - समाचार

१६ से ३१ अगस्त २०१६

यज्ञ एवं प्रवचन- जैसा कि विदित है, ऋषि उद्यान आर्य जगत् के उन स्थलों में से है, जहाँ पूरे वर्ष प्रतिदिन दोनों समय यज्ञ का अनुष्ठान अपरिहार्य रूप से किया जाता है। प्रातःकाल यज्ञोपरान्त वेद के कुछ मन्त्रों का पाठ तथा महर्षि दयानन्द कृत वेदभाष्य का स्वाध्याय किया जाता है और तदनन्तर वेद प्रवचन होता है। रविवार प्रातःकाल विशेष यज्ञ किया जाता है, जिसमें नगर निवासी आर्य सज्जन, माताएँ, बहनें और बच्चे सम्मिलित होते हैं तथा अपनी-अपनी आहुतियाँ प्रदान करते हैं। अतिथि यज्ञ के होता के रूप में दान देने वाले यजमान यदि ऋषि उद्यान में उपस्थित होते हैं तो उनके जन्मदिवस, वैवाहिक वर्षगांठ, सम्बन्धियों की पुण्यतिथि एवं अन्य अवसरों से सम्बन्धित विशेष मन्त्रों से आहूतियाँ भी दिलवायी जाती हैं। सायंकाल प्रतिदिन यज्ञ और महर्षि दयानन्द जी द्वारा पूना में दिये गये प्रवचन 'उपदेश मञ्जरी' का पाठ एवं चर्चा होती है। शनिवार सायंकाल वानप्रस्थी साधक-साधिकाओं द्वारा प्रवचन होता है। प्रत्येक रविवार को प्रातःकाल के प्रवचन में समसामयिक, सामाजिक, राष्ट्रीय घटनाक्रमों पर व्याख्यान होता है। रविवार सायंकाल गुरुकुल के ब्रह्मचारियों का भजन, प्रवचन होता है। यहाँ पर व्याकरण, दर्शन, रचना-अनुवाद कौमुदी की कक्षायें निरन्तर चलती रहती हैं, जिसमें गुरुकुल के ब्रह्मचारियों के साथ-साथ आश्रमवासी संन्यासी, वानप्रस्थी, महिलायें और बाहर से आने वाले जिज्ञासु ज्ञान अर्जित करते रहते हैं।

प्रातःकालीन सत्र में **डॉ. धर्मवीर जी** ने कहा कि आर्यसमाज के सत्संग में बहुत भीड़ नहीं आती है क्योंकि आर्यसमाज के उपदेश-प्रवचन बुद्धि के अनुकूल और तर्कसंगत होते हैं। जन सामान्य को चमत्कार प्रभावित करता है। जिन साधु, संतो, गुरुओं के कार्यक्रमों, मन्दिरों में लाखों की भीड़ इकट्ठा होती है और जो पुराने मत-सम्प्रदाय के कार्यक्रम हैं, उनमें से चमत्कार को हटा दें तो उन कार्यक्रम-स्थलों में भीड़ होना बंद हो जाये। भीड़ इकट्ठा होने का मुख्य कारण है-धूर्त लोगों के द्वारा चमत्कार, प्रलोभन, बहकाना, मूर्ख बनाना, ठगी, अन्धविश्वास, रूढ़िवाद, रोग-निवारण की कामना, प्रतिष्ठा मिलना, मनोरंजन होना, भीड़भाड़ में दुकानदारी, प्रत्यक्ष आर्थिक लाभ की सम्भावना होना- जैसे-व्यापार व्यवसाय में विशेष वृद्धि, लॉटरी खुलना आदि। किन्तु ऐसे चमत्कार आदि से चलने वाली विचारधारा अधिक समय नहीं चल पाती। सांई बाबा, सत्य सांई बाबा, आशाराम आदि के कार्यक्रम इसी कोटि के थे। कोई भी बुद्धिवादी, बुद्धजीवी इस प्रकार के कार्यक्रमों में थोड़ी देर भी नहीं रुकता। आर्यसमाज के कार्यक्रमों में इस प्रकार के चमत्कार आदि नहीं दिखाये जाते इसलिये अधिक लोग नहीं आते। स्वामी दयानन्द जी ने कभी कोई चमत्कार नहीं दिखाया। उनके पीछे जो लोग चले, वे सत्य को जानने-मानने के इच्छुक थे, जो कि बुद्धजीवी थे। चाहे वे पढ़े-लिखे थे या अनपढ़ थे। ऋषि दयानन्द जी विशुद्ध बौद्धिकता के कारण सफल रहे। उन्होंने जो भी कहा वह तर्कसंगत और बुद्धिगम्य था। वैदिक विचारधारा से अध्यापक, चिन्तक, लेखक, विद्वान्, दार्शनिक और कई नेता प्रभावित हुए। विचारशील लोग समाज में बहुत कम होते हैं। समाज के लोगों की सोच, भाषा और क्षेत्र अलग-अलग है, इसलिये भी सभी लोग एक ही विचारधारा के नहीं हो सकते। उपदेश-शिक्षा निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है, क्योंकि संसार के सभी मनुष्य अनपढ़ पैदा होते हैं। किसी परिवार के एक सदस्य को पढ़ाने से बाकी सब शिक्षित नहीं हो सकते। इसलिये सबको पढ़ना-पढ़ाना आवश्यक है। ऋषि दयानन्द की परम्परा को उन्हीं के बताये अनुसार बौद्धिकता से ही आगे बढ़ाया जा सकता है।

ऋग्वेद के चौथे मण्डल के सोलहवें सूक्त के उन्नीसवें मन्त्र की व्याख्या करते हुए **आचार्य सत्यजित् जी** ने कहा कि इसमें राजा के व्यवहारों की चर्चा है। जो राजा धार्मिक, शरीर और आत्मा के बल से युक्त धनयुक्त पुरुषों के साथ

दृढ़ मेल करके शत्रुओं को जीत कर राज्य की प्रशंसा करते हैं वे सूर्य के प्रकाश के समान कीर्तियुक्त और धनी होके सब काल में आनन्द को प्राप्त होते हैं। बिना धन के राज्य नहीं चल सकता। विदुरनीति, चाणक्यनीति आदि ग्रन्थों में भी कहा गया है कि बिना धन के राजा राज्य का संचालन नहीं कर सकता। जो धनवान पुरुष हों वे धार्मिक भी हों। जो धनवान हों और धार्मिक न हो तो राजा उनके साथ मेल करके पीड़ित हो सकता है। धनवान व्यक्ति धार्मिक होने के साथ ही शरीर और आत्मा से बलवान होना चाहिये। कमजोर व्यक्ति का मन और आत्मा भी कमजोर होता है। दुर्बल या रोगी धनवान को कोई दुष्ट, डाकू, लुटेरे डरा धमका कर सारा धन छीन सकते हैं, प्राण हानि कर सकते हैं। ऐसे धनवानों से शत्रुओं को जीता नहीं जा सकता। राष्ट्र पालन के लिये योजनाओं की पूर्ति हेतु राजा को धन उन्हीं धनवानों से लेकर कार्य करना चाहिये जो किसी शत्रु के बहकावे में न आयें। धनवान व्यक्ति सत्य की कामना वाला होना चाहिये। जो धनवान अपने स्वार्थ की सिद्धि के लिये राजा को धन आदि से सहयोग करता है, उससे राज्य की हानि होती है। ऐसे लोग राजा को अपने वश में करके अपने अनुकूल बनाकर राज्य की सब नीतियाँ अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिये ही बनवाते हैं। वर्तमान में हमारे देश के बड़े-बड़े उद्योगपति और धनवान लोग राजनीतिक दलों को करोड़ों/अरबों रुपये चुनाव के लिये चन्दा देकर सब योजनायें और नीतियाँ अपने ही लाभ के लिये बनवाते हैं। जनता को नाममात्र उन योजनाओं का लाभ मिल पाता है। समाज और राष्ट्र की बहुत हानि हो रही है। न केवल भारत बल्कि विश्व के अन्य देशों-अमेरिका आदि में भी धनवानों के संगठन शासन व्यवस्था को अपने अनुकूल संचालित करवाते हैं। जो धनवान राजा को आर्थिक सहयोग दे, वह अपने राज्य का ही निवासी हो। दूसरे देश के धनवान लोगों से धन लेकर राज्य संचालन करने से शासन विदेशियों के हाथ में जाने की प्रबल संभावना बनी रहती है। क्योंकि विदेशी व्यक्ति अपने देश के हित में सहयोग करेगा, तब हमारा देश संकट में पड़ जायेगा। विदेशी भाषा, चाल-चलन, रहन-सहन, पहनावा, खान-पान को बढ़ावा देने से अपने देश की संस्कृति नष्ट हो रही है। धन को देख के हर आदमी के मन में लालच आ जाता है। जिससे धन लेते हैं, उसकी इच्छाओं का पूरा निरादर करना संभव नहीं होता। विदेशी व्यक्ति और उसका धन हमारे देश की सब प्रजा के दुख का कारण बन जाता है।

प्रात:कालीन प्रवचन के क्रम में **श्री सत्येन्द्र सिंह जी आर्य** ने बताया कि संसार के जड़, चेतन पदार्थों में चेतन श्रेष्ठ है। चेतन प्राणियों में बुद्धि वाले प्राणी श्रेष्ठ हैं। बुद्धि वाले प्राणियों में मनुष्य सर्वश्रेष्ठ है। क्योंकि नैमित्तिक ज्ञान से मनुष्य के गुणों में बहुत वृद्धि हो जाती है, लेकिन पशुओं में इस प्रकार का सामर्थ्य नाममात्र होता है। मनुष्यों में श्रेष्ठता का मूल कारण गुणों से सम्पन्न होना है। मनुष्यों में द्विज श्रेष्ठ हैं अर्थात् जो विद्या पढ़ लेता है वह अज्ञानी मनुष्यों से श्रेष्ठ होता है। वैदिक संस्कृति में १६ संस्कार मनुष्य जीवन को अत्यन्त उत्तम बनाने के लिये आवश्यक हैं। द्विजों में ब्राह्मण श्रेष्ठ है। ब्राह्मण का जीवन एक वृक्ष के समान है। इस वृक्ष का मूल संध्या-उपासना है। अर्थात् जैसे जड़ सूख जाने से वृक्ष सूखने लगता है, वैसे ही जो ब्राह्मण संध्या नहीं करता, उसका ब्राह्मणत्व नष्ट होने लगता है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना सब आर्यों अर्थात् श्रेष्ठ मनुष्यों का परम धर्म है। इस वृक्ष की शाखा वेद है। जैसे बिना शाखा के वृक्ष ठूठ हो जाता है, शोभायमान नहीं होता वैसे ही वेद अर्थात् विद्या का निरन्तर अभ्यास नहीं करने से समाज में ब्राह्मण की श्रेष्ठता, गरिमा, महत्त्व कम हो जाता है। धर्मकार्य-अग्निहोत्र आदि कर्मकाण्ड एवं सदाचार आदि इस वृक्ष के पत्ते हैं, जो ब्राह्मण के साथ-साथ अन्य सब मनुष्यों के जीवन को सुन्दर बनाते हैं। जो सीखा हुआ उत्तम व्यवहार है उसको संस्कार कहते हैं। कई मनुष्यों के सामूहिक संस्कारों को संस्कृति कहते हैं। वैदिक संस्कृति में वर्ण व्यवस्था अत्यन्त बुद्धिपूर्वक है। अज्ञानजन्य दु:खों से रक्षा करने वाला ब्राह्मण है। अन्याय के कारण होने वाले दु:खों से रक्षा करने वाला क्षत्रिय है। अन्न, धन आदि की कमी से होने वाले कष्टों से वैश्य रक्षा करता है। जो सेवा करके सुख देते हैं वे शूद्र हैं। ईश्वर की सत्ता को समझना और उसकी उपासना करना मनुष्यों के लिये ही संभव है,

पशुओं के लिये नहीं।

रविवारीय प्रात: कालीन सत्र में समसामयिक चर्चा करते हुए आपने कहा कि आर्यसमाज का वर्चस्व आज भी है। अन्य विचारधारा के लोग भी आर्यसमाज का लोहा मानते हैं। महर्षि दयानन्द जी ने सत्यज्ञान के प्रकाश के लिये अपने समय में संसार के सभी वेदविरोधियों को शास्त्रार्थ के लिये चुनौती दी। आज भी मुस्लिम और ईसाई मत के दक्ष प्रचारक आर्यसमाज के विद्वानों से शास्त्रार्थ करने से कतराते हैं, डरते हैं। जब भी उन्हें शास्त्रार्थ के लिये ललकारा जाता है, किसी न किसी बहाने पीछा छुड़ा लेते हैं। हिन्दू समाज के पौराणिक विद्वान् सायण, उव्वट, महीधर, रावण के वेदभाष्य पढ़ते रहते हैं, किन्तु विधर्मियों से शास्त्रार्थ करना हो तो महर्षि दयानन्द कृत वेदभाष्य का और आर्यसमाज के विद्वानों का सहारा लेते हैं। भारत में जाति के आधार पर अनेक संगठन हैं और विश्व में मत-मतान्तरों के कई संगठन हैं। किन्तु कोई भी संसार के कल्याण की बात नहीं कहता। महर्षि दयानन्द जी आर्यसमाज के माध्यम से केवल भारत का ही नहीं बल्कि पूरे विश्व का कल्याण करना चाहते थे। वेद के आधार पर आर्यसमाज के दस नियम लिखे। छठे नियम में उन्होंने लिखा है-संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है- अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना। आत्मा को शुभ गुणों से सम्पन्न करके तत्परतापूर्वक कर्मशील होकर श्रेष्ठ कार्यों को करें। अदानशीलता आदि दोषों को छोड़े, तभी संसार आर्य बनेगा। सन् १९३८-३९ में हैदराबाद आन्दोलन, सन् १९५७ में पंजाब में हिन्दी सत्याग्रह, सन् १९६७ में गौरक्षा आन्दोलन आर्यसमाज के वर्चस्व का प्रमाण है।

कर्णवेध, उपनयन एवं वेदारम्भ संस्कार सम्पन्न-१७ अगस्त बुधवार को ऋषि उद्यान में संचालित महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल के सभी ब्रह्मचारियों का कर्णवेध संस्कार सम्पन्न हुआ। आचार्य सत्यजित् जी के निर्देशन में श्री सत्यनारायण सोनी जी ने सभी ब्रह्मचारियों का कर्णछेदन किया। स्वामी मुक्तानन्द जी ने बताया कि आयुर्वेद के ग्रन्थ सुश्रुत के अनुसार कर्णवेध संस्कार से आंत्र वृद्धि रोग नहीं होता है। दूसरे दिन १८ अगस्त गुरुवार को श्रावणी उपाकर्म के अवसर पर उपनयन एवं वेदारम्भ संस्कार हुआ। उपाचार्य सत्येन्द्र जी ने ब्रह्मचारियों का संस्कार किया। ब्र. दिलीप जी एवं ब्र. शिवनाथ जी ने मन्त्रपाठ किया। श्री नन्दकिशोर काबरा जी ने भी अपना सहयोग प्रदान किया। स्वामी मुक्तानन्द जी ने संस्कारों का महत्व बताते हुए कहा कि मानव जीवन में संस्कारों का बहुत महत्व है। उन्होंने मनुष्यमात्र को पढ़ने का अधिकार दिया। यदि वेद पढ़ने का अधिकार नहीं देते तो विद्या प्राप्ति की इच्छा होते हुए भी हम पढ़ नहीं पाते। जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त १६ संस्कार होते हैं। इन संस्कारों के द्वारा अनेक शारीरिक रोगों से रक्षा और पवित्रता होती है तथा बुद्धि का विशेष विकास होता है, मनुष्य धार्मिक और बलवान बनता है। इस अवसर पर गुरुकुल के आचार्यगण, वानप्रस्थी साधक-साधिकाओं एवं बाहर से आये सभी सज्जनों ने ब्रह्मचारियों को आशीर्वाद प्रदान किया।

कृष्ण जन्माष्टमी सम्पन्न-२५ अगस्त गुरुवार को प्रात:काल विशेष यज्ञ किया गया। **आचार्य सत्यजित् जी** ने कहा कि श्रीकृष्ण जी क्षत्रिय कुल में उत्पन्न हुए, वे क्षत्रिय सामर्थ्य युक्त एक आध्यात्मिक योगी महापुरुष थे। उन्होंने देश की रक्षा के लिये, राष्ट्र को संगठित करने के लिये, श्रेष्ठों को आगे बढ़ाने के लिये अपने जीवन में सदैव प्रयत्न किया। धर्मयुद्ध के लिये किया गया उनका उपदेश गीता के नाम से प्रसिद्ध है। वे युद्ध के समय में विशेष प्रकार से उपदेश देने वाले थे। एक उपदेश होता है सामान्य अवस्था में और एक उपदेश होता है युद्ध की अवस्था में। जहाँ जीवन मरण का प्रश्न रहता है, राज्य में जय पराजय, बहुत बड़े परिवर्तन की स्थिति होती है। थोड़ा भी विचलित हुए तो बहुत बड़ा परिवर्तन हो सकता है। जिस तरह से उन्होंने उपदेश दिया, मानसिक रूप से निराश हो चुके, युद्ध छोड़ने के तैयार अर्जुन को पुन: युद्ध के लिये तैयार किया। दुष्टों का नाश युद्ध में हुआ। इतिहास में अनुपम उदाहरण के रूप में श्रीकृष्ण जी एक अद्वितीय महापुरुष थे। वे बड़े ओजस्वी, तेजस्वी, दुष्टों पर क्रोध करने वाले, धार्मिक पुरुषों का सत्कार करने वाले थे। वैदिक धर्म और

संस्कृति उनके जीवन में पूर्ण रूप से समाहित थी। महर्षि दयानन्द जी ने कृष्ण की प्रशंसा करते हुए सत्यार्थ प्रकाश में लिखा है कि उनका गुण, कर्म, स्वभाव और चरित्र आप्त पुरुषों के समान था। उन्होंने अपने पूरे जीवन में कभी कोई बुरा काम नहीं किया। उनके सम्बन्ध में प्रचलित रासलीला, माखन चोरी आदि कथायें पूर्णत: कपोल कल्पित हैं। भागवत पुराण में जो उनके विषय में अनुचित बातें लिखी है, उनका स्वामी दयानन्द जी ने तर्क और प्रमाण से प्रबल खण्डन किया। पुराणों की झूठी कथा के कारण अन्य मतवाले उनकी बहुत निन्दा करते हैं।

प्रात:कालीन प्रवचन में **आचार्य कर्मवीर जी** ने कहा कि संसार के सभी जीवात्मा चाहे किसी भी शरीर में हो उन सबकी स्वाभाविक इच्छा सुख प्राप्ति की ही रहती है। पुण्य तथा शुभ कर्मों का फल सुख है। पाप का फल दुख है। जिस क्रिया के फल से अधिक लोगों को लाभ हो, वह पुण्य है। जिस कार्य से अधिक से अधिक मनुष्यों की हानि होती है, वह पाप कर्म है। वेद शास्त्रों का ज्ञान प्राप्त करके शुभ कर्म करें, जिससे सब को सुख होवे। इतिहास में हम उन महापुरुषों के जीवन का अध्ययन करते हैं जिससे हमें शिक्षा प्राप्त होती है। हमारा वर्तमान सुधरता है और भविष्य सुरक्षित होता है। भूतकाल की उन्हीं घटनाओं, शिक्षाओं का अनुसरण करना चाहिये जो सुखदायक हैं। वैदिक वाङ्मय में इतिहास के दो ग्रन्थों की बहुत मान्यता है-१. रामायण और २. महाभारत। दोनों में एक-एक नायक हैं और उनके जीवन की महत्त्वपूर्ण घटनाएँ। रामायण में मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी का जीवन चरित्र है और महाभारत में योगीराज श्री कृष्ण जी का। दोनों का जीवन बहुत उच्च आदर्शों का जीवन्त उदाहरण है। श्रीकृष्ण जी बड़े धैर्यवान्, साहसी और चतुर थे। उनके जीवन में अनेक कठिनाइयाँ आईं, लेकिन उन्होंने कभी हिम्मत नहीं हारी। धैर्य नहीं छोड़ा। वे अपने लक्ष्य से पीछे नहीं हटे। महाभारत युद्ध में पाण्डवों को जितवाना उनकी बुद्धिमत्ता और युद्ध कौशल का प्रमाण है। महाराज युधिष्ठिर को राजसूय यज्ञ करके चक्रवर्ती सम्राट बनाने में भी श्रीकृष्ण जी का सबसे बड़ा योगदान रहा। अत्याचारी बलवान जरासन्ध जैसे दुष्ट, पापी राजा को मारकर छोटे-छोटे राजाओं को उनके कारागार से मुक्त कराना उन्हीं की वीरता के कारण सम्भव हो सका। वे एक महापुरुष थे। वे एक शूरवीर योद्धा और ऋषि-महर्षियों के सेवक थे। आर्य समाज के मंच से हम सबको उनके सच्चे जीवन-चरित्र का प्रचार करना चाहिये।

शनिवार सायंकालीन सत्र में **श्री नन्द किशोर काबरा जी** ने कविता पाठ किया। रविवारीय प्रात: कालीन सत्र में **ब्र. देवेन्द्र जी** ने स्वरचित देशभक्ति गीत सुनाया। रविवार सायंकालीन सत्र में **ब्र. प्रशान्त जी** ने कहा कि वर्तमान में हमारा देश कथनमात्र को स्वतन्त्र है, वास्तव में पराधीन ही है। प्रतिवर्ष १५ अगस्त को स्वतन्त्रता दिवस मनाया जाता है, किन्तु यह अज्ञानता है। शारीरिक, मानसिक रूप से हम आज भी ब्रिटेन के गुलाम हैं। अंग्रेजी भाषा का वर्चस्व, पाश्चात्य वेशभूषा, खानपान, चालचलन आदि गुलामी के कारण ही हैं।

विशिष्ट व्यक्तित्व-गुरुवार २५ अगस्त कृष्ण जन्माष्टमी को ऋषि उद्यान में साधनारत वानप्रस्थी श्री व्रतमुनि जी का ८० वाँ जन्मदिन मनाया गया। इसी दिन श्री देवमुनि जी का ७७ वाँ जन्मदिन मनाया गया। ३१ अगस्त गुरुवार को वानप्रस्थी श्री ब्रह्ममुनि जी का जन्मदिन मनाया गया। सभी आश्रमवासी इन तीनों साधकों के स्वस्थ जीवन एवं आध्यात्मिक उन्नति की कामना करते हैं।

*** डॉ. धर्मवीर जी का प्रचार कार्यक्रम:-**

सम्पन्न कार्यक्रम:- (क) १९-२२ अगस्त २०१६: जनकपुरी ब्लॉक-सी, दिल्ली में वेद कथा।

(ख) २२-२८ अगस्त २०१६: आर्यसमाज कालकाजी, दिल्ली में वेद कथा।

(ग) ०१-०६ सितम्बर २०१६: आर्यसमाज बैंगलोर।

आगामी कार्यक्रम:- (क) २२-२५ सितम्बर २०१६: आर्यसमाज नेपियर टाऊन, जबलपुर।

(ख) २७ सितम्बर से ०३ अक्टूबर २०१६: आर्यसमाज पिलखुआ।

*** आचार्य सोमदेव जी का प्रचार कार्यक्रम:-**

सम्पन्न कार्यक्रम:- (क) १४-१८ अगस्त २०१६: आर्यसमाज गोंडा, उ.प्र. में प्रवचन।

(ख) २१-२५ अगस्त २०१६: वेद मन्दिर कानपुर में वेद प्रचार कार्यक्रम।

(ग) २७-३० अगस्त २०१६: आर्यसमाज टंकोर, झुँझनू, राज. के वार्षिकोत्सव पर सामवेद पारायण यज्ञ।

(घ) ०३-०६ सितम्बर २०१६: आर्य समाज गोमाना (छोटी सादड़ी) में यज्ञ-प्रवचन।

(ङ) ०९-१५ सितम्बर २०१६: श्री रामकुमार जी मानधना, मुम्बई में पारिवारिक कार्यक्रम।

आगामी कार्यक्रम:-

(च) १८-१९ सितम्बर २०१६: आर्यसमाज सहारनपुर में सम्मेलन।

(छ) २८-३० सितम्बर २०१६: आर्यसमाज चन्देना सहारनपुर का वार्षिकोत्सव।

*** आचार्य कर्मवीर जी का प्रचार कार्यक्रम:-**

सम्पन्न कार्यक्रम:- (क) आर्यसमाज डबरा, ग्वालियर (म.प्र.) २०-२४ अगस्त २०१६:-

आर्यसमाज डबरा द्वारा सुबह ५:३०-७:०० तक योग शिविर तथा सायं ५:३०-७:३० वेद व्याख्यान, स्थान-तिवारी विवाह स्थल।

२१ अगस्त- स्कार्पियो पब्लिक स्कूल में यज्ञ एवं विद्यार्थियों के शारीरिक व मानसिक विकास के लिये उद्‌बोधन।

२२ अगस्त- आई.पी.एस. पब्लिक स्कूल में 'सत्यमेव जयते' का महत्त्व पर प्रकाश तथा जीवन में सत्य के लाभ।

२३ अगस्त- संत कंवर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में ब्रह्मचर्य से जीवन का सर्वांगीण विकास पर उद्‌बोधन।

२४ अगस्त- सेंट्रल अकादमी स्कूल में यज्ञ एवं समस्त अध्यापक तथा अध्यापिकाओं के लिये ईश्वर के स्वरूप विषय पर चर्चा।

(ख) ११-१३ सितम्बर २०१६: आर्यसमाज नागल, सहारनपुर का वार्षिकोत्सव।

आगामी कार्यक्रम:-

(क) १८-१९ सितम्बर २०१६: आर्यसमाज कुकावी, सहारनपुर का वार्षिकोत्सव।

पृष्ठ संख्या २८ का शेष भाग....

कदाचित् इसका अभिप्राय है कि जिस-जिस विषय का स्वाध्याय किया जायेगा, उसमें अभिन्न रुचि उत्पन्न होगी, उस विषय के साथ एकात्म्य की स्थापना होगी. योगी का अध्ययन किया गया विषय समझा सा बन जायगा। स्वाध्याय शब्द के दो-तीन अर्थ हैं-(१) वेदादि वाङ्मय का अर्थ सहित अध्ययन, (२) ओंकार या प्रणव का अर्थ भावना के अर्थात् पूर्ण निष्ठा और स्नेह के साथ कीर-वत् (तोते की तरह) नहीं, भावों को समझते हुए जप। एक तीसरा भी अर्थ है, स्वयं अपने का मूल्यांकन-हमारा उत्थान हो रहा है या पतन; हमारी विद्या, हमारी चरित्र सम्बन्धी नैतिकता और उनसे उपलब्ध आनन्द की राशि हममें बढ़ रही है या कम हो रही है इसकी स्पष्ट प्रतीति होते रहना भी स्वाध्याय है अर्थात् स्व का अध्ययन या मूल्यांकन।

अन्तिम नियम-प्रणिधान है-समस्त प्यार और स्नेहपूर्वक ईश्वर के प्रति अपना समर्पण, एकमात्र उसके आलम्बन या अवलम्ब में रहना-

एतदालम्बनं श्रेष्ठम्, एतदालम्बनं परम्
एतदालम्बनं ज्ञात्वा ब्रह्मलोके महीयते।

-(कठ. १। २। १७)

समाधिसिद्धिरीश्वरप्रणिधानात्। २। ४५

इसके परम अनुष्ठान से समाधि सुगम और सहज हो जाती है।

पाँचों यम और पाँचों नियमों के अनुष्ठान से क्या-क्या उपलब्धियाँ होती हैं,उनका संक्षेप में वर्णन यहाँ इस स्थल पर हमने कर दिया। कुछ यमों के सम्बन्ध में फलित-योग का आभास-सा प्रतीत होता है, जो विषय की अनुरूपता के अनुकूल नहीं प्रतीत होता। इनकी अनुकूलता समझने में सम्भवतया क्लिष्ट भाष्य की सहायता लेनी पड़ेगी।

विभूतिपाद में फलित योग अवश्य है और उन सूत्रों की उपादेयता और विश्वसनीयता सदा सन्दिग्ध रहेगी। योगी और योग के जिज्ञासु से मेरा आग्रह है, कि उनसे बच कर रहे और उनको स्वीकार करने का हठाग्रह न करे। योग के इन फलित चमत्कारों ने योग विद्या को निन्दित किया है।

अतिथि यज्ञ के होता बनें

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा आर्य जगत् की एक मात्र ऐसी संस्था है जो सामूहिक सहयोग से ऋषि द्वारा निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति हेतु कृत संकल्प है।

सभा निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। निरंतर अबाध गति से ऋषि उद्यान को आकर्षक एवं जन उपयोगी बनाने हेतु नव निर्माण करा रही है, वेद प्रचार पूरे देश में संचालित कर रही है, वेदों का एवं ऋषि ग्रंथों का प्रकाशन निरंतर जारी है।

प्रात: एवं सायं दैनिक यज्ञ– प्रवचन, वेद–पाठ, उपनिषद्, दर्शनादि शास्त्रों की कथा द्वारा वैदिक धर्म का कार्य नियमित रूप से आश्रम में चलता है। ***गुरुकुल***– आर्ष पद्धति से संचालित गुरुकुल में पढ़ रहे ब्रह्मचारी जो साधना एवं समाज सुधार का लक्ष्य लेकर अध्ययनरत हैं उनकी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति नि:शुल्क की जाती है। ***अतिथि सेवा***– अतिथियों को यथोचित सुविधा प्रदान करने हेतु सभा पूर्ण रूपेण प्रयासरत है एवं सभी सुविधाएँ आवास, प्रातराश, भोजन की व्यवस्था नि:शुल्क की जाती है। ***गोशाला***– गोशाला में चालीस के लगभग पशु हैं। इससे अधिक का स्थान नहीं है। आश्रमवासियों को गोशाला में उत्पादित दुग्ध का नि:शुल्क वितरण किया जाता है। ***वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम***– वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम में रहकर साधनारत वानप्रस्थियों एवं संन्यासियों की सभी प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति सभा द्वारा नि:शुल्क की जाती है। स्वाध्याय एवं साधना की व्यवस्था है। ***विशाल पुस्तकालय***– इसमें दुर्लभ ग्रंथों का संग्रह है, सभा द्वारा शोध कर्ता छात्रों को शोध कार्य हेतु ग्रंथ नि:शुल्क प्रदान किए जाते हैं जिनका लाभ स्वाध्यायशील व्यक्ति भी उठा सकते हैं। ***व्यायामशाला***– योग्य शिक्षक द्वारा नगर के युवाओं को ऋषि उद्यान में नि:शुल्क व्यायाम प्रशिक्षण दिया जाता है। सभा द्वारा नियुक्त व्यायाम शिक्षक आसपास के गांवों से भी आर्यवीर दल का प्रशिक्षण शिविरों में प्रदान करते हैं।

ये सभी क्रियाकलाप आपके पावन उदार सहयोग से ही संभव हैं। जैसा कि सर्वविदित है कि सभा का आधार ही आकाशीय दानवृत्ति है। आपको प्रतिदिन अतिथि मिलना संभव नहीं फिर अतिथि यज्ञ कैसे किया जाय इसका उपाय है, कुछ राशि प्रतिदिन अतिथि यज्ञ के नाम से निकाल ली जाये और उसको एकत्र कर अतिथि सत्कार में गुरुकुल में भोजन आदि के सहयोग में दे दी जाय।

सभा के धार्मिक क्रियाकलापों एवं आवासीय स्थल ऋषि उद्यान में उपर्युत पावन क्रियाकलाप लम्बे समय तक अबाध चलते रहें इसके लिए सभा की योजना है कि प्रतिदिन १० रुपये अथवा प्रतिवर्ष ५ हजार की राशि प्रदान करने वाले उदार यशस्वी दानदाताओं का नाम अतिथि यज्ञ के स्थायी सदस्यों में अंकित किया जाता है ऐसे सज्जनों के नाम का परोपकारी में प्रकाशन भी किया जाता है।

अनेक 'अतिथि यज्ञ के होता' सदस्यों का आग्रह है, निश्चित तिथि जन्मदिन, विवाह वर्ष गांठ या विशेष अवसर पर वे अपनी ओर से संस्था में भोजन कराना चाहते हैं। ऐसे महानुभावों से निवेदन है कि वे अतिथि यज्ञ के होता के रूप में एक दिन के भोजन व्यय की राशि पाँच हजार एक सौ रुपये भेजते हुए इच्छित दिन का विवरण सूचित करेंगे तो उसका उल्लेख आश्रम के सूचना पट्ट पर किया जा सकेगा।

यह अल्प राशि आप दैनिक संचय घट में जमा भी कर सकते हैं, वर्ष में लोग अरबों रुपए आग में पटाके फोड़कर जलाते हैं असावधानी से बिजली जलती छोड़ इसे गंवा देते हैं आदि ऐसी छोटी–छोटी असावधानियों को रोक कर हम उसकी बचत राशि इस पावन कृत्य हेतु सभा को वर्ष में आसानी से दे सकते हैं।

सभा शिविरों के आयोजन द्वारा जन सामान्य को ऋषियों की जीवन प्रणाली सिखा रही है। आप इस योजना में स्थायी सदस्य बनकर ऋषि का संकल्प *संसार का उपकार* की पूर्ति में एक स्तम्भ बनकर सभा को सम्बल प्रदान कर सकते हैं।

यदि अपने सामर्थ्य के अनुसार राशि को न्यूनाधिक करना चाहें तो आपकी स्वतन्त्रता है अधिक से अधिक लोग परोपकारिणी सभा से जुड़ सकें, आप ऐसा करके ऋषि दयानन्द के कार्यों को आगे बढ़ाने में सहायक होंगे इसलिए ऐसी राशि निश्चित की है। आप से प्रार्थना है अपना नाम पता और संकल्प लिखकर अवगत करायें और अतिथि यज्ञ के होता बनें। अपनी राशि प्रतिमाह अथवा सुविधानुसार मनीआर्डर/डीडी/चैक द्वारा अथवा स्वयं उपस्थिति होकर कार्यालय में जमा करा सकते हैं। आपका दान ८०जी (आयकर की धारा) के अंतर्गत कर मुक्त होगा।

अत: आपसे निवेदन है कि आप भी अतिथि यज्ञ के होता बनिये। जिन महानुभावों ने हमारा निवेदन स्वीकार कर यज्ञ में अपनी आहुति दी है, उनके नाम यहाँ प्रकाशित किये जा रहे हैं।

अतिथि यज्ञ के होता

(१६ से ३१ अगस्त २०१६ तक)

१. श्री सुभाषचन्द चन्द्रा, नई दिल्ली २. श्री विकास, सहारनपुर, उ.प्र. ३. श्री मुकेश रावत, सोनीपत, हरि. ४. श्री रजनीश कपूर, नई दिल्ली ५. श्रीमती उर्मिला/जयदेव अवस्थी, जोधपुर, राज. ६. श्री नवकान्त शर्मा, ग्वालीयर, म.प्र. ७. माता उर्मिला राजोत्या, अजमेर।

- परोपकारिणी सभा, अजमेर।

गौभक्तों से निवेदन

ऋषि उद्यान में परमार्थ हेतु गौशाला संचालित है। गौशाला में उत्पादित गौवों के दूध का वितरण सभी गुरुकुलवासियों, संन्यासियों एवं आगन्तुक अतिथियों में नि:शुल्क किया जाता है। आप सभी गौ-भक्तों एवं उदारमना दानदाताओं से सभा का निवेदन है कि गौवों को उत्तम चारा मिले, इसके लिए जो भी सज्जन चारा दान देना चाहें, उनका स्वागत है। यदि आप दूरस्थ प्रदेश के हैं तो कृपया चारे हेतु अनुमानित राशि सभा को ड्राफ्ट/चैक/नगद भेज सकते हैं। यशस्वी दानदाताओं के नाम परोपकारी पत्रिका में प्रकाशित किए जाएँगे। आपका दान गौवों के संवर्धन में सहायक होगा।

ऋषि उद्यान में संचालित गौशाला के दानदाता

(१६ से ३१ अगस्त २०१६ तक)

१. माता निर्मला कुलश्रेष्ठ, अलीगढ़, उ.प्र. २. श्री विकास, सहारनपुर, उ.प्र. ३. श्रीमती मधुबाला शर्मा, भीलवाड़ा, राज. ४. श्रीमती प्रेमलता कौशिक, भीलवाड़ा, राज. ५. माता उर्मिला राजोत्या, अजमेर ६. श्री ब्रजभूषण गुप्ता, हरि.।

- परोपकारिणी सभा, अजमेर।

अतिथि यज्ञ के होताओं से अनुरोध

अतिथि यज्ञ के होताओं से उनकी वैवाहिक वर्षगांठ अथवा जन्मदिन व विभिन्न अवसरों पर ५१०० रु. प्रतिवर्ष सभा को प्राप्त होते रहते हैं। जो महानुभाव संकल्प के साथ इस पुनीत कार्य से जुड़े हुए हैं, उनसे हमारा अनुरोध है कि वे अपनी राशि भेजते समय जन्म तिथि/वैवाहिक वर्षगांठ आदि व दूरभाष संख्या सूचित करना न भूलें। साथ ही यह भी अवश्य सूचित करा देवें कि पहले से भिजवा रहे हैं अथवा नया शुरू किया है। आप अपनी राशि सभा के बैंक खाते में नगद अथवा चैक द्वारा जमा करा सकते हैं।

आगामी ऋषि मेला

४, ५, ६ नवम्बर २०१६, शुक्र, शनि, रविवार

को ऋषि उद्यान में होगा

जब तक मनुष्य सुख-दु:ख, हानि और लाभ की व्यवस्था में परस्पर अपने आत्मा के तुल्य दूसरे को न जानते तब तक पूर्ण सुख को प्राप्त नहीं होते, इस से मनुष्य लोग श्रेष्ठ व्यवहार ही किया करें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ५.४०

कुर्बानी कुरान के विरुद्ध?

(इस्लाम के मतावलम्बी कुर्बानी करने के लिए प्राय: बड़े आग्रही एवं उत्साही बने रहते हैं। इसके लिए उनका दावा रहता है कि पशु की कुर्बानी करना उनका धार्मिक कर्त्तव्य है और इसके लिए उनकी धर्मपुस्तक कुरान शरीफ में आदेश है। हम श्री एस.पी. शुक्ला, विद्वान् मुंसिफ मजिस्ट्रेट लखनऊ द्वारा दिया गया एक फैसला पाठकों के लाभार्थ यहाँ दे रहे हैं, जिसमें यह कहा गया है कि ''गाय, बैल, भैंस आदि जानवरों की कुर्बानी धार्मिक दृष्टि से अनिवार्य नहीं।'' इस पूरे वाद का विवरण पुस्तिका के रूप में वर्ष १९८३ में नगर आर्य समाज, गंगा प्रसाद रोड (रकाबगंज) लखनऊ द्वारा प्रकाशित किया गया था। विद्वान् मुंसिफ मजिस्ट्रेट द्वारा घोषित निर्णय सार्वजनिक महत्त्व का है-एक तर्कपूर्ण मीमांसा, एक विधि विशेषज्ञ द्वारा की गयी विवेचना से सभी को अवगत होना चाहिए-एतदर्थ इस निर्णय का ज्यों का त्यों प्रकाशन बिना किसी टिप्पणी के आपके अवलोकनार्थ प्रस्तुत है। -**सम्पादक**)

न्यायालय श्रीमान् षष्ट्म अतिरिक्त मुन्सिफ मजिस्ट्रेट, लखनऊ

उपस्थित:- श्री एस.पी. शुक्ल, पी.सी.एस. (जे)

मूलवाद संख्या-२९२/७९

संस्थित दिनांक ३० अक्टूबर १९७९

१. श्री रामआसरे ग्राम प्रधान आयु लगभग ५५ वर्ष पुत्र बिन्दा प्रसाद।

२. श्री सुदधालाल आयु लगभग ५० वर्ष पुत्र श्री उधो लाल।

३. श्री मदारू आयु लगभग ५२ वर्ष पुत्र श्री भिलई।

४. श्री राम भरोसे आयु लगभग ५० वर्ष पुत्र सरजू प्रसाद।

५. श्री काली चरन आयु लगभग ४० वर्ष पुत्र श्री परमेश्वरदीन।

६. श्री राम रतन आयु लगभग ५१ वर्ष पुत्र श्री अयोध्या।

७. श्री ब्रज मोहन आयु लगभग ३६ वर्ष पुत्र श्री गुर प्रसाद।

८. श्री मुन्ना लाल आयु लगभग ३२ वर्ष श्री मैकू।

९. श्री बसुदेव आयु लगभग ५६ वर्ष पुत्र श्री ललइ।

निवासी ग्राम सहिलामऊ, परगना व तहसील मलिहाबाद जिला लखनऊ

वादीगण

बनाम

१. श्री शमशाद हुसैन आयु लगभग ३६ वर्ष पुत्र श्री शाकिर अली।

२. श्री फारुख आयु लगभग ३२ वर्ष पुत्र श्री अन्वार अली।

३. श्री मोहम्मद जान आयु लगभग ४५ वर्ष पुत्र श्री नवाब अली।

४. श्री यूसुफ आयु लगभग ३२ वर्ष पुत्र श्री मोहम्मद जान।

५. श्री अतहर अली आयु लगभग ४० वर्ष पुत्र श्री अब्बास।

६. श्री अब्बास आयु ६० वर्ष पुत्र श्री मुराद इलाही।

७. श्री सैयद अली आयु लगभग ७० वर्ष पुत्र श्री इलाही।

८. उत्तरप्रदेश राज्य द्वारा डिप्टी कमिश्नर, लखनऊ।

९. श्री योगेन्द्र नारायन जी डिप्टी कमिश्नर, लखनऊ।

१०. श्री परगना अधिकारी महोदय, मलिहाबाद, लखनऊ।

११. सर्किल आफिसर, पुलिस सर्किल मलिहाबाद, लखनऊ।

१२. इन्चार्ज पुलिस थाना मलिहाबाद, लखनऊ।

निवासी १ ता ७ तक निवासी ग्राम सहिलामऊ थाना, परगना व तहसील मलिहाबाद, जिला लखनऊ।

प्रतिवादीगण

वाद स्थाई व्यादेश

नकल निर्णय

वर्तमान वाद वादी ने प्रतिवादीगण द्वारा की जाने वाली कुर्बानी को प्रतिबन्धित करने के लिए दायर किया है। एन.पी. वादीगण के कथनानुसार वादीगण ग्राम-सहिलामऊ, परगना-मलिहाबाद जिला-लखनऊ के स्थाई

निवासी हैं। उक्त ग्राम में कभी भी ईद-बकरीद के अवसर पर मुसलमानों द्वारा गाय-भैंसों की कुर्बानी नहीं दी जाती रही है, परन्तु कुछ मुसलमानों ने हिन्दुओं की भावना को कष्ट पहुँचाने के लिए तथा साम्प्रदायिक तनाव बढ़ाने के लिए और दंगाफसाद करने की नियत से दिनांक १-११-७९ को भैंसों की कुर्बानी करनी चाही और इसके लिए इन लोगों ने रविवार को वादीगण को बुलाकर आपस में भैंसों की कुर्बानी के बाबत बात-चीत की, तब उन्हें वादीगण ने समझाया कि इस गाँव में कभी भी भैंसों की कुर्बानी नहीं हुई और उन्हें ऐसा कोई कार्य नहीं करना चाहिए जिससे परस्पर वैमनस्य और विद्वेष की भावना बढ़े। इस पर प्रतिवादीगण ने बताया कि उन्होंने प्रतिवादी नं. १०,११ व १२ से कुर्बानी करने की अनुमति ले ली है और प्रतिवादी नं.-१ के स्थान पर कुर्बानी अवश्य करेंगे। प्रतिवादी गण नं. १ से ७ के इस प्रकार कुर्बानी करने से ग्राम सहिलामऊ में लोक व्यवस्था तथा लोकशान्ति भंग हो सकती हैं और साम्प्रदायिक तनाव बढ़ सकता है। प्रतिवादीगण का यह कार्य (भैंसों की कुर्बानी करना) नैतिकता एवं जन स्वास्थ्य के विपरीत है, क्योंकि इससे गंदगी एवं न्यूसेन्स उत्पन्न होगी, साथ ही पशुवध नियमों का उल्लंघन भी होगा। यह कुर्बानी धार्मिक दृष्टि से अनिवार्य नहीं है और न धर्म की परिधि में आती है। दिनांक ३-२-७९ को भैंसों की कुर्बानी न करने की एवज में प्रतिवादीगण ने वादीगण के कथन को अन्शत: स्वीकार कर लिया। वाद का कारण दिनांक २८-१०-७९ को उत्पन्न हुआ और वर्तमान न्यायालय के अधिकार क्षेत्र के अन्तर्गत है। वादीगण को ग्राम सहिलामऊ में प्रतिवादीगण द्वारा दी जाने वाली नई व अभूतपूर्व कुर्बानियों को रोकने का अधिकार है और उक्त अधिकार का बाजार मूल्य नहीं आंका जा सकता।

प्रतिवादी नं. १ ता ७ ने अपने जवाब दावा में यह स्वीकार किया कि वादीगण उन्हीं के गाँव के निवासी हैं। शेष सभी अभिकथनों को अस्वीकार किया। अपने अतिरिक्त कथन में प्रतिवादीगण ने अभिकथित किया कि गाँव सहिलामऊ में करीब ४०० मुसलमान मतदाता है और ३९४ अन्य धर्म के मतदाता हैं। मुसलमानों को भारतीय संविधान के अनुच्छेद-२५ व २६ में कुर्बानी को करने का अधिकार है और उन्हें प्रदत्त धार्मिक स्वतन्त्रता के कारण इस अधिकार से वंचित नहीं किया जा सकता। वर्तमान दावा चलने योग्य नहीं है। क्योंकि वादीगण के इस कृत्य से प्रतिवादीगण के मौलिक अधिकारों पर, साथ ही साथ भारतीय संविधान के अनुच्छेद २५ व २६ पर कुठाराघात हो रहा है। वर्तमान दावा गलत तथ्यों पर आधारित, दोषपूर्ण एवं परि-सीमा अधिनियम के बाधित होने के कारण चलने योग्य नहीं है।

प्रतिवादीगण की ओर से अतिरिक्त जवाब दावा में यह अभिकथित किया गया कि धारा-३ वादपत्र असत्य, निराधार एवं भ्रामक है। मुसलमानों को बकरीद व ईद के अवसर पर बकरी, भेढ़ा, भैंसा काटने का अधिकार है, क्योंकि इससे किसी की धार्मिक भावना को क्षति नहीं पहुँचती है। भैंसे की कुर्बानी नैतिकता के विपरीत नहीं है और न ही इससे आम जनता के स्वास्थ्य पर ही कोई विपरीत प्रभाव पड़ेगा। वादीगण यह बताने में असमर्थ रहे हैं कि यह कृत्य किस प्रकार जनता के लिए अस्वास्थप्रद होगा और न ही इससे न्यूसेन्स पैदा होगा। यह असत्य है कि जानवरों को काटने के नियमों का हनन होगा। बलि देना मुसलमानों का धार्मिक अधिकार है और उसके तहत बकरी, भेड़ा, ऊँट, भैंसा आदि की बलि अपनी सामाजिक स्थिति के अनुरूप दिया करते हैं और उन्हें उनके इस अधिकार से वंचित नहीं किया जा सकता।

प्रतिवादी गण की ओर से यह भी अभिकथित किया गया है कि जानवरों की कीमत रू. १९००/- ले लेने से उन्होंने वादीगण के अभिकथनों को स्वीकार नहीं कर लिया है और इससे मुकद्दमे के गुणावगुण पर कोई विपरीत प्रभाव नहीं पड़ेगा और यही कहकर प्रतिवादी गण ने पैसा वसूल किया जैसा कि आदेश दिनांक ३-११-७९ के आदेश से स्पष्ट है। उपरोक्त आधार पर वादीगण का वाद चलने योग्य नहीं है।

उभय पक्ष को सुनकर एवं पत्रावली पर उपलब्ध अभिकथनों का अवलोकन कर निम्नांकित विवाद्यक मेरे पूर्व पीठासीन अधिकारी ने दिनांक २५-७-८० व २०-८-८१ को बनाये:-

१. क्या ग्राम सहिलामऊ थाना परगना तहसील

मलिहाबाद लखनऊ में ईद-बकरीद के अवसर पर मुसलमानों द्वारा गाय, भैंस अथवा भैंसों की कुर्बानी नहीं दी जाती रही है, जैसा कि वाद पत्र की धारा-२ में कहा गया है?

२. क्या वादीगण को प्रतिवादीगण द्वारा दी जाने वाली कुर्बानी रोकने का अधिकार प्राप्त है, जैसा कि वाद पत्र धारा-४ में कहा गया है?

३. क्या प्रतिवादी गण को कुर्बानी देने का भारतीय संविधान की धारा २५ व २६ में मूलभूत अधिकार प्राप्त है एवं वादीगण उसका हनन नहीं कर सकते, जैसा कि वादोत्तर में कहा गया है?

४. क्या वाद का मूल्यांकन कम किया गया है एवं न्यायशुल्क कम अदा किया गया है यदि हाँ तो इसका प्रभाव?

५. क्या वादीगण प्रतिवादीगण को रोकने से स्टोपिड होते हैं, जैसा कि वादोत्तर के धारा १० में कहा गया है यदि हाँ तो इसका प्रभाव?

६. क्या वादी किसी अनुतोष को पाने का अधिकारी है?

७. क्या प्रतिवादीगण द्वारा भैसों की कुर्बानी नैतिकता के विपरीत है तथा जन-स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है तथा इससे न्यूसेन्स होगा व पशुवध के नियमों का उल्लंघन होगा, जैसा कि वादपत्र के पैरा-४ में उल्लिखित है?

८. क्या प्रतिवादीगण कुर्बानी की एवज में धनराशि ग्रहण करके विवन्धित हैं, जैसा कि वादपत्र में धारा-६ में उल्लिखित है?

निष्कर्ष

विवाद्यक सं.-४

इस विवाद्यक को सिद्ध करने का भार प्रतिवादीगण पर है। इस विवाद्यक को प्रारम्भिक विवाद्यक बनाना चाहिए था, परन्तु सम्भवत: साक्ष्य के अभाव के कारण इस विवाद्यक को प्रारम्भिक विवाद्यक नहीं बनाया गया । प्रतिवादीगण की ओर से प्रमुख तौर पर यह तर्क दिया गया कि उक्त ग्राम में मुसलमानों की आबादी ४०० है। सात व्यक्ति मिलकर एक भैंसे या बैल की कुर्बानी दे सकते हैं। इस प्रकार ४०० को ७ से भाग देने पर ५७ भैंसे आते हैं। यदि एक भैंस की कीमत रू. ३००/- भी आंक ली जाए तो कुल कीमत रू. १७,१००.०० होती है, जो वर्तमान न्यायालय के क्षेत्राधिकार से परे हैं। देखने में विद्वान अधिवक्ता का यह तर्क अत्यन्त सशक्त प्रतीत होता है, परन्तु प्रश्न यह उठता है कि क्या प्रत्येक मुसलमान बकरीद के दिन कुर्बानी करता है। विवादित बकरीद के अवसर पर केवल दो भैंसों के कुर्बानी करने की अनुमति प्रदान की गई। ऐसी दशा में इस प्रकार के उपशम का सांख्यकीय मूल्यांकन कर पाना सम्भव नहीं है और अनुमानित मूल्यांकन ही अपेक्षित है।

वादी ने अपनी बहस के दौरान यह तर्क दिया कि रु. १९००/- प्रतिवादीगण को वादीगण द्वारा न्यायालय में दिये गये थे, वह भी वादीगण पाने के अधिकारी हैं, किन्तु जब रु. १९००/- के बाबत उपशम की ओर ध्यान दिलाया गया तो उसने कहा कि उपशम ''स'' में यह तथ्य भी आ जाता है कि यदि वादीगण रु. १९००/- भी प्रतिवादीगण से वापस चाहते हैं तो निसंदेह ही उन्हें १९००/- पर न्याय शुल्क अदा करना होगा और इस प्रकार सम्पूर्ण वाद का मूल्यांकन रु. १०००+१९००=२९०० होगा।

उपरोक्त व्याख्या के आधार पर विवाद्यक सं. ४ तदनुसार निर्णीत किया गया।

शेष भाग अगले अंक में......

इस बात का निश्चय है कि ब्रह्मचर्य्य उत्तम शिक्षा विद्या शरीर और आत्मा का बल आरोग्य पुरुषार्थ ऐश्वर्य सज्जनों का संग आलस्य का त्याग यम-नियम और उत्तम सहाय के विना किसी मनुष्य से गृहाश्रम धारा जा नहीं सकता।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.३१

विद्वान् स्त्रियों को योग्य है कि अच्छी परीक्षा किए हुए पदार्थ को जैसे आप खायें वैसे ही अपने पति को भी खिलावें कि जिससे बुद्धि, बल और विद्या की वृद्धि हो और धनादि पदार्थों को भी बढ़ाती रहे।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.४२

वैशेषिक दर्शन का अध्यापन

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा के द्वारा संचालित 'महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल' ऋषि उद्यान, अजमेर में वर्षों से संस्कृत व्याकरण और दर्शनों का अध्यापन कार्य सुचारु रूप से चल रहा है। इसी क्रम में '**महर्षि कणाद**' द्वारा प्रणीत '**वैशेषिक दर्शन**' का **आचार्य श्री सत्यजित् जी** द्वारा सितम्बर-२०१६ के प्रथम सप्ताह से विधिवत् नियमित रूप से अध्यापन कराया जावेगा। यह दर्शन ५-६ महीनों में सम्पूर्ण हो जावेगा।

इस काल में ऋषि उद्यान में प्रतिदिन यज्ञोपरान्त उपदेश व प्रवचन का लाभ भी प्राप्त हो सकेगा। समय-समय पर विविध विषयों पर विद्वानों द्वारा कक्षाएँ भी होती रहेंगी। ब्रह्मचारियों, वानप्रस्थियों, संन्यासियों व अन्य असमर्थों हेतु निवास और भोजन व्यवस्था निःशुल्क है। समर्थ प्रतिभागी इच्छानुसार यथायोग्य सहयोग कर सकते हैं। माताओं व बहनों की निवास व्यवस्था पृथक् रहेगी। पढ़ने के इच्छुक आर्यजन कृपया, सम्पर्क कर पूर्व स्वीकृति ले लेवें।

सम्पर्क सूत्र - आचार्य सत्यजित् जी - ०९४१४००६९६१, समय रात्रि (८.४५ से ९.१५)

पता - ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर - ३०५००१ (राज.) **ई-मेल** - styajita@yahoo.com

परोपकारी के सुधी पाठकों के लिए आवश्यक सूचना

परोपकारी शुल्क भेजते समय नये या पुराने ग्राहक के उल्लेख के साथ-साथ ग्राहक संख्या अवश्य लिखें अन्यथा व्यक्ति के नाम से शुल्क जमा करने में कठिनाई आती है। फलस्वरूप पाठकों के पास पत्रिका नहीं पहुँच पाती है। ऐसे ही अपना नाम हटवाते व जुड़वाते समय दूरभाष संख्या सहित अपना पूरा विवरण लिखकर भेजें। ई.एम.ओ. के द्वारा शुल्क भेजने वाले ग्राहक भी सन्देश के साथ अपनी ग्राहक संख्या सहित पूरा विवरण भेजें। परोपकारिणी सभा आप सभी का सहयोग चाहती है।

धनराशि भेजने हेतु सूचना

चैक, ड्राफ्ट, धनादेश (मनीआर्डर) द्वारा राशि भेजने वाले उन पर '**मन्त्री, परोपकारिणी सभा**' अवश्य लिख दें। दानी महानुभाव ऑनलाइन भी राशि जमा करवा सकते हैं। भारतीय स्टेट बैंक में एक सहस्र तक की राशि जमा कराने वाले **२५ रु. बैंक सेवा शुल्क के रूप में अतिरिक्त** जमा करवाने की कृपा करें। कृपया, राशि निम्नांकित बैंकों में ऑनलाइन भिजवाकर, जमा कराई गई स्लिप के साथ उद्देश्य लिखकर सभा कार्यालय को सूचित करवाने का कष्ट करें।

खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर (PAROPKARINI SABHA)

१. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या-091104000057530 बैंक का नाम-आई.डी.बी.आई. बैंक, पावर हाउस के सामने, जयपुर रोड, अजमेर।

IFSC - IBKL0000091

२. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या - 10158172715 बैंक का नाम - भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।

IFSC - SBIN0007959

वैदिक पुस्तकालय, अजमेर की पुस्तकों की राशि ऑनलाईन जमा कराने हेतु

बैंक का नाम - **पंजाब नेशनल बैंक, कचहरी रोड, अजमेर।**

बैंक बचत खाता (Savings) संख्या - **0008000100067176**

IFSC - PUNB0000800

स्तुता मया वरदा वेदमाता-४०

हस्ताभ्यां दशशाखाभ्यां जिह्वा वाचः पुरोगवी।
अनामयित्नुभ्यां त्वा ताभ्यां त्वोप स्पृशामसि।।

- ऋग्. १०/१३७/७

संस्कृत भाषा में वैद्य को पीयूष-पाणि कहा जाता है। पीयूष का अर्थ है-अमृत और पाणि का अर्थ होता है-हाथ। जिसके हाथ में अमृत हैं, ऐसे वैद्य की चर्चा इस मन्त्र में की गई है, वैद्य के दोनों हाथ ही नहीं, हाथ के पोर-पोर में, अंगुलियों में अमृत भरा है। वह हाथ जिस भी रोगी का स्पर्श करते हैं, उसे निरोग करते हैं। वैसे सभी लोग जो भी कार्य करते हैं, हाथ से ही करते हैं, सारे कला-कौशल के कार्य हाथ से ही किये जाते हैं। लेखन, निर्माण, कृषि सभी कुछ तो हाथों से ही होता है। इन सभी में जो उत्कर्ष आता है, वह हाथों से ही आता है।

वैद्य का हाथ दो प्रकार से उत्कर्ष को देने वाला होता है। रोगी की नाड़ी देखकर, त्वचा का स्पर्श देखकर रोगी की चिकित्सा की जाती है तथा हस्ताभिमर्श चिकित्सा में रोगी के शरीर में जहाँ-जहाँ पीड़ा होती है, वहाँ हाथ का स्पर्श कर अथवा रोगयुक्त अंग के पास ले जाकर हाथ से रोग दूर किया जाता है।

वेद में अन्यत्र भी हस्ताभिमर्श चिकित्सा का वर्णन आया है। वहाँ मनुष्य द्वारा अपने हाथ के सामर्थ्य का वर्णन करते हुये कहा गया है, मेरा हाथ भगवान् है, ऐश्वर्यवान् है, ऐश्वर्य से महत् है। यह मेरा हाथ विश्व-भेषज है। वहाँ 'अयं मे विश्व भेषजः' कहा है। हाथ में समस्त समस्याओं के समाधान करने का सामर्थ्य है। इसलिये यहाँ 'भेषज' शब्द का प्रयोग किया गया है। संस्कृत में 'भिषक' वैद्य के लिये है। परमेश्वर को 'भिषकतम' कहकर पुकारा गया है। वह परमेश्वर सब वैद्यों से भी बड़ा वैद्य है। 'भिषकतमं त्वा भिषजां शृणोमि'-मैं भली प्रकार जानता हूँ, तु संसार के समस्त रोगों की दवा है। मनुष्य भी अपने हाथ को कहता है- यह हाथ विश्व-भेषज है। यह हाथ अभिमर्श चिकित्सा का सूत्र है, यह हाथ समस्त कल्याण को देने वाला और अकल्याण को दूर करने वाला है। हम यदि वाणी से न भी बोलें, तो भी हमारे शरीर के अंगों के स्पर्श से हमारे भाव दूसरे तक पहुँचते हैं, दूसरे को प्रभावित करते हैं। भारतीय शिष्टाचार में आशीर्वाद के रूप में अपने से छोटे के सिर पर हाथ रखा जाता है। बड़ा व्यक्ति प्रणाम करने वाले व्यक्ति के सिर पर हाथ रखकर ही प्रणाम के उत्तर में आशीर्वचन कहता है। माता-पिता, गुरुजन सिर पर हाथ रखते हैं। देवता भी सिर पर हाथ रखकर वरदान या अभय दान देते हैं। इसीलिये लोक में भी किसी व्यक्ति के निर्भय होने पर उसके बड़े का या परमेश्वर का हाथ उसके सिर पर होने की बात की जाती है। बालकों की पीठ पर हाथ रखकर उसका उत्साह बढ़ाया जाता है। किसी सफलता पर शाबासी दी जाती है। साथी के पीठ पर हाथ रखकर समर्थन जताया जाता है। तुम आगे बढ़ो, तुम्हारी पीठ पर हमारा हाथ है।

इस मन्त्र में हाथ की विशेषता बताते हुए कहा गया है- 'हस्ताभ्यां दश शाखाभ्यां' दश शाखाओं वाले दोनों हाथों से। हाथ की योग्यता में आगे कहा है- 'अनामयित्नुभ्यां' आमय रोग को कहा जाता है। ये हाथ रोग को दूर करने का सामर्थ्य लिये हुये हैं। इन रोगों को दूर करने वाले हाथों से मैं तेरा स्पर्श करता हूँ। मेरे हाथ का स्पर्श तुझे निरोग करने का सामर्थ्य रखता है। हाथ निरोग करने में समर्थ है, यह वाणी का कथन है- मैं तो रोगी को स्वस्थ करने की घोषणा करता ही हूँ। इसके अतिरिक्त जिन्होंने भी मेरी इस योग्यता का लाभ उठाया है, उनकी वाणी भी मेरी योग्यता का बखान करती है। मेरी चिकित्सा से स्वस्थ हुये व्यक्ति सदा मेरी प्रशंसा करते हैं।

इस पूरे सूक्त में मनुष्य को किस प्रकार स्वस्थ रखा जा सकता है, यह कथन किया है। वायु चिकित्सा, जल चिकित्सा, आश्वासन चिकित्सा, स्पर्श चिकित्सा के सूत्र इन मन्त्रों में बताये गये हैं। सामान्य बात है कि शरीर जिन पंच महाभूतों से बना है, उनके कम अधिक होने पर मनुष्य रोगी होता है। इन भौतिक तत्त्वों का सामान्य रूप ही शरीर को स्वस्थ रख सकता है। अतः चिकित्सा में केवल एक ही विचार सम्पूर्ण नहीं होता। इसको वैद्यक पथ्यापथ्य कहते हैं। औषध का उपयोग करने पर भी यदि पथ्य न किया जाये तो औषध से पूर्ण लाभ प्राप्त नहीं हो पाता। पथ्य के महत्त्व को बताते हुए कहा गया है- यदि मनुष्य पथ्य करता है, तो बिना औषध के मनुष्य स्वस्थ हो जाता है। वैद्य को पता होना चाहिए कि रोगी के शरीर में कौन से तत्त्व की कमी है और कौन सा पदार्थ उस तत्व को पूरा कर सकता है। यही इन मन्त्रों का सन्देश है।

क्रमशः ....

आर्यजगत् के समाचार

१. वैदिक गतिविधियों का आयोजन- श्री ओमप्रकाश आर्य, मन्त्री आर्यसमाज रावतभाटा एवं उपप्रधान राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा, सम्भाग उदयपुर ने संत कबीर नगर, उ.प्र. में विभिन्न वैदिक गतिविधियों का आयोजन किया। झिन्नुराम पूर्व माध्यमिक विद्यालय, ग्रा. हरदी, संत कबीर नगर के देहाती क्षेत्र में वैदिक पुस्तकालय व वैदिक हवन का कार्य निर्बाध रूप से चला रहे हैं। दि. १ सितम्बर २०१६ को ग्रा. हरदी में व्यसनमुक्ति रैली निकाली, छात्र-छात्राओं व शिक्षकों ने उत्साह से भाग लिया व सहयोग किया तथा 'व्यसनों से हानियाँ' विषय पर चित्रकला प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। 'जीवन में चरित्र का महत्त्व' विषय पर निबन्ध प्रतियोगिता आयोजित की गई एवं स्वरचित कविता का आयोजन किया गया। प्रतिभागियों को सम्मानित किया गया। विद्यालय प्रबन्धक श्री संतराम गुप्ता ने विशेष सहयोग दिया।

२. पर्यावरण सप्ताह मनाया- दि. २६ अगस्त २०१६ को गुरु विरजानन्द गुरुकुल महाविद्यालय करतारपुर में पर्यावरण सप्ताह के चतुर्थ दिवस में पर्यावरण सम्बन्धि गीत-गायन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगि में गुरुकुल सहित दयानन्द मॉडल स्कूल, एस.डी. वॉयस स्कूल, अर्जुन देव पब्लिक स्कूल, जनता मॉडल स्कूल सम्मिलित थे। प्रतियोगिता में गीतों के माध्यम से विद्यार्थियों ने पर्यावरण सम्बन्धित अपने मन के उद्गार प्रस्तुत किये। प्रतियोगिता न केवल हिन्दी में अपितु अंग्रेजी, पंजाबी और संस्कृत भाषा में भी आयोजित की गई। प्रतियोगिता के अन्त में प्राचार्य डॉ. उदयन आर्य ने धन्यवाद ज्ञापित किया तथा वृक्षारोपण का कार्यक्रम भी सम्पन्न किया गया।

३. वेद प्रचार सप्ताह मनाया- आर्यसमाज गंगापुर सिटी, जि. सवाई माधोपुर, राज. में १ से ७ अगस्त २०१६ तक श्रावणी वेद प्रचार सप्ताह बड़ी धूमधाम से सम्पन्न हुआ, जिसमें आर्य जगत् के युवा विद्वान् आचार्य हरिशंकर अग्निहोत्री-आगरा का अच्छा प्रभाव रहा। भजनोपदेशक श्री भानुप्रकाश शास्त्री-बरेली के भजनों व ढ़ोलक वादक श्री श्याम आर्य की धूम रही। काफी अधिक संख्या में श्रोतागण उपस्थित रहे। संचालन मन्त्री ने किया तथा प्रधान ने सबका धन्यवाद ज्ञापित किया।

४. वेद प्रचार माह सम्पन्न- जन जागरुकता अभियान के अन्तर्गत सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन की ओर जनता का ध्यान आकर्षित करने की दृष्टि से आर्यसमाज दयानन्द मार्ग, भीलवाड़ा, राज. के द्वारा दि. १० जुलाई से ०९ अगस्त २०१६ तक पं. भूपेन्द्रसिंह भजनोपदेशक एवं श्री लेखराज शर्मा द्वारा मधुर भजनों के माध्यम से १९ विद्यालयों एवं २९ परिवार में सत्संग के माध्यम से एवं ईश्वर भक्ति, राष्ट्रभक्ति, नैतिक शिक्षा के उपदेश एवं गीतों से वेद प्रचार किया गया, जिसमें आर्यसमाज भीलवाड़ा, बीगोद, रायला एवं ईरास में उत्साहपूर्वक विद्यालयों के बालक-बालिकाओं ने भाग लिया।

५. वेद प्रचार सम्पन्न- आर्यसमाज मगरा पूंजला, जि. जोधपुर, राज. द्वारा ३ से ५ अगस्त २०१६ तक स्थानीय विद्यालय शिव पब्लिक स्कूल उच्च माध्यमिक विद्यालय, सरस्वती विद्या मन्दिर उ.मा.विद्यालय, माँ भारती उ.मा. विद्यालय, माँ शारदा विद्यापीठ सी.सै. स्कूल, सत्यम् पब्लिक उ.मा. विद्यालय, ग्रेट सत्यम् स्कूल, राजकीय बालिका उ.मा. विद्यलाय मगरा पूंजला में वेद प्रचार कार्यक्रम रखा गया। इस अवसर पर विमल शास्त्री द्वारा वेद ज्ञान, संस्कृति तथा संस्कार हेतु दिए गए प्रवचनों से ५००० विद्यार्थियों ने लाभ प्राप्त किया। आर्यसमाज का इतिहास, १८५७ की क्रान्ति में महर्षि दयानन्द सरस्वती की अहम भूमिका आदि विषयों को केन्द्रित करके राष्ट्र की युवा पीढ़ी को 'वैदिक धर्म ही प्राचीन धर्म है' इस प्रकार की भावना से प्रेरित किया गया। इस अवसर पर आर्यसमाज मगरा-पूंजला की ओर से वैदिक धर्म-एक संक्षिप्त परिचय, शरीर को सदा स्वस्थ तथा बलवान बनाने के अचूक उपाय तथा तनाव से बचने के उपाय के पत्रक भी सभी विद्यार्थियों, अध्यापकों एवं अध्यापिकाओं को वितरित किये गए।

६. कार्यक्रम सम्पन्न- श्रावणी पर्व, संस्कृत दिवस, हैदराबाद आर्य सत्याग्रह-१९३९ के विजय दिवस के पावन अवसर पर आर्य वीर दल सोनीपत, हरि. के तत्वावधान में स्थानीय आर्य समाज सैक्टर-१४ में एक भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया। आचार्य सन्दीप दर्शनाचार्य के ब्रह्मत्व में विशेष यज्ञ का अनुष्ठान किया गया और यज्ञोपवीत

संस्कार का महत्व बताते हुए आचार्य संदीप ने सभी को सब प्रकार के ऋणों मुख्यत: तीन ऋण- देव ऋण, ऋषि ऋण, पितृ ऋण से उऋण होने की प्रेरणा दी। उपस्थित जन समूह, युवाओं, बच्चों को यज्ञोपवीत प्रदान किये गये।

७. यज्ञ-प्रवचन सम्पन्न- २२ से २८ अगस्त २०१६ तक आर्य समाज साम्भर के तत्वावधान में देवयानी धाम साम्भर में हैदराबाद सत्याग्रह के वीर शहीदों की याद में यज्ञ और प्रवचन का आयोजन किया गया। सत्याग्रह में शहीद होने वालों को श्रद्धाञ्जलि दी गई और देशभक्ति की बातें बताई। श्री द्वारिका प्रसाद सोनी तथा श्री बाबूराम आर्य के घर पारिवारिक सत्संग और यज्ञ का आयोजन किया गया। आर्यसमाज साम्भर में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व मनाया गया तथा यज्ञ व सत्संग का कार्यक्रम आयोजित किया गया। ये सभी कार्यक्रम परोपकारिणी सभा, अजमेर से पधारे स्वामी सोमानन्द जी द्वारा सम्पन्न कराये गये। आर्य जनता ने सभी कार्यक्रमों में बढ़-चढ़ कर भाग लिया।

८. वेद सप्ताह का समापन- आर्यसमाज मन्दिर राजगढ़, जि. अलवर, राज. में दि. १८ से २५ अगस्त २०१६ से चल रहे वेद सप्ताह का समापन आठवें दिन श्री विनोदीलाल दीक्षित के आचार्यत्व में, स्वामी देवानन्द सरस्वती के आतिथ्य में, प्रधान श्री धर्मसिंह आर्य के नेतृत्व में, मन्त्री श्री गैंदालाल सैनी की व्यवस्था में एवं आर.ए.एस अधिकारी श्री कैलाशचन्द सैनी एवं उनकी धर्मपत्नी व्याख्याता श्रीमती मीनाक्षी देवी के मुख्य यजमानत्व में सम्पन्न हुआ। अन्तिम दिन जन्माष्टमी की विशेष आहुतियाँ दी गईं। पं. विनोदीलाल दीक्षित ने कण्टस्थ वेद मन्त्रों द्वारा प्रतिदिन यज्ञ को सम्पन्न कर ओजस्वी मोहक शैली में भजनों की प्रस्तुति देते हुए सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षा के महत्वपूर्ण अंशों को उद्धृत किया।

९. स्वतन्त्रता दिवस मनाया- जी.एल. सैनी मेमोरियल नर्सिंग कॉलेज, जयपुर, राज. में ७०वाँ स्वतन्त्रता दिवस समारोह राष्ट्रभक्ति गीतों व सेनानियों/बलिदानियों की गाथा के साथ मनाया गया। समारोह में आर्य भजनोपदेशक कु. भूपेन्द्रसिंह आर्य एवं लेखराम शर्मा के राष्ट्रभक्तियुक्त गीतों ने समाँ बांधा। उत्साही आर्य युवाओं श्री सुनील अरोड़ा व श्री दीपांकर यश ने सरदार भगतसिंह, रामप्रसाद बिस्मिल, चन्द्रशेखर आजाद व लाला लाजपत राय जैसे सेनानियों व बलिदानियों की गाथाओं से श्रोताओं में राष्ट्रभाव जगाया।

१०. शराब बन्दी अभियान- शराब बन्दी अभियान को लेकर आर्य समाज सीतापुर द्वारा चलाई जा रही मुहिम को व्यापक जनसमर्थन मिला है, मुख्यमन्त्री को भेजे गये हजारों पोस्टकार्ड में आर्य समाजियों ने प्रदेश में शराब बन्द करने की पुरजोर माँग उठाई। समाज ने वेद प्रचार सप्ताह के तहत कई गाँव-गदनापुर, नौनेर, सुल्तानपुर, दलपतपुर, पगरोई, जहानाबाद, पेसिया, गंगापुर, चिलवारा, रामगर में कार्यक्रम कर लोगों को अपने साथ जोड़ा। यज्ञ, हवन के माध्यम से अपनी माँग को दृढ़ता से उठाने का आह्वान प्रधान चौधरी रणवीर सिंह ने किया।

११. श्रावणी महोत्सव सम्पन्न- स्त्री आर्यसमाज धामावाला, देहरादून में ११ से १३ अगस्त २०१६ तक श्रावणी महोत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर वैदिक सत्संग व यज्ञ का आयोजन किया गया। यज्ञ की ब्रह्मा डॉ. चन्द्रप्रभा आर्या व भजनोपदेशक अंकुर रस्तोगी थे।

वैवाहिक

१२. वर चाहिये- आर्यसमाजी परिवार, संस्कारित, कद- ५ फुट २ इंच, शिक्षा- एम.फिल., पीएच.डी. (संस्कृत विद्यापीठ, तिरुपति) हैदराबाद निवासी युवती हेतु आर्यसमाजी परिवार का संस्कारित आयु ३५ से ४२ वर्ष का युवक चाहिए। **सम्पर्क- ०९९८९६१४२१०**

१३. वर चाहिये- आर्यसमाजी परिवार, संस्कारित, आयु- २८ वर्ष, कद- ५ फुट ४ इंच, शिक्षा- एम.एस.सी., एम.टेक., प्रा. डिग्री कॉलेज में प्राध्यापिका, सहारनपुर निवासी युवती हेतु आर्यसमाजी परिवार का संस्कारित आयु ३५ से ४२ वर्ष का युवक चाहिए। **सम्पर्क**- ०८५३२९४१५४०, sumantyagiraj0@gmail.com

चुनाव समाचार

१४. स्त्री आर्यसमाज धामावाला देहरादून के चुनाव में **प्रधाना**- डॉ. निर्मला भारद्वाज, **मन्त्राणी**- श्रीमती अरुणा गुप्ता, **कोषाध्यक्ष**- श्रीमती रेखा आर्या को चुना गया।

१५. आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश-१, नई दिल्ली के चुनाव में **प्रधान**- श्री विजय लखनपाल, **मन्त्री**- श्री विजय भाटिया, **कोषाध्यक्ष**- श्री अमरसिंह पहल को चुना गया।

१६. आर्यसमाज औरंगाबाद-मीतरौल, पलवल, हरि. के चुनाव में **प्रधान**- श्री प्रहलाद सिंह आर्य, **मन्त्री**- श्री बाबूलाल आर्य, **कोषाध्यक्ष**- श्री श्यामसिंह आर्य को चुना गया।

उपनयन एवं कर्णभेद संस्कार